CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपुरसुन्दरी साधना

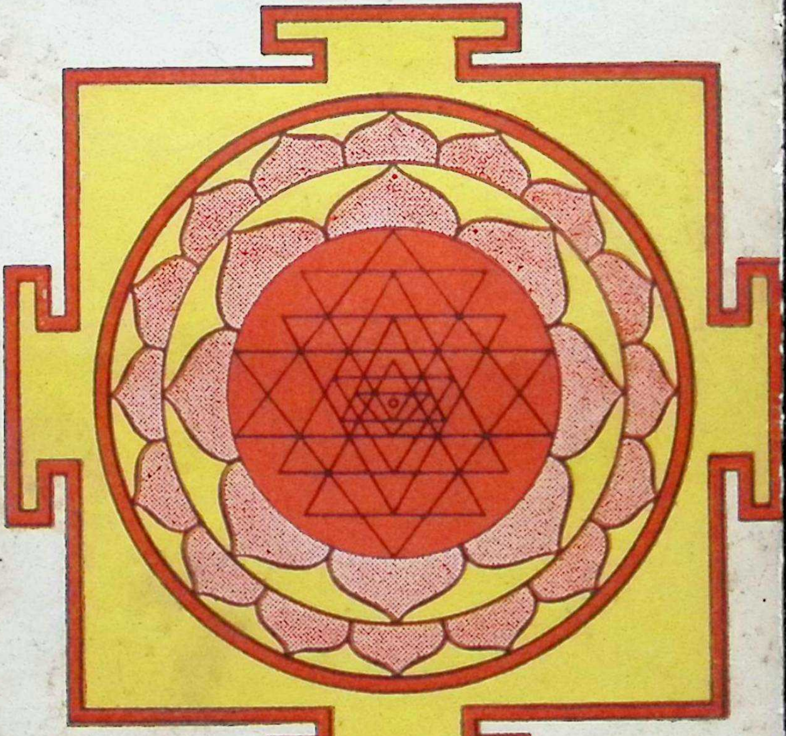

पं० देवदत्त शास्त्री

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गहन-गम्भीर अध्यात्मरहस्यों से मंडित सौन्दर्यलहरी के श्लोकों में गर्भित विविध मन्त्रों और श्रीयन्त्र का उद्धार कर उनके प्रयोग और पुरश्चरण की जो विधियाँ इस ग्रन्थ में बताई गई हैं, वे मस्तिष्क का व्यायाम नहीं अपितु तंत्रशास्त्र, योगशास्त्र द्वारा प्रमाणित और सिद्धों, आचार्यों द्वारा अनुभूत हैं। उनकी साधना-उपासना सद्यः फलवती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपुरसुन्दरी साधना

देवदत्त शास्त्री

स्मृति प्रकाशन
१२४, शहराराबाग, इलाहाबाद-२११००३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

© लेखक

संस्करण	प्रथम १९८४ ई०
प्रकाशक	स्मृति प्रकाशन १२४, शहराराबाग, इलाहाबाद-२११००३
मुद्रक	अशोक प्रिंटिंग केन्द्र पीलीकोठी, कीटगंज, इलाहाबाद
मूल्य	सजिल्द : २०-०० अजिल्द : १५-००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तुति

विश्व-ब्रह्माण्ड के अणु-अणु, परमाणु-परमाणु में 'शिव-शक्ति' विद्यमान है। जगत् का प्रत्येक प्राणी उसे 'इच्छा', 'क्रिया' और 'ज्ञान' के रूप में अनुभव करता है। ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त वही शक्ति मानव-देह में कुण्डलिनी के रूप में स्थित है। वैसे तो चराचर जगत् शक्ति का निवास है, किन्तु शक्ति का संचालन मात्र लक्ष्य नहीं है। लक्ष्य केवल एक है, शिव-शक्ति का सामरस्य-रूप (सहजसमाधि)। यह सहज-समाधि सहज नहीं प्राप्त होती है। इसकी प्राप्ति के लिए 'मानव-शरीर' को जानना आवश्यक है। मनुष्य का यह शरीर ही समस्त सिद्धियों का केन्द्र है। मानव-शरीर में छह चक्र क्या हैं, कहां-कहां हैं, षोडश आधार कौन-कौन हैं। दो लक्ष्य क्या हैं, पांच व्योम क्या हैं—शरीर के अन्तर्गत इनका जानना आवश्यक है।

इनके अतिरिक्त मनुष्य की वाणी, उसका प्राण, उसका मन, उसका बिन्दु—सभी अपार, अनन्त शक्ति के आधार हैं, आश्रय हैं। इनमें से किसी एक की भी साधना से लक्ष्य, परमप्राप्तव्य या सिद्धि प्राप्त होती है।

एक परमतत्त्व है, उसकी जो पराशक्ति है, वह जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उसी प्रकार पिण्ड (शरीर) में भी व्याप्त है। मनुष्य-शरीर में वह पराशक्ति सबसे अधिक जाग्रत है, अन्य प्राणियों और योनियों में कम जाग्रत या प्रसुप्त रहती है। 'इच्छा', 'ज्ञान', 'क्रिया' के रूप में यह पराशक्ति ही 'त्रिपुरा' है, 'त्रिपुरसुन्दरी' है। देवयोनि के देवताओं में यह शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत नहीं है, क्योंकि देवता प्राकृतिक शक्तियों के रूप हैं। वे भोग-योनि में हैं, उनमें केवल भोगने की शक्ति रहती है। वे देवता जिस कार्य के लिए उद्दिष्ट हैं, उससे अधिक या कम की उनमें इच्छा भी नहीं होती, क्रिया भी नहीं होती। अग्नि का गुण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाहकत्व है, वह दहन कर सकती है, किन्तु उसमें जलाने के अतिरिक्त भिगोने की इच्छा भी नहीं होती तो क्रिया कैसे होगी ? इसीलिए आगम-शास्त्रों में बताया गया है कि 'देवताओं के कुण्डलिनी' नहीं होतीं। अर्थात् उनकी कुण्डलिनी पूर्ण रूप से प्रज्ज्वलित, स्फुरित नहीं होती, सुप्त रहती है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जिसे 'इच्छा', 'क्रिया' और 'ज्ञान' प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त है। इसलिए परात्पर ब्रह्म को जब कुछ करना होता है, तब उसे नृदेह धारण करनी पड़ती है। नर-देह उसका पूर्णावतार होता है। बिना नरदेह धारण किए देवता, परमात्मा भी कोई लीला नहीं कर सकते। जब-जब धर्म का ह्रास होता है, तब-तब धर्म के अभ्युदय के लिए सत्य की, सत्पुरुषों की रक्षा के लिए भगवान् नरदेह धारण कर अवतरित हुआ करते हैं।

अथर्ववेद के 'आकूति' सूक्त में इस शक्ति-तत्व के, त्रिपुरारहस्य के बीज निहित हैं। आकूति सूक्त का स्वाध्याय-चिन्तन करते हुए मुझे शिव-शक्ति के सामरस्य का, इच्छा, क्रिया, ज्ञान के रूप में त्रिपुटीभूता शक्ति 'त्रिपुरा' का बोध हुआ तो 'त्रिपुरसुन्दरी साधना' लिखने का सत्संकल्प मेरे हृदय में प्रस्फुटित हुआ। भगवती त्रिपुरसुन्दरी महाशक्ति के साधनापक्ष पर मैंने अनुशीलन प्रारम्भ किया। इस प्रयास में श्री शङ्कर-भगवत्पाद रचित 'सौन्दर्यलहरी स्तोत्र' मेरे चिन्तन-मनन का आधार बना।

यद्यपि बाह्यदृष्टि से सौन्दर्यलहरी 'स्तोत्रकाव्य' है, जिसमें शृंगार-रस का सुधासागर तरंगायित है। सौन्दर्य का, शृंगार रस का इतना गूढ़, प्राणदस्पर्श नख-शिख वर्णन मुझे कहीं भी देखने और पढ़ने को नहीं मिला है। सौन्दर्य का ज्योतिशिखावाही स्तोत्र 'सौन्दर्यलहरी' अद्भुत, अपूर्व और अद्वितीय है। भगवती त्रिपुरसुन्दरी के अङ्ग-प्रत्यङ्ग-का, रोम-रोम का सौन्दर्य-वर्णन इस स्तोत्र में किया गया है और विशेषता यह है कि सौन्दर्य-वर्णन 'माँ' का किया गया है। कितना विलक्षण भाव, कितना गंभीर आध्यात्मिक प्रज्ञा-प्रयास है। गंभीरता-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वक इस स्तोत्र का अध्ययन किया जाए तो प्रत्येक श्लोक में गहन अध्यात्मतत्त्व, श्रीविद्यातत्त्व और गूढ़तंत्र-विज्ञान गर्भित मिलता है।

१०३ श्लोकों के 'सौन्दर्यलहरी' के जिन श्लोकों में गर्भित मन्त्र मुझे प्राप्त हुए, उनका उद्धार अक्षरविज्ञान, बीजाक्षरविज्ञान, अर्थतत्त्व-विज्ञान और शब्दसंयमपद्धति से मैंने किया है। मन्त्रोद्धार के साथ मंत्रों की साधन-प्रक्रिया भी आगमशास्त्र के आधार पर इस ग्रंथ में प्रस्तुत की गई है। मन्त्र-साधना के अन्तर्गत 'श्रीविद्या' और 'श्रीयन्त्र' संबंधी विशद विवेचन किया गया है। मंत्र-साधना-प्रक्रिया और साध्य-मन्त्र प्रस्तुत करने के वाद अन्त में मूल सौन्दर्यलहरी स्तोत्र और उसका हिन्दी रूपान्तर भी प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी रूपान्तर के साथ ही पाठान्तर और मंत्रोद्धार भी दिए गए हैं।

श्लोकों में गर्भित मंत्रों का उद्धार किस पद्धति से किया गया है, इसकी क्या उद्धार-प्रक्रिया है, ऐसे विषय ग्रन्थ का भाष्य लिखने पर प्रस्तुत किए जाते हैं, किन्तु प्रबुद्ध अध्येताओं की जिज्ञासा का समाधान करने के लिए सौन्दर्यलहरी के प्रथम श्लोक में गर्भित मन्त्र का यहाँ पर उद्धार कर मंत्रोद्धार की प्रक्रिया प्रस्तुत कर देना उचित है। प्रथम श्लोक यह है—

शिवः शक्त्या युक्तो, यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिंच्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति॥

इस श्लोक द्वारा श्रीशङ्कर भगवत्पादने सौन्दर्यलहरीरूपिणी श्रीमहा-विद्या (त्रिपुरसुन्दरी) की स्तुति की है। इस स्तुति का सामान्य अर्थ इस प्रकार है—

हे भगवति, भगवान् सदाशिव इसलिए शक्तिमान हैं, कि आप उनसे संलग्न हैं। अर्थात् जब आप उनकी सहायता करती हैं, तभी वह सृष्टि के सर्जन, पालन और संहार करने में समर्थ होते हैं। कदाचित् शिव को

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपकी सहायता न प्राप्त हो तो वह आंखों की पलकें भी हिलाने-डुलाने में समर्थ नहीं हो सकते। इसी कारण हरि (विष्णु), हर (महेश) और विरिंचि (ब्रह्मा), इन्द्र आदि देवता आपकी आराधना किया करते हैं, फिर भला मुझ जैसा अकृतपुण्य व्यक्ति आपकी स्तुति करने में कैसे समर्थ हो सकता है ?

इस श्लोक में गर्भित मंत्र का उद्धार इस प्रकार किया गया है—

मन्त्रोद्धार

शिव = 'अकार' जब शक्ति = अनुस्वार से युक्त होता है, तब वह सानुस्वार एकार वाग्भव वीज 'ऐं' बनता है। जगद्वीजमय 'हकार' शक्ति (सानुस्वार) 'इकार' रेफ सहित 'ककार' के संयोजन से 'रमा' वीज 'ह्रीं', कामराज वीज 'क्लीं' बनता है। कामराजवीज (क्लीं) से विरिंचि (ब्रह्मा) ने सृष्टि-सर्जन के लिए आद्याशक्ति की उपासना की, तथा वाग्भववीज (ऐं) से सृष्टि का पालन करने के लिए हरि (विष्णु) ने भगवती आद्याशक्ति की उपासना की और हर (महेश) ने तमोमय 'ह्रीं' वीज से सृष्टि के संहार के लिए आद्याशक्ति की उपासना की। इस शब्द-संयमन से यह मंत्र बनता है—

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवे हरिहरविरिंच्याद्याराधिते शिवशक्ति स्वरूपे स्वाहा।"

जिन श्लोकों में मंत्र गर्भित हैं, उन्हें इसी पद्धति से उद्धृत किया गया है और तंत्रशास्त्र, आगमशास्त्र के आधार पर उद्धृत मंत्रों की साधना बताई गई है।

ॐ आनन्दम्

८४, नया बैरहना
इलाहाबाद-२११००३

—देवदत्त शास्त्री

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपुरसुन्दरी साधना

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री शङ्कर भगवत्पाद कृत सौन्दर्यलहरी
चतुर्भिः श्री कंठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि

श्रीयन्त्र

श्लोक ११ से उद्घाटित
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरिति मूलप्रकृतिभिः॥

१ शिवः
४ श्री कंठादयः
५ शिवयुवतयः
९ मूलप्रकृतयः
८ देव्यः
१६ योगिनी देव्यः
४३

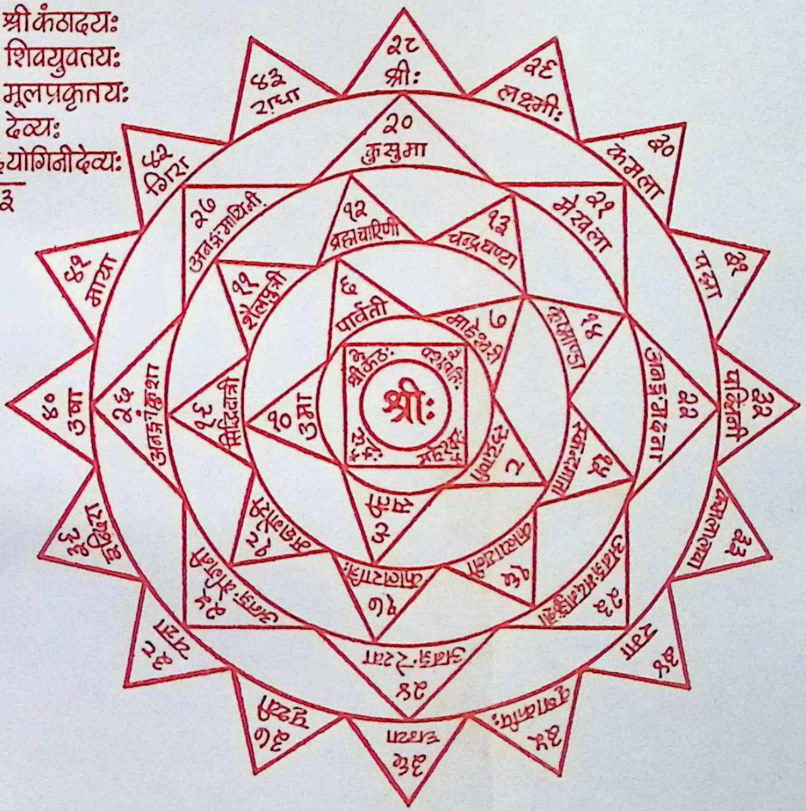

त्रयश्चत्वारिंशद् वसुदलकलास्त्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तवचरणकोणाः परिणताः॥११॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वोपरि आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी

ऋग्वेद में ब्रह्म की चित्शक्ति को आनन्दमयी कहा गया है। अखण्ड-आनन्द और चैतन्य को प्रस्फुरित करने वाली रहस्यमयी शक्ति का नाम अदिति रखा गया है। अदिति देवतामयी है और सभी प्राणियों की माता है। इसे मही (पृथिवी), सावित्री, गायत्री, सरस्वती आदि नामों से वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में स्पष्ट किया गया है। अदिति के प्रकाशमान पुत्रों को आदित्य कहा गया है। अदिति की विरोधिनी मलिनसत्ता को दिति कहा गया है और दिति के मलिन, तामसी पुत्रों को दैत्य बताया गया है। वेदों और पुराणों में दिति की विरोधिनी शक्ति अदिति, दैत्यविरोधिनी शक्ति आदित्य और असुरविरोधी देव आदि अनेक रूपकों द्वारा शक्ति के पाश में डालने वाले एवं पाशबन्धन से मुक्त करने वाले अनेक प्रकार के पराक्रमों के वर्णन हैं। सभी रूपक-वर्णनों का सारतत्त्व अदिति[1] में समाहित मातृभाव है।

ऋग्वेद में उषा देवी का अत्यन्त मोहक चित्रण है। चमत्कारपूर्ण उषा-संबंधी सूक्तों में आद्याशक्ति का कुमारीभाव बहुत ही कोमल भावों द्वारा चित्रित किया गया है और सूर्या (देवी) सूक्तों में आद्याशक्ति का पत्नीभाव वर्णित है। ऋग्वेद के परिशिष्ट भाग में लक्ष्मीसूक्त तथा अम्भृण ऋषितनया दृष्ट वाक्सूक्त[2] भी भगवती आद्याशक्ति की शक्ति के बोधक हैं।

ऋग्वेद के बाद यजुर्वेद में अग्नि रहस्यकाण्ड के अन्तर्गत यज्ञवेदी की

---

१. अदितिसूक्त, ऋग्वेद १।८२।११३ तथा काठक २।४।७ एवं नारायण उपनिषद् २८।

२. ऋग्वेद १०।२६।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचना करते समय इष्टिकाएँ (ईंटें) रखते हुए जो मन्त्र पढ़े जाते हैं, उनमें भगवती आद्याशक्ति का परिचय बड़े ही सुघर ढंग से दिया गया है—

'मैं इस विश्व को उत्पन्न करने वाले सविता देवता की प्रार्थना करने योग्य अद्भुत चित्शक्ति को विश्वजन्या सुमति रूप से कहता हूँ। इस चित् शक्ति रूप गौ का दोहन भलीभाँति कण्वऋषि ने किया था और उसकी सहस्रधारा से पृथिवी रूपी गौ हृष्ट-पुष्ट हुई है।[1] जो आद्याशक्ति एक रूपा थी वह अनेक रूपा हुई। वह चार अञ्चल वाली गाय हुई। सूर्य की नववधू बनकर उसने नवीनतम जड़-जगत् को उत्पन्न किया और साथ ही उसने चार जीवों को प्रकट किया।'[2]

श्वेताश्वतर (मन्त्रोपनिषद् शाखा) में कहा गया है—

'जिस समय सर्वत्र अन्धकार था, अहोरात्र (दिन-रात) का भेद नहीं था; जगत् व्यक्त (कारणसत्) नहीं हुआ था और वह असत् (अव्यक्त) भी नहीं था, जब केवल ब्रह्म शिवरूप से स्थिर था, तब जगत् को पैदा करने वाले सविता का (प्रार्थना करने योग्य) अक्षर तेज उदित हुआ और उसमें से पुरातन कल्प की पुरातन प्रज्ञा[3] (स्फुरणा) प्रकट हुई।'

छान्दोग्योपनिषद् में 'जगत् कारण' को सत् संज्ञा दी गई है। जीव-के लय का वर्णन करते हुए उसमें बताया गया है कि 'जब वाणी मन में समा जाती है, मन प्राण में समा जाता है, प्राण चेतन में समा जाता है और

---

१. यजुर्वेद १७।७४ (वस्तुतः यज्ञवेदी और इष्टिका प्रतीकात्मक हैं। इनका संबंध योग साधना-क्रिया से है न कि भौतिक यज्ञवेदी और ईंटों से है)

२. देवी सूक्त—वधूर्जजान.........

३. श्वेताश्वतरोपनिषद् ४।१८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षेत्रज्ञ (चेतन) परादेवता में लीन हो जाता है, तभी हे श्वेतकेतु ! जो इस सूक्ष्मता की अवधि आती है, उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म पदार्थ से सम्पूर्ण दृश्यजगत् आत्मभाव से परिपूर्ण रहता है। वह सूक्ष्मतम वस्तु ही वस्तुतः आत्मा है और वह सूक्ष्मतम वस्तु तू स्वयं ही है।'[१]

कठोपनिषद् का कहना है कि 'जिसका भेद न हो ऐसी अदिति नाम की शक्ति देवतामयी है, वह प्राण से प्रकट होती है और चिदम्बर की विज्ञानमयी गुहा में प्रविष्ट होकर विविध प्राणियों के रूप में प्रकट होती है। यही वास्तविक सत्य है।'[२]

अथर्ववेद और तैत्तरीय आरण्यक[3] में देवतामयी शक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरी का उपासना करने योग्य रूप प्रकट हुआ है। ब्राह्मणों और आरण्यकों में त्रिपुरसुन्दरी की शुद्ध शक्ति को सावित्री, गायत्री, सरस्वती आदि नामों से अभिहित किया गया है। भगवती त्रिपुरसुन्दरी की शक्ति गायत्री इसलिए कही गई है कि वह सद्ब्रह्म के स्वरूप का गान द्वारा (गायत्री मंत्र) रक्षण करती है। गायत्री के अध्यात्म तेज को 'भर्गः' कहा गया है। वह भर्गः (तेज) सम्पूर्ण विश्व-सृष्टि को प्रकाशित करता है, विश्व-सृष्टि में रमण करता है और अन्त में विश्व का उसमें लय (गति) होता है। इसलिए गायत्री शक्ति को भर्गमयी, तेजोमयी, और ज्योतिर्मयी कहा गया है। त्रिपुरसुन्दरी से विश्व-सृष्टि उत्पन्न होती है, इसलिए उसे सावित्री कहा गया है, उसमें से ब्रह्म का आनन्दमय प्रवाह—सरः प्रवाहित होता है, इससे वह सरस्वती कहलाई। ब्रह्म-शक्ति आनन्दमयी, प्राणमयी, जीवनमयी होने से वह सच्चिदानन्दमयी मानी गई है।

१. छान्दोग्योपनिषद् ६।६
२. कठोपनिषद् २।४।७
३. तै० आरण्यक १।२८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपुरा रहस्य

परशिव (ब्रह्म) ने संकल्प किया 'स ऐक्षत' अथवा उसने दृष्टि खोली। संकल्प या ऐक्षण आन्तरिक इच्छाशक्ति का केन्द्रीभाव कहलाता है। इस केन्द्रीभाव को तन्त्रशास्त्र में परबिन्दु कहा गया है, क्योंकि परशिव (ब्रह्म) ने एक केन्द्र में घनीभूत होकर पहले संकल्प किया, उसके बाद उसने काम को वेग दिया। 'सोऽकामयत' अर्थात् गम्भीर दृष्टि से देखा। इस आदि इच्छा के उत्पन्न होने के बाद ज्ञान रूप वेग से परशिव (ब्रह्म) 'तपसा अचीयत' अर्थात् तप द्वारा एकीकरण को प्राप्त होकर घनरूप हुआ और उसमें प्राणतत्त्व की अभिव्यक्ति हुई। परशिव की उस परबिन्दु अवस्था में से जो आदि क्षोभ बनकर प्राणतत्त्व का उदय हुआ उसे अपरबिन्दु कहा गया। इसे ही शब्द ब्रह्म भी कहा जाता है। प्राणतत्त्व के भेद के बाद पन्द्रह कलाओं में सृष्टि की रचना में संलग्न परशिव की तीसरी शक्ति को क्रिया शक्ति कहा गया है। वह सृष्टि करने योग्य पदार्थों में श्रद्धा उत्पन्न करती है। वही क्रियाशक्ति पृथिवी, आकाश, जल, अग्नि, वायु इन पांच तत्त्वों में भोग योग्य जगत् को और भोगने के साधनों को प्रकट करती है, मन को बाह्यवेग प्रदान करती है, और उसके सुख, दुःखादि विविध फलों को प्रकट करती है। पञ्चतन्मात्राओं, इन्द्रिय समूह और मन सहित सात कलाओं से देहरूप साधन बनता है। उस देह में स्थित चेतन श्रद्धापूर्वक कर्म करता है, उस कर्म से नए-नए नाम रखकर अन्नादि भोग्य पदार्थों का उपभोग करता है। इस प्रकार के भोग से नवीन क्रियाएँ करने की शक्ति प्राप्त करता है। तप और ज्ञान-से दीप्ति प्राप्त करता है। मन्त्र आदि दिव्य साधनों से सिद्धि प्राप्त करता है। पृथिवी तथा अन्य लोकों में जन्म ग्रहण करता है। एक जन्म के बाद फिर जन्म लेता है, बार-बार जन्म लेता है। इस प्रकार क्रियाशक्ति पंद्रह कलाओं से लोक-लोकान्तरों, भुवनों की रचना कर भोग्य वस्तुएँ, भोगों के साधन, भोगभूमि आदि परशिव (ब्रह्म) के आदि संकल्प को, सृष्टि को सफल बनाती है। परशिव की इस क्रियाशक्ति को आगमों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और तन्त्रशास्त्र में 'नाद' कहा गया है। इसी को वेदान्त में इच्छा, ज्ञान और क्रियाशक्ति परिभाषित किया गया है और तन्त्रशास्त्र में बीज, नाद की पारिभाषिक संज्ञाएँ बनी हैं।

जब ब्रह्मशक्ति विश्व का रूप धारण करने के लिए एक केन्द्र में आती है तब उसकी संज्ञा परबिन्दु होती है। उसमें परशिव (ब्रह्म) का प्रकाश अभ्यन्तर स्वरूप को परामर्श कराने वाले विमर्श रूप में अपने को भलीभाँति पहचानने के लिए इस प्रकार की चैतन्य स्थिति जाग्रत रहती है। उस जाग्रत चैतन्य स्थिति में से जो द्रव्यक्षोभ होता है, उसके कारण जो अव्यक्त बिन्दु जाग्रत होता है, उसका नाम अपरबिन्दु है। व्याकरण आगम में इसे शब्द ब्रह्म चैतन्य कहा गया है। उस अपरबिन्दु का जब भेदन होता है तो जड़ अंश से बीज, अजड़ अंश से बिन्दु (अणु) और जड-अजड़ अंश से नाद जाग्रत होता है।

शक्ति की इन तीन भूमिकाओं को तन्त्रशास्त्र में इच्छा, ज्ञान, क्रिया नाम की परशिव (ब्रह्म) की स्वाभाविक अध्यात्मशक्ति माना जाता है। शक्ति के स्फुरण वाले अपरबिन्दु (शब्द ब्रह्म चैतन्य) को शिव कहा गया है। शिव ही शक्तिमान् कहलाता है। इस प्रकार परशिव (ब्रह्म) के परबिन्दु, अपरबिन्दु और उसके बिन्दु, बीज और नाद तीन विभाग होते हैं। वेदों में प्रतीकात्मक रूप से इसी को 'त्रिपुरधाम' कहा गया है। वैदिक वाङ्मय और पुराणों में शिव का प्रतीक (पूजा की जाने वाली आकृति) लिंग है। विष्णु का प्रतीक शालग्राम-शिला है और इसी प्रकार शक्ति का प्रतीक अथवा उसकी आकृति बिन्दु सहित त्रिकोण △ है।[1] अथर्ववेद में इस त्रिकोण को त्रिपुरसुन्दरी का आसन बताया गया है।[2] इस त्रिकोण का मध्यबिन्दु परबिन्दु का सूचक है और तीनों कोणों के शीर्ष चिदंश (बिन्दु), अचिदंश (बीज) और चिदचिदंश (नाद) के

---

१. त्रिपुर महोपनिषद्—तिस्रः पुरः—इत्यादि
२. अथर्ववेद, काण्ड १९ सूक्त ४ आकूतिः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूचक हैं। इस सम्पूर्ण त्रिकोण आकृति △ को त्रिपुरा कहते हैं। भगवती त्रिपुरसुन्दरी के प्रतीक (आकृत्ति) का प्रसार श्रीचक्र है और श्रीचक्र को समझाने वाली विद्या श्रीविद्या है।

उपर्युक्त त्रिपुरधाम की अधिष्ठात्री देवो त्रिपुरा, त्रिपुरसुन्दरो, सुभगा, सुन्दरी, कामेश्वरी, कामकला, ललिता, मूकाम्बिका, षोडशीमहाविद्या, श्रीविद्या, अम्बिका, राजराजेश्वरी, भुवनेश्वरी, वज्रेश्वरी, सर्वमङ्गला आदि नामों से साधना, आराधना और उपासना क्षेत्र में विख्यात है। यही ललिता हैं, यही दश महाविद्याओं में तीसरी महाविद्या षोड़शी हैं, यही श्री हैं, वालात्रिपुरा हैं और यही नन्दिकेश्वर कामराजोपास्य षोडश कूटात्मिका श्रीविद्या हैं।

आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थों को सिद्ध करती है और धर्म, ऐश्वर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य इन छह भगों (दिव्यगुणों) को प्रदान करती हैं, इसलिए इन्हें 'सुभगा' और 'भगमालिनी' कहा जाता है। इनकी उपासना पद्धति वताने वाले वेदकाण्ड को 'सौभाग्यकाण्ड' कहा जाता है। सौभाग्यकाण्ड अथर्ववेद का एक भाग है। सौभाग्यकाण्ड के सभी मन्त्र भगवती त्रिपुरसुन्दरी की उपासना से सम्बन्ध रखते हैं। त्रिपुरसुन्दरो की साधना-पद्धति, अनुष्ठान-पद्धति, पुरश्चरण पद्धति यामल ग्रन्थों, तन्त्रग्रन्थों आगमों के अतिरिक्त परशुराम आदि कल्पसूत्रों में निबद्ध है। त्रिपुरसुन्दरी की साधना का रहस्यसाहित्य उपनिषदों में है। शाक्त उपनिषद् सम्पूर्ण रूप से अभी तक प्रकाशित नहीं हो सके हैं, हस्तलिखित ही मिलते हैं।

त्रिपुरा नाम का विवेचन

जगत्—विश्व-ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाली इच्छाशक्ति का नाम त्रिपुरा इसलिए दिया गया है कि जिसमें तीन भुवन—भूः भुवः स्वः और उसके समस्त भोक्तृभोग्य पदार्थ समा जाते हैं। उस त्रिलोकी की भावना जगाने वाली त्रिपदा गायत्री अपने चौबीस अक्षरों द्वारा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सांख्यशास्त्र के चौबीस तत्त्वों को प्रकट करती है, इसलिए वह शाङ्खायन गोत्रा गायत्री कही गई है। उस त्रिपदा के अतिरिक्त त्रिपादूर्ध्व नारायण-स्वरूप का बोध कराने वाली गायत्री जिसे 'परोरजसेऽसावदोम्'—गायत्री का गुप्त चतुर्थपाद कहते हैं, वह संसार के राग और भौतिक रजोगुण के द्वारा परवस्तु (परशिव) का बोध कराने वाली त्रिपुरा है। त्रिपुरा का ही दूसरा नाम 'श्रीविद्या' है। अद्वैतवाद में अपरात्रिपुरा को अपरब्रह्म और परात्रिपुरा को परब्रह्म कहा गया है। अपरा त्रिपुरा की साधना, उपासना मैथुनी सृष्टि के लोक में की जाती है, वह लोक बार-बार जन्म और मृत्यु की पुनरावृत्ति करने वाला है। मैथुनी सृष्टि के लोक को 'सरजोब्रह्मलोक' कहा गया है और परात्रिपुरा की साधना, उपासना 'विरजोब्रह्मलोक' (दिव्य सृष्टि लोक में) में की जाती है। इसी लोक को गीता में 'यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम'—परंधाम कहा गया है।[1]

श्रीविद्या

दशमहाविद्याओं में षोडशी महाविद्या श्रीविद्या का परिणत रूप है। षोडशी तीसरी महाविद्या है। षोडशी शिव शक्ति है। सूर्य का जब प्रथम उदय हुआ तो उसमें पारमेष्ठ्य सोम की आहुति हुई, जिससे सूर्य की उग्रता शान्त हो गई और रुद्र सूर्य शिव बन गया। शिव भावापन्न सूर्य ही जगत् की उत्पत्ति का कारण है। शिवात्मक सूर्य ही पृथिवी, अन्तरिक्ष, आकाश और द्यौः रूप तीनों लोकों में निवास करने वाली मर्त्य-अमर्त्य प्रजा का निर्माण करता है। शिवतन्त्र में शिवात्मक सूर्य को पञ्चवक्त्र शिव कहा गया है। इसी शिवात्मक सूर्य का ही नाम षोडशी विद्या (त्रिपुरसुन्दरी) है। मध्याह्न के तपते हुए सूर्य को घोर सूर्य कहा गया है। प्रातःकालीन सूर्य को शान्त सूर्य कहा गया है। घोर सूर्य की शक्ति उग्र है और शान्त सूर्य की शक्ति शिवा है। तन्त्रसार

१. प्रश्नोपनिषद्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में बताया गया है कि शक्ति और शिव कार्यभेद से अनेक रूप हो जाते हैं। एक ही शिव सूर्य पाँच दिशाओं में व्याप्त होकर पञ्चवक्त्र बन जाते हैं। पञ्चवक्त्र शिव का जो ध्यान तन्त्रसार में बताया गया है, वह पाँच दिशाओं में व्याप्त शिव की पाँच मूर्तियों का बोध कराता है। एक शिव के पाँच मुख—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व दिशाओं के भेद से क्रमशः १. तत्पुरुष, २. सद्योजात, ३. वामदेव, ४. अघोर और ५. ईशान इन नामों से प्रसिद्ध हैं।

पञ्चवक्त्र शिव के पाँचों मुख क्रमशः 'चतुष्कल', 'अष्टकल', 'त्रयोदशकल', 'षष्ठकल' और 'पञ्चकल' हैं और वे हरित, रक्त, धूम्र, नील, पीत वर्ण के हैं। पञ्चवक्त्र शिव के दस हाथ हैं। एक हाथ में अभय, दूसरे हाथ में टङ्क, तीसरे हाथ में शूल, चौथे हाथ में वज्र, पाँचवें हाथ में पाश, छठे हाथ में खड्ग, सातवें हाथ में अंकुश, आठवें हाथ में घण्टा, नवें हाथ में नाग और दसवें हाथ में अग्नि है। ये दसों शिव के आयुध हैं। पञ्चवक्त्र शिव ज्ञानमय हैं, त्र्यक्षरूप हैं। अनादि-बोध स्वरूप हैं। सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हैं। अलुप्तशक्ति हैं और अनन्त शक्ति-मान् हैं। पाँच दिशाओं में इनकी व्याप्ति है। पाँचों दिशाओं की ओर यह देखते हैं। इनकी दृष्टि ही इनके मुख हैं।

प्रतीकों का रहस्यबोध

पञ्चमुख शिव के आग्नेय, वायव्य और सौम्य तीन स्वरूप-धर्म हैं। इन तीनों स्वरूप धर्मों में से प्रत्येक के तीन-तीन भेद हैं—आग्नेय प्राण के वायु, इन्द्र, अग्नि तथा वायव्य प्राश के वायु, शब्द, अग्नि और सौम्य प्राण से वरुण, चन्द्र, दिक् भेद हैं। इन भेदों से शिव की नौ शक्तियाँ हो जाती हैं। वे नव शक्तियाँ घोर हैं—उग्र हैं और उन सबका आधारभूत परोरज नाम का सर्वप्रतिष्ठारूप शान्तिमय प्राजापत्य प्राण हैं। इस प्रकार पञ्चवक्त्र शिव की दसशक्तियों के प्रतीक शिव के दस हाथ और दस आयुध हैं। शिव का टङ्क आयुध आग्नेय-ताप का

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूचक है। शूल आयुध वायव्य ताप का सूचक है, वज्र आयुध ऐन्द्र-ताप का सूचक है। पाश आयुध वारुण-ताप का सूचक है। खड्ग आयुध चान्द्र-शक्ति का सूचक है। अंकुश आयुध दिश्याहेति का सूचक है। नाग आयुध सञ्चर नाड़ी तथा विषाक्त वायु का संकेत है।

जिस वायु सूत्र से रुद्र प्रविष्ट होते हैं, उसे सञ्चर नाड़ी कहते हैं। इस सञ्चर नाड़ी का सम्बन्ध नाक्षत्रिक-सर्पप्राण से है। आकाशीय समस्त ग्रह-नक्षत्र सर्पाकार हैं, उनमें यही सौर तेज व्याप्त रहता है और सब ग्रह रूप सर्पों के साथ रुद्र-सूर्य का भोग होता है, इसलिए शिव के शरीर (मूर्ति) में सांप लपेट दिए जाते हैं। पञ्चवक्त्र शिव की दृष्टि प्रकाशरूपा है जो अग्नि ज्वाला के प्रतीक रूप में प्रदर्शित की जाती है। शिव के माथे में चन्द्रमा है। वह सोमाहुति का प्रतीक है तथा शिव की अभय-मुद्रा शान्तरूप परोरजाः प्राण का प्रतीक है। शिव स्वर-वाक् के अधिष्ठातृ देवता है, इसका प्रतीक घण्टा है, जिसे शिव धारण करते हैं।[१] पञ्चवक्त्र शिव का यही रूप है और इनकी शक्ति का नाम षोडशी है। यही श्रीविद्या है, यही त्रिपुरसुन्दरी है।

षोडशी का रहस्य-बोध

वृहदारण्यक[२] का कथन है कि सृष्टिसाक्षी आत्मा मनः प्राणवाङ्मय है। सूर्य में इन तीनों की सत्ता विद्यमान है। इसलिए सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम जगत् की आत्मा सूर्य को माना गया है। सूर्य में षोडशकलापूर्ण पुरुष का विकास है, अतः सूर्य की शक्ति को षोडशी कहा गया है। भूः भुवः स्वः ये तीनों ब्रह्मपुर षोडशी शक्ति से उत्पन्न हुए हैं, अतः तन्त्र-शास्त्र और आगमशास्त्र में षोड़शी शक्ति को त्रिपुरसुन्दरी कहा गया है। शाक्त-प्रमोद—षोडश तन्त्र में त्रिपुरसुन्दरी की प्रार्थना में उसका यह स्वरूप प्रकट किया गया है—

१. आगम-रहस्य
२. स वा एष आत्मा वाङ्मयः प्राणमयो मनोमयः—वृहदारण्यक।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालार्कमण्डलाभासां, चतुर्बाहां त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशशरांश्चापं, धारयन्तीं शिवां भजे ।।

—भगवती त्रिपुरसुन्दरी की प्रतिकृति प्रातःकालीन उदय होते हुए सूर्य की-सी छटा से प्रकाशवती है। उनके चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं। वह पाश, अंकुश, धनुष, बाण आयुध धारण किये हैं। सूर्य-शिव की शक्ति होने से वह शिवा कहलाती हैं। इसका निदान (प्रतीक) इस प्रकार है—

प्रतीकार्थ

सूर्य में प्रकाश है, अग्नि (ताप) है और आहुति सोम (चन्द्रमा) हैं। उस शिव शक्ति त्रिपुरसुन्दरी ने उपर्युक्त तीन रूपों से समस्त विश्व को प्रकाशित कर रखा है। प्रकाश, अग्नि और चन्द्रमा ये तीन ज्योतियां षोडशी त्रिपुरसुन्दरी के तीन नेत्र हैं। विज्ञान कहता है कि सौरशक्ति सम्पूर्ण खगोल में व्याप्त है और खगोल चतुर्भुज है। इसी चतुर्भुज खगोल के प्रतीक षोडशी त्रिपुरसुन्दरी की चार भुजाएँ हैं।[1] सोमाहुति से वह शान्त बन रही है। प्रातःकाल का बालार्क (बाल-सूर्य) षोडशी की इसी अवस्था का प्रतीक है जो शरीर की छटा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सूर्य से उत्पन्न होने वाली प्रजा सौर-आकर्षण-सूत्र से आबद्ध रहती है। हमारी पृथिवी भी उसी आकर्षण से बद्ध होने के कारण वह कभी भी अपने क्रान्तवृत्त को नहीं छोड़ती है। सौर-शक्ति ने अपने आकर्षण-पाश से सबको बांध रखा है—यह वैज्ञानिक गूढ़ भाव बताने के लिए त्रिपुरसुन्दरी पाश धारण किए हैं। पाश सौर शक्ति के आकर्षण का प्रतीक है।

---

१. यजुर्वेद और आधुनिक खगोल विज्ञान के आधार पर चतुर्भुज माङ्गलिक चिन्ह स्वस्तिक का निरूपण करते हुए मैंने अपनी पुस्तक 'चिन्तन के नए चरण' में विस्तार से व्याख्या की है।— लेखक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आद्याशक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरी अक्षररूपा हैं। प्रकृति के सभी अवयव उनके भय से सब अपना-अपना कार्य सुचारु रूप से करते हैं। सूर्य भी उस अक्षररूपा नियति से भयभीत रहता है। इस विषय में कठोपनिषद् का कथन है कि 'अक्षररूपा आद्याशक्ति षोडशी के भय से अग्नि तपता है, सूर्य तपता है, इन्द्र और वायु आदि सभी उसके भय से अपना काम यथावत् कर रहे हैं।'[1]

कठोपनिषद् के इस कथन के अनुसार आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी अपना अंकुश सब पर रखती है। उनका आयुध अंकुश इसी का प्रतीक है। आद्याशक्ति के इस अटल नियम का जो भी उल्लंघन करता है, उसका वह नाश कर डालती हैं। आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौः इन तीनों लोकों में व्याप्त रुद्र के अन्न, वायु और वर्षा ये तीन प्रकार के आयुध हैं[2]—वाण हैं। महाशक्ति अपने इन इषुओं (बाणों) से संहार करती है। त्रिपुरसुन्दरी जो शर (वाण) धारण किए हैं, वह इन्हीं का प्रतीक है।

सृष्टि का कर्त्ता ब्रह्मा, सृष्टिपालक विष्णु, सृष्टि संहारक रुद्र, खण्ड प्रलय के अधिष्ठाता यम—ये चारों देवता भगवती आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी के अधीन हैं, वह चारों पर प्रतिष्ठित है। 'चतुर्बाहाम्' इसी का प्रतीक है। इस प्रकार 'शाक्त-प्रमोद षोडशी तन्त्र' में बताया गया ध्यान त्रिपुरसुन्दरी के इसी रहस्य रूप को प्रकट करता है।

महात्रिपुरसुन्दरी का आसन

श्रीविद्या राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी पञ्चप्रेतासन पर विराजती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये पञ्चमहाप्रेत हैं। यह रहस्यवादी कथन है। इसका रहस्यार्थ यह है—

'निर्विशेष ब्रह्म ही अपनी शक्ति के विलास से ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र,

---

१. कठोपनिषद् २।६।३

२. यजुर्वेद १६।६६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वर, सदाशिव अभिधानों को प्राप्त होकर वामा आदि उनकी शक्तियों के सान्निध्य से सृष्टि, स्थिति, लय, निग्रह, अनुग्रहरूप पञ्चकृत्यों को सम्पादित करता है। जब ब्रह्मा, विष्णु आदि अपनी अपनी 'वामा' आदि शक्तियों से रहित होकर कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं, तब वे प्रेत कहे जाते हैं। इन पञ्च प्रेतों में ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और ईश्वर त्रिपुरसुन्दरी के सिंहासन के चार पाद हैं और सदाशिव सिंहासन के फलक हैं; जिस पर महाकामेश्वर के अंक में महाकामेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी विराजती हैं। स्वात्मशक्ति श्रीविद्या ही ललिता कामेश्वरी है। महात्रिपुरसुन्दरी है, और उपाधिरहित शुद्ध स्वात्मा ही महाकामेश्वर है। सदानन्दरूपा, सर्वमङ्गला उपाधिपूर्ण स्वात्मा ही पर-देवता महात्रिपुरसुन्दरी ललिता है। तात्पर्य यह कि 'स्व' अर्थात् साधक, उपासक की आत्मा अर्थात् अन्तर्यामी वह सदानन्द, सर्वमङ्गलउपाधिपूर्ण ही ललिता है। सत्-चित्-आनन्दस्वरूप धर्मत्रयनिर्मुक्त धर्मिमात्र वही स्वात्मा श्रीविद्या-ललिता का आधारभूत महाकामेश्वर है।

उपास्य : उपासक

ऐसी महिमामयी राजराजेश्वरी, महाकामेश्वरी भगवती त्रिपुरसुन्दरी की साधना, उपासना, आराधना भारत में प्राचीनकाल से प्रचलित है। ऋग्वेद से ज्ञात है कि अगस्त्य मुनि की पत्नी लोपामुद्रा और अम्भृण ऋषि की कन्या वाक् ने श्रीविद्या की साधना की थी। त्रेतायुग में जामदग्न्य परशुराम, विदेहराज जनक, ब्रह्मवादिनी ऋषिका गार्गी ने साधना की थी। द्वापर में श्रीकृष्ण भगवान् ने श्रीविद्या की स्थापना आगम मार्ग से करके श्रीविद्या की साधना की थी, उन्होंने जो नियमादेश प्रतिष्ठापित किए थे, वह गुह्य आदेश के नाम से राधातन्त्र, देवी भागवत, महाभारत (अनुशासन० अ० १४) में समाविष्ट है। भीष्म, अर्जुन, वेदव्यास, शुकदेव, असित, देवल, दुर्वासा ने श्रीविद्या की साधना की थी।[1]

1. महाभारत, विराट् पर्व, अध्याय ६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाभारतकाल के बाद श्रीविद्या की साधना दुर्गापूजा तथा अनेक देवी-व्रतों में समा गई। साधक और उपासक अपनी साधना के तन्त्रानुसारी मर्म से अनभिज्ञ होने लगे। श्रीशङ्कर भगवत्पाद के परमगुरु गौड़पाद आचार्य ने बदरिकाश्रम में श्रीविद्या त्रिपुरसुन्दरी की साधना करके सिद्धि प्राप्त की थी, तदनन्तर 'सुभगोदय' नामक ग्रन्थ की रचना की। श्रीशङ्कर भगवत्पाद ने ओङ्कारेश्वर क्षेत्र में श्री गोविन्द भगवत्पाद से संन्यास-दीक्षा लेकर वहीं पर राजराजेश्वरी श्रीविद्या की साधना की और अपने परमगुरु श्री गौड़पाद स्वामी रचित 'सुभगोदय' ग्रन्थ के आधार पर सौन्दर्यलहरी स्तुति काव्य की रचना की थी। श्री शङ्कराचार्य के अनुवर्ती सुरेश्वराचार्य, पद्मपादाचार्य, विद्यारण्य स्वामी आदि अनेक शङ्कराचार्यों ने श्रीविद्या की साधना की है। मीमांसकों में खण्डदेव के शिष्य शम्भुभट्ट, भास्करराय आदि अनेक मीमांसकों ने राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की साधना कर सिद्धि प्राप्त की है। महाप्रभु श्री चैतन्यदेव तथा उनके नित्यसङ्गी नित्यानन्द महाप्रभु श्रीविद्या के उपासक थे। चैतन्य सम्प्रदायगत सिद्धान्त के मूल में श्रीविद्या-साधना का स्पष्ट प्रभाव है। शैव सम्प्रदाय के आचार्य अभिनवगुप्त शिवोपासना के साथ श्रीविद्या की उपासना भी करते थे। श्रीशङ्कर भगवत्पाद के शाङ्कर अद्वैत सिद्धान्त के महिमामय आचार्य काञ्चीकामकोटि के जगद्गुरु शङ्कराचार्य महामनीषी, तपोधन श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती भगवत्पाद तन्त्र विद्या के निष्णात विद्वान् और राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी के अखण्ड साधक हैं। ब्रह्मलीन स्वामी हरिहरानन्द करपात्री जी ने राजराजेश्वरी की गहन साधना कर सिद्धि प्राप्त की थी। उन्होंने यह साधना नरवर (जिला—बुलन्दशहर, उत्तरप्रदेश) में महानिशा में श्रीगंगा जी में आकण्ठमग्न होकर लगातार तीन वर्ष तक की थी।

यद्यपि आजकल साधना का सम्प्रदाय-क्रम म्लान हो गया है तथापि भारत के अनेक स्थानों में श्रीविद्या की साधना अविच्छिन्न रूप में चल रही है।

●

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीयन्त्र

आगम और निगम ये दो भारतीय धर्म, संस्कृति और साधना के स्रोत हैं। इनमें निर्दिष्ट साधना के अनेक मार्ग लोक-रुचि के अनुसार श्रेय और प्रेय इन दो धाराओं में प्रवाहित कामनाएँ हैं। आगम निर्दिष्ट भिन्न-भिन्न साधना-पद्धतियों को आचार्यों ने 'आचार' नाम से अभिहित किया है। साधकों की अभ्युदय और निःश्रेयस् सिद्धि के लिए 'समयाचार', 'कौलाचार' 'वीराचार' आदि आचारों का विधान बताया गया है।

समयाचार—'समय' शब्द अनेकार्थवाची है। श्री भास्करराय (ग्यारहवीं शती) ने ललितासहस्त्र नाम के भाष्य में बताया है कि दहराकाश (हृदय) में चक्र-भावना से जो पूजा की जाती है, उसे समय-पद वाची कहा जाता है। समयाचार के प्रतिपादक वशिष्ठ, शुक, सनक, सनन्दन, सनत्कुमार द्वारा विरचित पञ्चशुभागम ग्रन्थ हैं।

'समय' शब्द का पर्यायवाची शब्द साम्य है। तात्पर्य यह कि शक्ति और शिव का साम्य ही समय कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार भगवती महाशक्ति समया है और भगवान् शिव समयः है। शिव और शक्ति का साम्य पांच प्रकार का है—अधिष्ठान, अनुष्ठान, अवस्थान, नाम और रूप—

१. पूजाधिकरण और चक्रादिका अर्चन अधिष्ठान है।

२. सृष्टि आदिकृत साम्य भाव अनुष्ठान है।

३. नृत्य आदि की क्रियाएँ अवस्थान हैं।

४. भैरव आदि नाम साम्य हैं।

५. आरुणि आदि रूप साम्य हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'कुलकुण्डलया कौलमार्गतत्परसेविता' की व्याख्या करते हुए श्री भास्करराय ने यह मत व्यक्त किया है कि 'श्रीविद्या की उपासना में 'समयाचार', 'कौलाचार' और 'मिश्राचार' तीन मत यथेष्ट हैं, सम्मत हैं। शुक, वशिष्ठ आदि द्वारा बताए गए पंचशुभागम वैदिक मार्गानुसार जो आचार है वह समयाचार है और चन्द्रकुलादि अष्ट तन्त्रों द्वारा प्रतिपादित मत मिश्राचार है। ये अष्ट तन्त्र समयाचार और कुलाचार का अनुसरण करते हैं।'

'समयः' शब्द के अनेक अर्थ हैं, उन अर्थों में पञ्चशुभागम प्रोक्त आचार ही 'समयाचार' है।

आद्य शङ्कराचार्य ने 'श्रीविद्या' की साधना 'समयाचार' मार्ग से की थी। उनकी 'सौन्दर्यलहरी' के आठवें श्लोक[१] की टीका में श्री लक्ष्मीधर (अठारहवीं शती) ने लिखा है कि 'श्रीचक्र (श्रीयन्त्र) की पूजा 'बाह्याकाश' और 'दहराकाश' भेद से दो प्रकार की होती है। भोजपत्र, स्वर्ण, रजत या ताम्रपत्र में यन्त्र का निर्माण कर उस पर सावरण परदेवता का पूजन बाह्याकाश पूजा है। यही 'कौलाचार' है। और साधक जब अपने हृदय कमल में श्रीचक्र की मानसी पूजा करता है तो वह 'समयाचार' पूजा है। दहराकाश की वह पूजा सहस्रदल कमल में विशेष रूप से होती है। विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए साधकगण अन्य चक्रों की पूजा में समयाचार का अवलम्बन करते हैं।

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ वर्णों से युक्त हृदयकमल में श्रीत्रिपुरसुन्दरी की आराधना साधक के सभी अभीष्टों को पूरी

---

१. सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवापी परिवृते।
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे॥
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां।
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन् चिदानन्दलहरीम्॥
—सौन्दर्यलहरी, श्लोक ८।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करती है। हृदयाकाश में भगवती का पूजन करने से भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है।

'कौलाचार' मत से 'श्रीचक्र' के अन्तर्गत त्रिकोण मध्यस्थ विन्दु में पराशक्ति का पूजन किया जाता है। इस प्रकार का पूजन 'पूर्वकौलाचार' कहलाता है और 'उत्तर कौलाचार' में प्रत्यक्ष षोडशी सुन्दरी स्त्रीशक्ति की 'योनिपूजा' की जाती है। इस प्रकार श्रीचक्र पूजन और सुन्दरी स्त्री की योनि-पूजा दो प्रकार की कौलाचार पूजा होती है।

'मिश्रकौलाचार' में वाह्य और अभ्यन्तर आधारचक्र में स्थित 'कुलकुण्डलिनी' का ध्यान किया जाता है। इस प्रकार की साधना को 'कौल-साधना' कहते हैं अतएव ऐसे कौल-साधकों की उपास्य देवी 'कौलिनी' कही जाती है। इस प्रकार की साधना में मद्य, मांस, मत्स्य, मैथुन और मुद्रा—ये पञ्चमकार प्रत्यक्ष ग्रहण किए जाते हैं। किन्तु 'समयाचार' मार्ग में पञ्चमकार से पराशक्ति की मानसी पूजा की जाती है। समयाचार मत में साधक के सहस्रदल कमल से निःसृत अमृतविन्दु का पान करना ही 'मद्य' है। काम, क्रोध आदि पशुओं को ज्ञानखड्ग से मारकर उनका मांसभक्षण करना 'मांस' है। इन्द्रियों का निग्रह 'मत्स्य' है। आशा, तृष्णा आदि मुद्रा है। मन को सुषुम्ना से योग कराना मैथुन है। दक्षिण मार्ग की साधना में मनन, मन्त्र, मन, मौन और मुद्रा— ये पञ्चमकार हैं। और वाममार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मैथुन और मुद्रा का प्रत्यक्ष सेवन किया जाता है। श्रीचक्र के समाराधन में तत्पर वाममार्गी साधकगणों मे पञ्चमकार की महती उपयोगिता स्वीकार की गई है। कल्पसूत्र मे कहा गया है, कि पञ्चमकार ब्रह्मानन्द के अभिव्यञ्जक है। श्रीचक्र का पूजन पञ्चमकार से गुप्त रीति से करना चाहिए, प्रकट रूप में नहीं। कहीं-कहीं प्रकट रूप से भी पञ्चमकार से श्रीचक्र-पूजन का विधान बताया गया है।

वेदमार्गी आचार्य और साधक वाममार्गी उपासना को अत्यन्त

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकृष्ट मानकर निन्दा करते हैं। वाममार्गी कौलों और समयाचारी वेदमार्गियों का यह विरोध ऋग्वेद[1] में भी मिलता है।

त्रिपुरसुन्दरी का शरीर श्रीयन्त्र

महामहिमावती भगवती श्रीविद्या त्रिपुरसुन्दरी की साधना, आराधना में श्रीचक्र अतीव उपयोगी यन्त्र है। श्रीयन्त्र को श्रीविद्या का शरीर और मन्त्र को देवी की आत्मा माना गया है। श्रीयन्त्र के बिना राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी की साधना,[2] अराधना या उपासना पूर्ण-फलवती नहीं होती है।

श्रीयन्त्र का स्वरूप

समयाचार और कौलाचार दोनों मतों से श्रीचक्र का उद्धार इस प्रकार बताया गया है—

श्रीचक्र का स्वरूप नौ आवरणात्मक है। यन्त्र की अर्चना में मुख्यतः दो क्रम हैं—१. सृष्टिक्रम और २. संहारक्रम। समयाचार में 'सृष्टि-क्रम' मान्य है और कौलाचार में 'संहारक्रम'। श्रीचक्र के अन्तर्गत त्रिकोणस्थ विन्दु में 'परदेवता' (श्रीविद्या) का पूजन करने के अनन्तर क्रमशः त्रिकोण, अष्टकोण, दशारद्वय, चतुर्दशारा, अष्ट, षोडश दल, भूपुरों में उत्तरोत्तर विकासमय पूजन, सृष्टिक्रम को मानने वाले साधक करते हैं। ये साधक समयानुचारी होते हैं। कुलाचार मतानुयायी कौल साधक

---

१. न यातव इन्द्रजूजुर्वुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः।
सशर्ध दर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः॥
—ऋग्वेद ७।३१।५।३

२. विन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मं मन्वस्त्रनागदलशोभितषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणी सदनत्रयञ्च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः॥
—त्रिपुरा महोपनिषद्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो बिन्दु और त्रिकोण का पूजन करने के बाद भूपुर से आरम्भ करके क्रमशः बिन्दु पर्यन्त नौ आवरणों का क्रमशः पूजन संहारक्रम से करते हैं।

यह प्रसिद्ध है कि तन्त्रग्रन्थों में जो नौ त्रिकोणों से श्रीचक्र का निर्माण होता है, उनमें पांच कोण शिव के और चार कोण शक्ति के होते हैं। समयाचार में शिव के त्रिकोण अधोमुख होते हैं और शक्ति के त्रिकोण ऊर्ध्वमुख होते हैं, किन्तु कौलाचार में इसके विपरीत शक्ति के पांच त्रिकोण अधोमुख होते हैं और शिव के चार त्रिकोण ऊर्ध्वमुख होते हैं। समयाचार और कुलाचार में श्रीचक्र के निर्माण में यही क्रम वैपरीत्य है। इस प्रकार त्रिकोणों के परस्पर मिलन से शिव और शक्ति का विग्रहभूत श्रीचक्र बनता है।

नौ चक्रों में त्रिकोण, अष्टकोण, दशारद्वय, चतुर्दशारा पञ्चशक्ति के चक्र हैं और विन्दु, अष्टदल, षोडशदल चतुरस्रों के शिवचक्र हैं। इन चक्रों के परस्पर मिलन से शिव और शक्ति की एकता का भाव प्रदर्शित करने वाले श्रीचक्र की स्थिति है। श्रीचक्र की लेखन-विधि अत्यन्त गहन है। जरा-सी भूल अर्थ को अनर्थ में परिवर्तित कर देती है। इसलिए साधक चाहे समयाचारी हो या कुलाचारी हो श्रीचक्र के निर्माण में उसे अतिशय सावधानी बरतनी चाहिए और बाजार में बिकने वाले श्रीचक्र से दूर रहना चाहिए।

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि कौल साधना के अनुसार मूलाधार में स्थित स्वयम्भूलिङ्गवेष्टित जाग्रत कुलकुण्डलिनी क्रमशः चक्रों को प्रकाशित करती हुई सहस्रारचक्र तक आरोहण करती है। यह उनकी आरोहण क्रम की साधना है और समयाचार का अवलम्बन करने वाले साधक इसके विपरीत अवरोहणक्रम की साधना करते हैं।

●

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौन्दर्य-लहरी में श्रीयन्त्र का उद्धार

आद्य शङ्कराचार्य ने समयाचार का अनुसरण कर श्रीविद्या की साधना की थी। सौन्दर्य-लहरी में भगवती की स्तुति करते हुए उन्होंने श्रीयन्त्र के गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन इस प्रकार किया है—

> चतुर्भि श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि।
> प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः॥
> त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाब्जत्रिवलय—
> त्रिरेखाभिः सार्द्धं तव भवनकोणाः परिणताः॥ ११॥

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः

एक चतुरस्र ताम्र-पत्र बनाकर उसके चारों कोणों पर १ श्रीकण्ठ, २ पशुपति, ३ महेश्वर, और ४ रुद्र—इन चार श्रीकण्ठों (शिव) को स्थापित कर यन्त्र के मध्य में शम्भुरूपी विन्दु को स्थापित करने के बाद चतुरस्रावृत पञ्च कोणात्मक यन्त्र के पांचों कोणों पर १ पार्वती, २ माहेश्वरी, ३ रुद्राणी, ४ सती और ५ उमा—इन पांच शिवयुवतियों को स्थापित करे। इसके बाद पञ्चकोणावृत यन्त्र के चारों ओर प्रथम वलय वनाया जाए, और वलय के ऊपर १ शैलपुत्री, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्दमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्रि, ८ महागौरी, और ९ सिद्धिदात्री—इन नौ मूल प्रकृति रूप, नौ कमलदल बनाकर उन दलों पर ९ देवताओं की स्थापना करे, फिर उस वलय के ऊपर यंत्र-पत्र में अष्टदल बनाकर उन दलों में १ कुसुमा, २ मेखला, ३ अनंगमदना, ४ अनंगमदनांकुशा, ५ अनङ्गरेखा, ६ अनङ्गवेगिनी, ७ अनङ्गाङ्कुशा, ८ अनङ्गमानिनी—इन आठ देवताओं की स्थापना करके उस वलय के ऊपर तीसरा वलय बनाए। इस तरह कुण्डलाकार तीन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वलयों की स्थापना करके उस वलय के ऊपर कलास्र (षोडश दल) बनाकर सोलहों दलों पर १ श्रीः, २ लक्ष्मीः, ३ कमला, ४ पद्मा, ५ पद्मिनी, ६ कमलालया, ७ रमा, ८ वृषाकपिः, ९ धन्या, १० पृथ्वी, ११ यज्ञा, १२ इन्दिरा, १३ उषा, १४ माया, १५ गिरा और १६ राधा—इन सोलह देवताओं की स्थापना करे।

तदनन्तर तीन रेखाओं से निर्मित भूपुर (भूगृह) और चार द्वारों से युक्त श्रीयन्त्र निर्मित होता है, जिसमें ४ श्रीकण्ठ, मध्य में १ विन्दुरूपी भूः, पञ्च कोणात्मक यन्त्र में ५ शिव युवतियां, ९ मूल प्रकृतियां, ८ अष्टदल, और षोडषदल कुल ४३ कोण बनते हैं।

श्रीयन्त्र के नौ चक्रों का उल्लेख रुद्रयामल तंत्र[1] में इस प्रकार है—

१. विन्दु, २. त्रिकोण, ३. आठ त्रिकोणों का समूह, ४. दस त्रिकोणों का समूह, ५. दस त्रिकोणों का समूह, ६. चौदह त्रिकोणों का समूह, ७ अष्टदल कमल, ८. षोड़श (१६) दल कमल और ९. भूपुर (भूगृह)। अष्टदल और षोडशदल कमलों के भीतर २, ३, ४, ५ और ६ चक्रों के ४३ त्रिकोण वही हैं जो सौन्दर्यलहरी के उपर्युक्त श्लोक में बताए गए हैं।

इन नौ चक्रों के नाम इस प्रकार हैं—

१. सर्वानन्द केन्द्रस्थ त्रिकोण।
२. सर्वसिद्धिप्रद त्रिकोण।
३. सर्वरक्षाकर त्रिकोण।
४. सर्वरोगहर त्रिकोण।

---

१. विन्दुस्त्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मं
मन्वस्रनागदलसंयुतषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयञ्च
श्रीचक्रराजमुदितं परदेवतायाः॥ —रुद्रयामलतन्त्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. सर्वार्थसाधक त्रिकोण ।
६. सर्वसौभाग्यदायक त्रिकोण ।
७. सर्वसंक्षोभण त्रिकोण ।
८. सर्वाशापरिपूरक त्रिकोण ।
९. त्रैलोक्यमोहन त्रिकोण ।

यन्त्रराज के ९ चक्रों का यथाक्रम विवरण इस प्रकार है—

१. प्रथम चक्र का केन्द्रस्थ विन्दु भगवती त्रिपुरसुन्दरी का रूप है। यह विन्दु नाद तथा विन्दु '॰' के तीन विन्दुओं के योग से बनता है। तन्त्र शास्त्रों तथा सौन्दर्यलहरा में सुधासिन्धु एवं मणिद्वीप का उल्लेख मिलता है। मणिद्वीप में शिव और शिवा की संयुक्त शक्ति निवास करती है। चक्रराज श्रीयन्त्र में वही मणिद्वीप विन्दु द्वारा दिखाया गया है। मनुष्यों में इसी को हृत्पुण्डरीक कहते हैं। भगवती का ध्यान हृत्पुण्डरीक में करने की विधि ध्यानविन्दु उपनिषद् में विस्तार से बताई गई है।

श्रीयन्त्र के प्रथम चक्र की अधिष्ठात्री देवी भगवतो त्रिपुरसुन्दरी हैं, जो अपनी आवरण-देवताओं के भेद से षोड़श नित्याओं में मुख्य और अष्टमातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गई हैं। कहीं-कहीं इन्हें अष्टवशिनी देवताओं की नायिका भी बताया गया है। भगवती के ये भेद प्रस्तार-भेद से हुए हैं और इन तीनों प्रस्तारों के नाम क्रमशः मेरु, कैलाश तथा भूः प्रस्तार हैं। श्रीयन्त्र की उपासना के मुख्य प्रकार यही हैं।

२. द्वितीय चक्र एक त्रिकोण से बनता है। इस त्रिकोण के तीनों कोण कामरूप, पूर्णगिरि और जालन्धरपीठ हैं। इनके मध्य में औड्याण-पीठ हैं। उपर्युक्त बताए गए तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवी कामेश्वरी, वज्रेश्वरी और भगमालिनी हैं। और यही तीनों देवियां भगवतो त्रिपुर-सुन्दरो की रूपकलाएं हैं जो प्रकृति, महत् तथा अहङ्काररूपा हैं।

३. तृतीय चक्र के आठ त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवियां वशिनी, कामेश्वरी, विमला, अरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी तथा कौलिनी हैं, जो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रमशः शीत, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्व, रज तथा तम की स्वामिनी हैं। इस तृतीय चक्र की साधना करने वाला साधक तीनों गुणों पर अधिकार प्राप्त कर द्वन्द्वातीत हो जाता है।

४. चतुर्थ चक्र के दस त्रिकों की सर्वज्ञा, सर्वशक्तिप्रदा, सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिविनाशिनी, सर्वाधारा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षा तथा सर्वेप्सितफलप्रदा शक्तियाँ क्रमशः रेचक, पाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक, जृम्भक और मोहक वह्नि-कलाओं की अधिष्ठात्री हैं।

५. पञ्चम चक्र की सम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी, सर्व-सिद्धिप्रदा, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःखनिवारिणी, सर्वमृत्युप्रशमिनी सर्वविघ्न-निवारिणी, सर्वाङ्गसुन्दरी तथा सर्वसौभाग्यदायिनी देवियाँ अधिष्ठातृ देवताएँ हैं।

६. षष्ठ चक्र के चौदह त्रिकोण चौदह मुख्य नाड़ियों के द्योतक हैं। अलम्बुसा, कुहू, विश्वोदरी, वारणा, हस्तिजिह्वा, यशोवती, पयस्विनी, गान्धारी, पूषा, शङ्खिनी, सरस्वती, इडा, पिङ्गला तथा सुषुम्णा हैं। इन चतुर्दश नाड़ियों की अधिष्ठातृ देवियाँ क्रमशः सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वह्लादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्व-जम्भिनी, सर्वशङ्करी, सर्वरञ्जिनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधिनी, सर्व-सम्पत्तिपूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी हैं।

७. सप्तम चक्र के आठ कमलदल वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द, दान उपादान तथा उपेक्षा को बुद्धियों के स्थानापन्न हैं। इनकी अधिष्ठातृ देवियाँ क्रम से अनङ्गकुसुमा, अनङ्गमेखला, अनङ्गमदना, अनङ्गमदनातुरा, अनङ्गरेखा, अनङ्गवेगिनी, अनङ्गमदनाङ्कुशा और अनङ्गमालिनी हैं।

८. अष्टम चक्र के षोडश कमलदलों का सम्बन्ध मन, बुद्धि, अहङ्कार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, चित्त, धैर्य, स्मृति, नाम, वार्धक्य,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूक्ष्मशरीर, जीवन तथा स्थूल शरीर से है। इनकी अधिष्ठातृ देवियाँ कामार्काषिणी, बुद्ध्याकर्षिणी, रसाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, चित्ताकर्षिणी, धैर्याकर्षिणी, स्मृत्याकर्षिणी, नामाकर्षिणी, बीजाकर्षिणी, आत्माकर्षिणी तथा शरीराकर्षिणी हैं।

९ नवम चक्र भूपुर से बना है और इसके चार विभाग हैं—

१. षोडश दल कमल के बाहर के चारों वृत्तों से परे तडाग सदृश स्थल।

२. इस स्थल से संलग्न प्रथम बाह्य रेखा।

३. द्वितीय बाह्य रेखा।

४. सबसे बाहर वाली रेखा।

उपर्युक्त चारों विभागों में क्रमशः दस मुद्राशक्तियाँ, दस दिक्पाल, आठ मातृकाएँ और दस सिद्धियां स्थित हैं। चित्ताकर्षिणी, सर्वसंक्षोभिणी, सर्वाकर्षिणी, सर्ववशिकारिणी, सर्वोन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीजमुद्रा, महायोनि तथा त्रिखण्डिका ये दस मुद्राशक्तियां हैं। और इनका सम्बन्ध दस आधारों से है। इन्हीं दस आधारों के रूप में ही श्रीयन्त्र और षट्चक्रों का तादात्म्य सम्बन्ध सिद्ध होता है। आधारों की व्याख्या अति गहन है। सर्वसाधारण के बोध से परे है।

इस नवम चक्र में स्थित दस दिक्पालों के पूजन से साधक की सभी विघ्नों से रक्षा होती है। अष्टमातृकाओं — ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी का पूजन करने से यन्त्र-राज के साधक को काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर और पाप तथा पुण्य पर विजय मिलती है। इस चक्र में स्थित सिद्धियों का सम्बन्ध नौ रसों तथा भाग्य से है।

श्रीयन्त्र का विषय-विवेचन और इसकी साधना अतिगहन है। इससे शैवशाक्तसाधना तत्त्वों का स्पष्टीकरण प्राप्त होता है। सृष्टि तथा जीवात्मा के विकास का क्रम ज्ञात होता है। निराकार ब्रह्म की

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सगुण, साकार लीला का क्रम विशाल ब्रह्माण्ड और पिण्डाण्ड (मनुष्य-शरीर) में प्रदर्शित किया गया है। यह यन्त्र भगवती त्रिपुरसुन्दरी का शरीर है। माता, मान, मेय अथवा ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय की त्रिपुटी ही तीन पुर हैं। जिनकी स्वामिनी भगवती त्रिपुरा राजराजेश्वरी त्रिपुर-सुन्दरी हैं और इन त्रिपुटियों का तत्त्व केवल एक ही है। जिसने इस प्रकार के एकत्व का अनुभव कर लिया है वह साक्षात् महात्रिपुरसुन्दरी ही है।[1]

श्रीयन्त्र पूजन विधि

श्रीयन्त्र तथा त्रिपुरसुन्दरी-पूजा के उत्तर और दक्षिण दो क्रम है। काञ्ची, मद्रास, केरल तथा कर्नाटक एवं मदुरै में राजराजेश्वरी, मूकाम्बिका एवं मीनाक्षी की पूजा दक्षिण-क्रम से हुआ करती है। उत्तर क्रम इससे भिन्न है। यहां हम उत्तर क्रम से ही पूजन विधि लिख रहे हैं।

किसी भी साधना, उपासना, अनुष्ठान में इष्टदेवता की षोडशोप-चार पूजा करने से पूर्व सामान्यतया तन-मन की पवित्रता, आचमन, प्राणायाम, शापोद्धार, तत्त्वशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास आदि और विनियोग अनिवार्य हुआ करते हैं। इसके बाद पूजन, फिर ध्यान तदनन्तर मूलमन्त्र का जप किया जाता है।

---

१. माता मानं मेयं विन्दुत्रयभिन्नबीजरूपाणि।
धामत्रय पीठत्रय शक्तित्रय भेद भावितान्यपि च॥
तेषु क्रमेण लिङ्गत्रितयं तद्वच्च मातृकात्रितयम्।
इत्थं त्रितयपुरीयातुरीयपीठादिभेदिनी विद्या॥
इतिकामकला विद्या देवी चक्रात्मिका सेयम्।
विदिता येन स मुक्तो भवति महात्रिपुरसुन्दरीरूपः॥

—कामकलाविलास

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीचक्र की पूजा का विनियोग यह है—

अस्य श्रीयन्त्रस्य श्रीकण्ठादि न्यासस्य अम्बरीष ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। अर्द्धनारीश्वरो देवता ह्लो बीजानि। शखराः शक्तयः ज्ञान-विज्ञानार्थे सकलाभीष्ट संसिद्धयर्थे श्रीचक्रसपर्यायां विनियोगः।

अङ्गन्यास

ॐ ह्लीं श्रीं नमः शिवाय ब्रूं ब्रह्माणि रक्ष रक्ष हंसवाहिनि पद्महस्ते रक्ष रक्ष ह्लां ह्लीं ह्लूं अं कं खं गं घं ङं आं ह्लीं ह्लूं ह्सौः सञ्जीवनी हृदयायनमः।

ॐ ह्लीं श्रीं नमः शिवाय म्रूं माहेश्वरी रक्ष रक्ष वृषभवाहिनि त्रिशूलहस्ते रक्ष रक्ष ह्लां ह्लीं ह्लूं चं छं जं झं ञं ईं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्सौः ऊर्ध्वकेशिनि शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्लीं श्रीं नमः शिवाय कं कौमारि रक्ष रक्ष मयूरवाहिनि शक्ति-हस्ते रक्ष रक्ष ह्लां ह्लीं ह्लूं उं टं ठं डं ढं णं ऊं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्सौः ज्वलितशिखायैवषट्॥

ॐ श्रीं ह्लीं नमः शिवाय वैष्णवि रक्ष रक्ष गरुडवाहिनि चक्रहस्ते रक्ष रक्ष ह्लां ह्लीं ह्लूं एं तं थं दं धं नं ऐं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्सौः विश्वव्यापिनि कवचाय हूं।

ॐ ह्लीं श्रीं नमः शिवाय वाराहि रक्ष रक्ष महिषिवाहिनी गदाहस्ते रक्ष रक्ष ह्लां ह्ली ह्लूं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्सौः कुमारिणि अस्त्रायफट्॥

अङ्गन्यास के बाद श्रीयन्त्र का षोडशोपचार पूजन श्रीकण्ठ के मूल मन्त्र को जपते हुए करना चाहिए।

श्रीकण्ठ का मूल मन्त्र—ॐ ह्लीं श्रीं नमः शिवाय।

पूजन के पश्चात् यन्त्रराज अधिष्ठातृ देवी राजराजेश्वरी का ध्यान निम्नांकित श्लोकार्थ की भावना रखकर करना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यान

बालार्कं मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवांभजे ॥

ध्यान के पश्चात् भगवती त्रिपुरसुन्दरी के पञ्चदशाक्षर मंत्र का जप (१०८ बार) करना चाहिए ।

पञ्चदशाक्षरी मन्त्र—ॐ श्री भुवनेश्वर्यै बालात्रिपुरायै स्वाहा ।

यह सामान्य पूजा विधि है । नित्य चक्रराज की पूजा इस विधि से करना सभी के लिए ग्राह्य है । त्रिपुरसुन्दरी की साधना में प्रारम्भ में श्रीचक्र का पूजन उक्त विधि से करना अनिवार्य है ।

●

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौन्दर्यलहरी के श्लोकों में गर्भित मन्त्र

इस ग्रन्थ में सौन्दर्यलहरी के स्तुतिपरक श्लोकों से विविध मन्त्रों का उद्धार कर उनकी साधना-विधि बताई गई है। सौन्दर्यलहरी में कुल १०३ स्तुतिश्लोक हैं। किन्तु हमारी दृष्टि से ७० श्लोकों में ही मन्त्र गर्भित हैं। अतः उन्हीं श्लोकों से हमने मन्त्रों का उद्धार किया है। थियोसोफिकल पब्लिकेशन्स, अड्यार (मद्रास) से सौन्दर्यलहरी प्रकाशित है। इसके व्याख्याकार पं० एस० सुब्रह्मण्यशास्त्री तथा टी० आर० श्रीनिवास आयङ्गर महोदय हैं। यह ग्रन्थ अंग्रेजो में है, इसका प्रथम संस्करण सन् १९३७ में प्रकाशित हुआ था। हमारे पास सन् १९७७ का संस्करण है। इस ग्रन्थ में प्रत्येक श्लोक में एक-एक यन्त्र उद्धृत किया गया है। एक सो तीन यन्त्रों का पूजाविधान भी संक्षेप में बताया गया है। हमने सम्पादकों को पत्र लिख कर उनसे यह जिज्ञासा प्रकट की थी कि सौन्दर्यलहरी के १०३ श्लोकों में प्रत्येक श्लोक पर यन्त्रों का उद्धार किस विधि और नियम से किया गया है ? कोई उत्तर न आने पर हमने स्वयं अड्यार जाकर जब पूछा तब भी यथार्थ उत्तर नहीं मिल सका।

'सौन्दर्यलहरी' के ग्यारहवें श्लोक से 'श्रीयन्त्र' अवश्य उद्धृत होता है किन्तु अड्यार से प्रकाशित सौन्दर्यलहरी में उद्धृत श्रीयन्त्र शङ्कर भगवत्पाद द्वारा रचित श्लोक से सर्वथा भिन्न है। उसमें केवल मध्य भाग में बिन्दुमात्र है, शेष सभी कोण बीजाक्षरों और देवताओं से रहित हैं, जबकि श्रीयन्त्र के प्रत्येक कोण में परदेवता त्रिपुरसुन्दरी की चरण किंकरी रूपिणी देवताएँ होनी चाहिए तभी कोणों की पूजा हो सकती है। देवतारहित यन्त्र के कोण केवल चित्र रूप, रेखारूप होने से यन्त्र की साधना, उपासना और उसकी पूजा फलवती होगी—इसमें सन्देह है।

सौन्दर्यलहरी के जिन सत्तर श्लोकों से हमने मन्त्रों का उद्धार किया है, उनमें छह प्रयोगों की साधना है। उन प्रयोगों की साधना में साधक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चित्तवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। साधना के समय उसकी मनोवृत्ति कैसी रहती है, यह बतला देना आवश्यक है।

मन्त्रों के अन्त से पल्लव, पताका आदि के नाम से जो सांकेतिक शब्द लगते हैं, वही साधक की चित्तवृत्ति को प्रभावित किया करते हैं। वे सांकेतिक शब्द ये हैं—

१. नमः, २. स्वाहा, ३. वषट्, ४. वौषट्, ५. हुम् और ६. फट्।

१. नमः शब्द साधक को विनयशीलता का भाव प्रदान करता है। अन्तःकरण की शान्त अवस्था में नमः शब्द का प्रयोग होता है।

२. स्वाहा—जो साधक यथाशक्ति अपनी शक्तियों का उपयोग परोपकार के लिए करता है। परोपकाररत साधक परहित के लिए अपने आपको स्वाहा कर देता है, वह अपने विरोधियों, निन्दकों की विरोधी, ईर्ष्यालु भावनाओं को निरस्त कर उन पर पूरा अधिकार पा लेता है। यह स्वाहान्तमन्त्र की साधना का प्रभाव है।

३. वषट्—जिस मन्त्र के अन्त में वषट् लगा रहता है उसकी साधना करने वाले साधक के अन्तःकरण की उस वृत्ति का वषट् लक्ष्य कराता है जो अपने विरोधियों, शत्रुओं के अनिष्ट साधन में अथवा उनके प्राणहरण के लिए तत्पर रहता है।

४. वौषट्—साधक अपने शत्रुओं के हृदयों में जब परस्पर राग-द्वेष उत्पन्न कराने की प्रबल भावना रखता है तब उसे उस मन्त्र की साधना करनी चाहिए जिसके अन्त में वौषट् रहता है।

५. हुम्—यह सांकेतिक बीज साधक के शत्रुओं का उच्चाटन कराने और उनके प्रति भयंकर क्रोध का भाव रखने का ज्ञापक है।

६. फट्—साधक जब अपने शत्रुओं के प्रति शस्त्रप्रयोग करने का भाव रखता है तब वह उस मन्त्र की साधना करता है, जिसके अन्त में फट् रहता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर्युक्त सांकेतिक शब्दों का विस्तृत वर्णन उड्डीसतन्त्र[1] में मिलता है और महानिर्वाणतन्त्र[2] में इन्हीं सांकेतिक शब्दों का प्रयोग अङ्गन्यास तथा करन्यास के लिए किया गया है। तन्त्रशास्त्र के अतिरिक्त उपर्युक्त सांकेतिक शब्दों के प्रयोग वेद मन्त्रों में भी अधिकता से मिलते हैं।

सौन्दर्यलहरी के सत्तर श्लोकों से उद्धृत मन्त्र कई प्रकार के हैं, उनमें योग-साधना और कुण्डलिनी-जागरण सम्बन्धी भी हैं। मारण, मोहन, उच्चाटन, कीलन, विद्वेषण, वशीकरण मन्त्रों के अलावा सुख, सौभाग्य, विद्या, ज्ञान आदि प्राप्त कराने वाले विविध मन्त्र हैं। मन्त्र का जप साधक की मनोवृत्ति बनाने में पूर्ण सहायक होता है। चित्त की यथेष्ट और प्रबलवृत्ति ही मन्त्र-साधना में सिद्धि प्रदान करती है। चित्त यदि चंचल रहा, हृदय में शंका और अश्रद्धा रही तो कोई भी मन्त्र कभी फलप्रद नहीं हो सकता।

साधक को यह बात विशेषरूप से हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए कि कोई मन्त्र-साधना तभी सिद्धि प्रदान करती है, जब एकाग्रचित्त से मन्त्र का मानसिक जप किया जाए। मानसिक जप दिव्य भाव के साथ सुषुम्णा नाड़ी के मार्ग में किया जाता है। इसके विपरीत यदि मन चंचल रहा और केवल जिह्वा से ही मन्त्र का जप होता है तो ऐसी हालत में मन्त्र के बाह्य रूप के विचार के साथ सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है और साधक की साधना अथवा मन्त्र-जप निष्फल हो जाता है।

किसी भी प्रयोजन की सफलता के लिए मानसिक शक्ति, संकल्प-शक्ति सर्वोपरि साधना है। यदि किसी मनुष्य में प्रबल मानसिक शक्ति विद्यमान है, तो उसे यन्त्र, मन्त्र की कोई आवश्यकता नहीं रहती है।

---

१. उड्डीशतन्त्र, श्लोक १६३।

२. महानिर्वाणतन्त्र, ५।१२६-२८।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसकी मानसिक शक्ति ही उसे यथेष्ट फल देती है। जिस किसी देवी-देवता की उपासना की जाती है, उसके मूलमन्त्र का जप किया जाता है, उस उपासक को मन्त्राधिष्ठित देवता मानसिक शक्ति प्रदान करती है और उसका प्रयोजन सफल होता है। यदि मानसिक शक्ति क्षीण होती है तो मन चंचल रहता है, हृदय शंकाओं, अविश्वास और दुविधा से ग्रस्त रहता है। ऐसी अवस्था में कोई भी पूजा-पाठ, जप, अनुष्ठान, पुरश्चरण आदि यथेष्टफल नहीं देते हैं। संसार में जो भी परिवर्तन हुआ करते हैं, उन सब का आधार मानसिक शक्ति है।

प्रत्येक आकार या प्रतिमा अथवा यन्त्र के अन्तर्गत एक संकल्प निहित रहता है। आकार वस्तुतः संकल्प का आकार है। आकार यन्त्र है और संकल्प मन्त्र है। इसीलिए प्रत्येक यन्त्र का अथवा आकृति का एक मन्त्र (संकल्प) हुआ करता है। किसी संकल्प को स्थिर करने तथा चिन्तन के निरन्तर अभ्यास से मनुष्य आकार निर्माण कर सकता है, क्योंकि विचार की स्थिरता चारों ओर से प्रकृति का आकर्षण करती है और प्रकृति संकल्प के आकार को भर कर उसे स्थूल रूप प्रदान करती है।

प्रायः यह देखने में और सुनने में आता है कि सिद्ध योगी तरह-तरह के रूप धारण कर लेते हैं—प्रकट होते हैं और अन्तर्धान हुआ करते हैं। इतना ही नहीं वह जड़ पदार्थ का भी रूप धारण कर लेते हैं। यह सब मन्त्रों की साधना से सम्भव है। इस सम्बन्ध में हमने अपने 'तन्त्र सिद्धान्त और साधना' ग्रन्थ में विस्तार से विवेचन किया है।

तन्त्र-साधना या मन्त्र-साधना में जाति-धर्म, देश आदि का कोई बन्धन नहीं है।[1] शूद्र, चाण्डाल, श्वपच, शबर से लेकर ब्राह्मण तक सभी आद्याशक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरी की सन्तान है, उनकी उपासना करने का अधिकार सबको है।

●

१. महानिर्वाण तन्त्र ३।८०, ८१ एवं ८।८०।१८०।
तथा गोतमीय तन्त्र ७।१३-१८।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंत्र-साधना की प्रक्रिया

१. श्रीविद्यासाधना सम्बन्धी मन्त्रों में से प्रयोजन के अनुसार जिस किसी मन्त्र की साधना की जाए, उसके लिए कोई विशेष ऋतु, मास, तिथि, दिन की अपेक्षा नहीं होती है। आवश्यकतानुसार किसी भी दिन से साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

२. साधना-काल में संयम-नियम, सदाचार, ब्रह्मचर्य, सात्विक, सन्तुलित आहार-विहार नितान्त अपेक्षित है।

३. साधना-स्थल पवित्र, एकान्त होना चाहिए। बैठने के लिए ऊन या कुश का आसन अथवा मृगचर्म होना चाहिए। सिद्धासन से बढ़कर कोई आसन नहीं है और शाम्भवी मुद्रा से बढ़कर कोई मुद्रा नहीं है। सिद्धासन लगाकर शाम्भवी मुद्रा से बैठकर जो साधना की जाती है, वह निश्चय ही सिद्धि को प्राप्त होती है। किन्तु जिन्हें देर तक आसन और मुद्रा में बैठने का अभ्यास नहीं हो और किसी अनिवार्य प्रयोजन की सिद्धि के लिए वह मंत्र-साधना करना चाहते हों तो उन्हें सुखासन से बैठना चाहिए। यह ध्यान रहे कि बार-बार आसन न बदला जाए और न उठकर चाल-फेर किया जाए।

४. जप करने की माला रुद्राक्ष, लाल चन्दन, स्फटिक मणि—इन तीन में से कोई एक होनी चाहिए।

५. भाद्रपद कृष्ण अमावस्या के दिन उत्पाटित कुश होना चाहिए।

६. पहनने, ओढने के वस्त्र रेशमी, ऊनी हों अथवा पवित्र किए हुए सूती होने चाहिए।

७. साधना का समय प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त या रात १० बजे के बाद।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुविधानुसार एक समय निश्चित कर लेना चाहिए। समय बदला न जाए।

८. साधना-स्थल में एक पीठासन स्थापित कर उस पर लाल रंग का रेशमी या सूती वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर श्रीयन्त्र (श्रीचक्र—तांबा या भोज पत्र पर निर्मित) स्थापित किया जाए। यदि श्रीयन्त्र न मिल सके तो केसर, जावित्री, कपूर और लाल चन्दन घिस कर ताम्रपात्र पर अनार की लेखनी से त्रिकोण △ बनाया जाए। यदि केसर आदि किसी कारणवश न प्राप्त हो तो रोली से अथवा लाल चन्दन से त्रिकोण बनाया जाए। यह त्रिकोण ही भगवती त्रिपुरसुन्दरी का प्रतीक रूप है।

९. पञ्चोपचार पूजा के लिए शुद्ध जल, चन्दन, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अपेक्षित है। धूप में अगरबत्ती का उपयोग न किया जाए, इसमें अपवित्र वस्तुएँ और नकली सुगन्धि मिली रहती है। कश्मीरी धूप या अंजलि धूप का उपयोग उचित होगा। दीप (आरती) में कपूर अथवा घी-रूई की बत्ती उपयोग में लाई जा सकती है। नैवेद्य में कोई फल, सूखा मेवा या खीर होनी चाहिए। यदि किसी कारणवश ये न उपलब्ध हो सकें तो गुड़ का भोग लगाया जा सकता है।

१०. शुद्ध घी का एक दीपक श्रीयन्त्र या त्रिकोण के सामने रखा जाए। यह दीपज्योति तब तक जलती रहे जब तक आपका दैनिक मन्त्र जप समाप्त न हो जाए।

११. श्रीयंत्र या त्रिकोण △ में भगवती श्रीविद्या-त्रिपुरसुन्दरी का आवाहन प्रथम दिन करने के बाद नित्य आवाहन नहीं किया जाए।

१२. मंत्र-जप करने का सामान्य नियम यह है कि मंत्र में जितने बीजाक्षर हों उतनी सहस्त्र संख्या में मन्त्र का जप किया जाए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी क्षमता, सुविधा और आवश्यकता के अनुसार प्रतिदिन जप करने की संख्या निर्धारित कर लेनी चाहिए। जो साधक केवल प्रातःकाल ही जप करना चाहें उन्हें चाहिए कि वे सायंकाल भी धूप-दीप, नैवेद्य अर्पित कर एक माला मूलमंत्र का जप कर लें। जो केवल रात में करना चाहें, उन्हें प्रातःकाल भगवती का पूजन कर मूल मंत्र की एक माला जपनी चाहिए। जो दोनों समय जप करना चाहें उन्हें उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुसार जप, पूजन आदि करना चाहिए।

१३. पूजन करते समय श्रीं श्रियै नमः इस बीज मन्त्र को पढ़ते हुए पञ्चोपचार पूजन किया जा सकता है।

१४. दीप-ज्योति का पूजन नीचे लिखे मंत्र से किया जाए—

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्मताम्॥

विशेष—पञ्चोपचार की यह एक साधारण प्रक्रिया है। इसके अतिरिक्त साधक अपनी निष्ठा और भावना के अनुसार पूजन कर सकता है। वस्तुतः भावना ही मुख्य है। जो साधक ऊँची स्थिति को प्राप्त हों, उन्हें भगवती के पूजन में उक्त कर्मकाण्ड की भी आवश्यकता नहीं है। वे मानसी पूजा करके अपना मनोरथ सिद्ध कर सकते हैं।

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥

—जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसा ही सिद्धि प्राप्त होती है।

१५. किसी भी कार्य की सफलता के लिए मन की एकाग्रता अनिवार्य आवश्यकता है। साधना में तो इसकी अपेक्षा आद्योपान्त हुआ करती है। मन्त्र-साधना, मन्त्रानुष्ठान, पुरश्चरण प्रारम्भ करने से

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्व सावधान होकर समकायशिरोग्रीव होकर अपने सुनिश्चित एवं अभ्यस्त आसन से बैठकर मन को एकाग्र करने के लिए तीन बार ओ···म् का उच्चारण प्लुत स्वर (तीन मात्रा के उच्चारण काल तक) से करे। तत्पश्चात् तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु (मेरा मन शिव सङ्कल्पमय हो) पांच बार कहकर शान्त चित्त होकर बैठा रहे। किसी प्रकार का मन्त्र न जप कर दृष्टि को भागवती की प्रतिमा या यन्त्र या त्रिकोण में ५ मिनट तक स्थिर रख कर श्रीगुरवे नमः, परमगुरवे नमः का तीन बार उच्चारण करते हुए अपने दीक्षागुरु या इष्टदेवता का ध्यान करे।

१६. ध्यान के पश्चात् स्वस्ति नः स्वस्ति नः स्वस्ति नः कहते हुए कुश से जल अपने सिर पर छिड़के।

१७. फिर शन्न नो अभयं च नः कहते हुए तीन बार आचमन करे। आचमन के पश्चात् त्रिपुरसौन्दर्यै नमः, भुवनेश्वर्यै नमः, श्रीविद्यायै नमः कहते हुए भगवती को प्रणाम कर मन्त्र साधना का जो प्रयोजन हो तदनुसार संकल्प करे।

१८. यह आवश्यक नहीं है कि कुश-जल, अक्षत लेकर संस्कृत भाषा में ही संकल्प किया जाए। वस्तुतः साधना का सम्बन्ध मन और हृदय से रहता है अतः अपनी भाषा में मानसिक संकल्प करे या तान्त्रिक, पौराणिक विधि से करे—यह साधक की इच्छा और वृत्ति पर निर्भर है।

१९. संकल्प के बाद शापोद्धार, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, षडार्णवन्यास, तत्त्वन्यास, शक्ति तत्त्वन्यास, कामेश्वर्यादिन्यास, मूल-विद्यान्यास करना चाहिए।

२०. शापविमोचन के लिए पहले विनियोग करना चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीविद्याशापविमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठ नारदसाम-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदाधिपतिर्ब्रह्मऋषयः गायत्रीछन्दः सर्वैश्वर्यकारिणी सर्वमङ्गला राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी देवता ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् संकल्पित मन्त्रसिद्धर्थे श्रीनन्दिकेश्वर कामराजोपास्य षोडशकूटात्मिका श्रीविद्याप्राप्तये शापविमोचने विनियोगः। (पढ़कर कुश से जल पृथ्वी पर छोड़े)

२१. शापोद्धार मन्त्र

ॐ श्रीं श्रीविद्या स्वरूपिण्यै अक्षयफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ताभव।

ॐ कां कान्ति स्वरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।

ॐ ह्रीं श्रीं सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।

इन शापोद्धार मन्त्रों को पढ़ते हुए साधक सर्वाङ्ग शरीर में हस्ताभिमर्श (हथेला-अंगुलियों से शिर से पैर तक शरीरांगों का स्पर्श करना)। तदन्तर न्यास क्रिया की जाए।

२२. ऋष्यादिन्यासः

श्री भुवनेश्वर्यै नमः श्रीत्रिपुरसुन्दर्यैनमः श्री गणेशायनमः। अस्य श्री श्रीविद्या मन्त्रस्य श्रो सदाशिवाय ऋषये नमः शिरसि। (शिर का स्पर्श करे)।

जगती छन्दसे नमः मुखे। (मुख का स्पर्श करे)।

श्री त्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। (हृदय का स्पर्श करे)।

ह्रीं बीजाय नमः नाभौ। (नाभि का स्पर्श करे)।

श्रीं शक्तये नमः उपस्थे। (गुप्तांगों का स्पर्श करे)।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्लीं कीलकाय नमः पाण्दयोः (दोनों चरणों का स्पर्श करे)।

श्री नन्दिकेश्वरकामराजोपास्य षोडश कूटात्मिका श्रीविद्या-प्राप्तये धर्मार्थकाममोक्षार्थे न्यासे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे (शरीर के सभी अंगों का स्पर्श करे)। ऋष्यादिन्यास के बाद करन्यास किया जाए।

करन्यास

ॐ क ए ई ल ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों के अँगूठों को दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से संयुक्त करे)

ॐ ह स क ल ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों को दोनों हाथों के अँगूठों से स्पर्श कराए)

ॐ स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः (दोनों हाथों की मध्यमा अँगुलियों को दोनों हाथों के अँगूठों से मिलाए)

ॐ क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः (दोनों हाथों की अनामिका अँगुलियों के दोनों हाथों के अँगूठों से स्पर्श कराए)

ॐ ह स क ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (दोनों हाथों की कनिष्ठा अँगुलियों के दोनों हाथों के अँगूठों से स्पर्श कराए)

ॐ स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की हथेलियों को परस्पर घुमाते हुए मिलाए)

हृदयादिन्यास

ॐ क ए ई ल ह्रीं सर्वज्ञाये हृदयाय नमः (दाहने हाथ की अँगुलियों से हृदय को स्पर्श करे)

ॐ ह स क ल ह्रीं नेत्रयाये शिरसे स्वाहा (दहिने हाथ की अनामिका और अँगूठे को मिलाकर शिर को स्पर्श करे)

ॐ स क ल ह्रीं अनादिबोधाये शिखाये वषट् (दाहने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ क ए ई ल ह्रीं स्वतन्त्रायै कवचाय हुम् (दोनों हाथों को दाएँ बाएँ घुमाकर दाहने हाथ से बाईं भुजा को ओर बाएँ हाथ से दाहिनी भुजा को स्पर्श करे)

ॐ ह स क ल ह्रीं अतुलशक्तियुतायै नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहने हाथ की अनामिका और अँगूठा को मिलाकर दोनों भौहों के मध्य त्रिपुटी को स्पर्श करे)

ॐ स क ल ह्रीं अनन्तास्त्रयुतायै अस्त्राय फट् (दाहने हाथ की अँगुलियों से हृदय को स्पर्श कर हाथ को दाहने से शिर के पीछे घुमाकर दाहने हाथ की हथेली से बाएँ हाथ की हथेली का ताड़न करे)

ॐ सहस्रारायै हुं फट् (यह कहते हुए दाहने हाथ को शिर के चारों ओर घुमाकर बाएँ हाथ की हथेली को दाहने हाथ की हथेली में पटक दे)

यह षडङ्गन्यास हुआ । इसके बाद षडार्णवन्यासः तत्वन्यास करना चाहिए ।

षडार्णविन्यास : तत्वन्यास

ॐ ब्राह्म्यै आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे नमः (दाहने पैर के अँगूठे से लेकर नाभि पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

ॐ क्लीं वैष्णव्यै विद्यातत्त्वाधिपतये विष्णवे नमः (नाभि से लेकर कण्ठ पर्यन्त शरीराङ्गों का स्पर्श करे)

ॐ ह्सौं रुद्राण्यै शिवतत्वाधिपतये रुद्राय नमः (कण्ठ से शिर पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

शक्ति तत्वन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं आत्मतत्वात्मिकायै त्रिपुर सुन्दर्यै नमः (नाभि से लेकर चरणों तक स्पर्श करे)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं विद्यातत्त्वात्मिकायै श्री महात्रिपुर-सुन्दर्यै नमः (कण्ठ से लेकर नाभि पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

ॐ ह्रीं स क ल ह्रीं शिवतत्त्वात्मिकायै श्रीभुवनेश्वर्यै नमः (शिर के मूर्द्धा से लेकर कण्ठ पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

कामेश्वर्यादिन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ऐं क ए ई ल ह्रीं कामेश्वर्यैनमः (बाएँ पैर के अँगूठे से लेकर नाभिपर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह स क ह ल ह्रीं वज्रेश्वर्यै नमः (नाभि से लेकर कण्ठ पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः स क ल ह्रीं भगमालिन्यै नमः (कण्ठ से लेकर शिर पर्यन्त अंगों का स्पर्श करे)

मूलविद्यान्यास

ॐ क ए ई ल ह्रीं नमः मूलाधारे (मूलाधार—नाभि के नीचे के भाग को स्पर्श करे)

ॐ ह स क ल ह्रीं नमः हृदये (हृदय को स्पर्श करे)

ॐ स क ल ह्रीं नमः भ्रुवोर्मध्ये (दोनों भौंहों के मध्य त्रिपुटी को स्पर्श करे)

ॐ क ए ई ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे (ब्रह्मरन्ध्र—शिर के बीचों बीच के भाग को स्पर्श करे)

ॐ क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं नमः सर्वाङ्गे (सम्पूर्ण शरीर को स्पर्श करे)

२३. न्यास कर्म करने के बाद भगवती महात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या का ध्यान किया जाए।

ध्यान

आरक्ताङ्गीं त्रिनेत्रां मणिमयमुकुटां रत्नताटंक रम्याम्।
हस्ताम्भोजस्थ पाशाङ्कुश मदनधनुः सायकैर्विस्फुरन्तीम्॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपीनोत्तुङ्गवक्षोरुहसुतटलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीम्
ध्याये चाम्भोरुहस्थामरुणनिवसनामीश्वरीमाश्रयामि ॥

२४. ध्यान कर चुकने के बाद 'ऐं' बीज का उच्चारण करते हुए योनिमुद्रा प्रदर्शित कर जिस मन्त्र की साधना करनी हो उस मन्त्र का नियत संख्या में जप प्रारम्भ करना चाहिए।

२५. प्रतिदिन का नियत संख्याक जप समाप्त होने पर यह प्रार्थना करनी चाहिए—

गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

श्री जगदम्बार्पणमस्तु

२६ निर्धारित संख्या का जप समाप्त होने पर जितना जप किया गया हो उस संख्या का दशमांश हवन अभीष्ट मन्त्र से अन्तिम दिन किया जाए। मन्त्र सिद्ध होने के बाद प्रतिदिन एक माला जपते रहना चाहिए।

२७. हवन सामग्री

सफेद चन्दन का चूर्ण, लाल चन्दन का चूर्ण, जटामांसी, सुगन्धवाला, कर्पूरकचरी, तगर, केसर, कपूर, नागरमोथा, गूगल, घी, शक्कर, जौ, तिल। आम अथवा चन्दन या देवदारु की समिधा।

विशेष—कदाचित् कोई व्यक्ति संस्कृत के शब्दों के उच्चारण करने में अथवा, अङ्गन्यास, करन्यास आदि विधानों के करने में असमर्थ हो किन्तु त्रिपुरसुन्दरी साधना के अन्तर्गत अभीष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए प्रबल आकांक्षा रखता तो ऐसे व्यक्ति पोषण-संस्कार द्वारा मन्त्र को सिद्ध करके अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

पोषण-संस्कार—जिस मन्त्र को सिद्ध करना हो, उस मन्त्र के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रारम्भ में और अन्त में ऐं क्लीं सौं—इन तीन बीजाक्षरों का सम्पुट लगाकर जप किया जाना चाहिए।

जैसे रोग-दोष-दुःख-दरिद्रय-संकट निवारण के लिए मोक्षदा शक्ति के मन्त्र ॐ ह स ह्रीं रः मोक्षदायै नमः इस मन्त्र को सिद्ध करना है तो इसकी सिद्धि के लिए पोषण-संस्कार विधि इस प्रकार है—गाय का दूध और मधु एक में मिलाकर दाहने हाथ की हथेली में बाएँ हाथ से अनार की लेखनी से उक्त मन्त्र को लिख लिया जाए इसके बाद उक्त मूल मन्त्र के आदि और अन्त में ऐं क्लीं सौं बीजाक्षरों को लगाकर जप करे। जितनी एकाग्रता और प्रबल भावना से जप किया जाए उतनी जल्दी मन्त्र सिद्ध होता है। ६ दिन या २१ दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाना अनिवार्य है। इस मन्त्र की सम्पूर्ण जप संख्या ३१ हजार है। इस विधि से किसी भी मन्त्र को पोषण संस्कार द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

●

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साध्य-मन्त्र

आयु-आरोग्य-सुख-सौभाग्यवर्द्धक

१. मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवे हरिहर विरञ्च्याद्याराधिते शिवशक्तिस्वरूपे स्वाहा ।

जप संख्या—एक लाख पच्चीस हजार ।

संघर्ष-विपत्ति-दुर्गति-अप्रतिष्ठा नाशक, श्री-कीर्ति विजयप्रद

२. मन्त्र

ॐ श्रीं ऐं श्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्री ह्रीं श्रीं दुर्गां दुर्गतारिणीम् पद्मानिलनीं मातरं प्रपद्ये स्वाहा ।

जपसंख्या—एक लाख ।

दुःख-दारिद्रय-चिन्ता-शोकनाशक, धन-सम्पदा प्रदाता

३. मन्त्र

ॐ ॐ ॐ ऐं ऐं ऐं क्लीं ह्स्से काका ल ल ल ह्रीं ह्रीं ह्रीं चिन्तामणि गुणिनिके स्वाहा ।

जपसंखया—सत्रह हजार ।

पाप-शाप-ताप-रोग-दोष, ग्रहदोष, दौर्भाग्यजनितारिष्ट निवारक

४. मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षेत्रज्ञे ग्लौं नित्ये गां स्वाहा ।

जपसंख्या—सवालक्ष ।

सौभाग्यवर्द्धक

५. मन्त्र

ॐ लं ईं ह्रीं क्लीं श्रीं संक्षोभणे स्वाहा ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसंख्या—सवा लाख।

सम्मोहन-आकर्षण-वशीकरण

६. मन्त्र

ॐ क्लीं ह्लीं सहकल हसकल क्षूं सहकल हसकल कमले विमले क्लीं सम्मोहने स्वाहा।

विशेष—यदि किसी पर वशीकरण या आकर्षण करना हो तो सम्मोहने के स्थान पर वशीकरणे अथवा आकर्षणे जोड़ देना चाहिए।

जपसंख्या—सवा लाख।

सर्ववशीकरणमन्त्र-साधना

७. मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषि भयं ते समुपस्थितं भयं मे भञ्ज श्रीमति ध्रौं यवरेयुं ह्सौः कमले क्लीं स्वाहा।

जपसंख्या—सवालक्ष।

परचक्रनिवारणार्थ-शत्रुबाधानाशनार्थ-शत्रुपराजयार्थ

८. मन्त्र

ॐ ज्वालामालिनी जुं हुं ह्सौं ज्वालामालिनी गं ठं हुं हुं भ्रां भ्रां रः सौं अं आं ॐ क्लीं ह्सौं श्रीं ह्लीं क्षुं ॐ क्लीं रः तं थं दं धं नं हूं हूं सः स्वाहा।

जपसंख्या—सवालक्ष।

विद्या-विनय-विवेक बुद्धि प्राप्त्यर्थमन्त्र-साधना

९. मन्त्र

ॐ ऐं त्रिपुरां देवीं विद्महे क्लीं कामेश्वरीं धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

जपसंख्या—नित्य एक सहस्र, ९० दिन पर्यन्त।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुल-कुंडलिनी जागरणार्थमन्त्रसाधना
१०. प्राणायाम-प्रक्रिया

विधि—योगारूढ़ योगिगम्यस्वरूपा, महापद्मअटवीं में विहार करती हुई सहस्रदल चक्र में चिदात्मा रूप से स्थित भगवती त्रिपुरसुन्दरी—श्री विद्या का पहले ध्यान करना चाहिए।

ध्यान—

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं।
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ॥
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं।
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसि ॥

विशेष—

प्राणायाम के द्वारा कुलकुण्डलिनी जाग्रत करने के लिए साधक को पहले षट्चक्रों का बोध प्राप्त करना आवश्यक है। षट्चक्रों की स्थिति इस प्रकार है—

१—मूलाधार चक्र—गुदास्थल पर चतुर्वर्ण पृथिवी चक्र है। इसमें पृथिवी तत्त्व विद्यमान रहता है।

२—स्वाधिष्ठान चक्र—मूलाधार चक्र के ऊपर मेढ्रमूल में षड्दल धूम्रवर्णी स्वाधिष्ठान चक्र है। इसमें अग्नितत्व का वास रहता है।

३—स्वाधिष्ठान चक्र के ऊपर नाभि में रक्तवर्ण, द्वादशदल श्वेतवर्ण मणिपूर चक्र है। इसमें जलतत्त्व विद्यमान रहता है।

४—अनाहत चक्र—मणिपूर चक्र के ऊपर हृदय स्थल में रक्त-वर्ण, द्वादशदल, तेजोरूप अनाहत चक्र है। इसमें वायुतत्त्व का वास है।

५—विशुद्धि चक्र—अनाहत चक्र के ऊपर कण्ठदेश में नभोमय, शुद्धस्फटिक सदृश, षोड़शदल विशुद्धिचक्र है। इसमें आकाश तत्त्व रहता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६—अग्निचक्र—(आज्ञाचक्र) विशुद्धि चक्र के ऊपर दोनों भौंहों के बीच में ज्ञानसंज्ञक द्विदल, पंचवर्ण पंचभूतात्मक अग्निचक्र है। इसमें सकलव्यापक चान्द्रतत्त्व रहता है।

योगशास्त्र और तन्त्रशास्त्र में इन षट्चक्रों को कुलपथ भी कहा जाता है। मूलाधार चक्र में सोई हुई कुलकुण्डलिनी जब जाग्रत होती है तो इन्हीं कुलपथों को एक के बाद एक को भेदती हुई सहस्रार चक्र में पहुँचकर विहार करती है।

जब कुलकुण्डलिनी प्रथम मूलाधार चक्र का भेदन करती है तो साधक के शरीर के समस्त रोगों का क्षय हो जाता है। जब वह द्वितीय स्वाधिष्ठान चक्र का भेदन करती है तो साधक कामवासनाओं पर विजय पा लेता है। तीसरे मणिपूरक चक्र का भेदन होने पर साधक की जड़-बुद्धि का क्षय हो जाता है, रजोगुण से वह निवृत्त होकर ज्ञान प्राप्त करता है। चौथे अनाहत चक्र का भेदन होने पर साधक में कान्तितेजो-बल और ज्ञान का उदय होता है। उसकी जठराग्नि उद्दीप्त होती और संचरणशक्ति प्राप्त होती है।

पांचवें विशुद्धि चक्र का भेदन होने पर साधक की वाणी में मधुरता आ जाती है। वाणी में मार्दव एवं गाम्भीर्य उत्पन्न हो जाता है। उसके मूत्र पुरीष (पाखाना पेशाब) का क्षय हो जाता है और श्वासोच्छ्वास में सुगन्धि भर जाती है। छठे ज्ञान चक्र का भेद न होने पर साधक को तीनों लोकों के विषयों का ज्ञान हो जाता है और उसे ज्ञानस्वरूप ब्रह्म का आभास होने लगता है।

इस प्रकार साधक जब षटचक्रों का भेदन कर कुलकुण्डलिनी जाग्रत कर लेता है तब वह ब्रह्मरूपिणी भगवती तिपुरसुन्दरी के पादपद्मों में रम जाता है।

कुलकुंडलिनी जाग्रत करने की प्रक्रिया

प्रारम्भ में आत्मरक्षा का उपाय करना चाहिए—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ ऐं त्रि क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरि आत्मानंरक्ष रक्ष स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़ते हुए दाहने हाथ को तीन बार शरीर के चारों ओर दाहने से बाएं घुमाकर तीन बार मन्त्र का उच्चारण कर तीन बार हृदय का स्पर्श करे । फिर तीन बार ताली बजाकर दाहने हाथ को तीन बार घुमाकर ऐं क्लीं सौं त्रिपुरसुन्दरि ॐ अस्त्राय फट् कहकर दिग्बन्ध करना चाहिए । फिर तीन बार आच्छोटिक मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए । तत्पश्चात् आपाद मस्तक तक अपनी व्यापकता की भावना करके मूलाधार चक्र से पवन को ऊर्ध्वमुखी करने का प्रयास करना चाहिए । उस पवन को ब्रह्मरन्ध्र तक ले जाने का प्रयास करना चाहिए । ब्रह्मरन्ध्र तक पवन को पहुँचा देने पर वही शिव-शक्ति का मिलन (योग) होता है ।

पवन को ऊर्ध्वमुखी करने की विधि

सुषुम्णा से वायु को खींचकर उसे वाग्भव बीज (ऐं) से संयुक्त करे । जितनी मात्रा में वायु को सुषुम्ना द्वारा खींचे, उससे दुगुनी मात्रा में पिंगला से बाहर निकाल दे ।

तत्पश्चात् कामराज बीज (क्लीं) से इडा नाडी के वायु का पाचन कर द्विगुण अष्ट मात्रा के अन्तर से वायु से परिपूरित कर 'ह्सौः' इस शिव-बीज से चौबीस मात्रात्मक कुम्भक करे ।

इस प्रकार प्राणायाम करने के बाद साधक वाग्भव बीज (ऐं) का तीन बार उच्चारण करके नीचे लिखे हुए त्रिपुर-सुन्दरी के स्वरूप का ध्यान करते हुए प्रार्थना करे ।

प्रार्थना

तरुण शकलमिन्दोर्विभ्रती शुभ्रकान्तिः ।
कुचभरनमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे ।।
निजकरकमलोद्यल्लेखिनी पुस्तकश्रीः ।
सकलविभवसिद्धयै पातुवाग्देवता नः ।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके बाद नाभिस्थल पर अष्टवलय से स्थित शिवा (कुण्डलिनी) का ध्यान करे। ध्यानस्थ साधक कुछ ही देर में समाधिस्थ हो जाता है।

कुलकुण्डलिनी का ध्यान

फणिनीमिव संलीनां विसतन्तु तनीयसीं।
कृत्वाष्टवलयां ध्यायेन्नाभौ कुण्डलिनीं शिवाम् ॥

विशेष

परमहंस श्रीरामकृष्णदेव कुण्डलिनी जागरण का एक गीत स्वामी विवेकानन्द (नरेन्द्र) से सुना करते थे। गीत सुनते-सुनते वह समाधिस्थ हो जाया करते थे। इस गीत को ध्वनि-लय के साथ गाते हुए स्वामी विवेकानन्द की भी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई थी। वह अमोघ गीत इस प्रकार है—

कुण्डलिनी जागरण-गीत

जागो माँ कुलकुण्डलिनी।

(तुमि) ब्रह्मानन्द स्वरूपिणी, (तुमि नित्यानन्द स्वरूपिणी)
प्रसुप्त भुजगाकारा आधार पद्मवासिनी,
त्रिकोणे ज्वले कृशानु तापिता होइलो तनु,
मूलाधार त्यज शिवे स्वयम्भू शिववेष्टिनी,
गच्छ सुषुम्नार पथि स्वाधिष्ठाने होओ उदित,
मणिपूर अनाहत विशुद्धाज्ञा संचारिणी,
शिरसि सहस्रदले परमशिवे ते मिले,
क्रीडा करो कुतूहले सच्चिदानन्ददायिनी।

—स्वामी विवेकानन्द

११. जगन्मोहन मन्त्र

ॐ ऐं वं क्लीं हृदयेश्वरि कल्प-कल्प जगन्मोहय मोहय ऐं यं क्लीं स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसंख्या – सवालक्ष।

१२. सम्मोहन-वशीकरण मन्त्र

ॐ हर त्रिपुर हर भवानीबाला राजा-प्रजा मोहिनी सर्वशत्रु-विध्वंसिनी मम कार्यं साधय साधय भुवनेश्वरी स्वाहा।

जप संख्या—२१ हजार।

१३. स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ ऐं भगभगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगगुह्ये भगयोगिनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपिणि सर्वाणि भगानि मे इहानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्नं क्लेदय गलेदय द्रावय द्रावय आमोघं भगविद्ये क्षुभक्षोभे क्षुभितसर्वसत्व भगेश्वरि ऐं ब्लूं स्रों ब्लूं ह्लूँ ब्लूं ह्लूँ क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय ह्रीं श्रीं नित्यै भगमालिन्यै स्वाहा॥

जपसंख्या—५०००।

१४. वाग्वादिनी सावित्री मंत्र

ॐ ऐं त्रिपुरे देवि विद्महे ऐं कामेश्वरि धीमहि ऐं तन्नो देवी प्रचोदयात्।

जपसंख्या—५१ दिन तक ११०० प्रतिदिन।

विशेष—यह मंत्र भगवती सरस्वती की गायत्री है। इसकी सिद्धि से विद्या, बुद्धि का संवर्द्धन होता है। इसकी उपासना से सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की कृपा प्राप्त होती है।

इस मन्त्र से सम्मोहन क्रिया भी की जाती है। जड़ बुद्धि व्यक्ति भी मेधवी, सभा, विद्वद् गोष्ठी में अपनी वाणी और वैदुष्य का प्रभाव डालता है।

१५. आशु कवित्वशक्तिकारक मन्त्र

ॐ ब्लूं ह्लीं ब्जीं स्रुं प्रीं स्लीं स्युं क्ष्मुं वशिन्याद्यष्टदेवताभ्यो नमः स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसंख्या—८१ दिन तक ५ माला प्रतिदिन।

बिशेष—जप प्रारम्भ करने से पहले नीचे लिखे हुए न्यास अवश्य करने चाहिए।

न्यास

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः शिरसि। (शिर का स्पर्श करे)

ॐ कं खं गं घं ङं ह्लीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमः ललाटे। (ललाट का स्पर्श करे)

ॐ च छं जं झं ञं ब्जीं मोहिनी वाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये (दोनों भौंहों के मध्य भाग को स्पर्श करे)

ॐ टं ठं डं ढं णं स्रूं विमला वाग्देवतायै नमः कण्ठे। (कण्ठ का स्पर्श करे)

ॐ तं थं दं धं नं प्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः हृदि। (हृदय का स्पर्श करे)

ॐ पं फं बं भं मं स्त्रीं जयिनी वाग्देवतायै नमः नाभिमण्डले। (नाभि का स्पर्श करे)

ॐ यं रं लं वं स्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः नेत्रयोः। (दोनों नेत्रों का स्पर्श करे)

ॐ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्मूं कौलिनी वाग्देवतायै नमः मूर्ध्नि। (शिर में मूर्द्धा स्थान का स्पर्श करे)

१६. आकर्षणी विद्या

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः कामेश्वर्यै सुभगरूपिण्यै कटाक्ष-प्रभया सर्वं कम्पितं कुर्वन्त्यै नमः स्वाहा।

विशेष—यह आकर्षणी विद्या विविध सोलह प्रकार के प्रयोजनों की सिद्धि के लिए सोलह प्रकार की ओर है। इस विद्या के सभी सत्रह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंत्रों में से प्रत्येक की जपसंख्या सवालक्ष निर्धारित है। सोलह प्रकार के विविध प्रयोजनों की सिद्धि के लिए सोलह मंत्र इस प्रकार हैं—

१. काम के आकर्षण के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिण्यै नित्य कलादेव्यै स्वाहा।

२. बुद्धि का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं बुद्ध्याकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

३. अहङ्कार का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्री इं अहङ्कारकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

४. शब्द का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शब्दाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

५. स्पर्शाकर्षण के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं स्पर्शाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

६. रूप का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रूपाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

७. रस का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रसाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

८. गन्ध का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं गन्धाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

९. चित्त का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं चित्ताकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

१०. धैर्य का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं धैर्याकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

११. स्मृति का आकर्षण करने के लिए
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं स्मृत्याकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२. नाम का आकर्षण करने के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नामाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा ।

१३. बीजाकर्षण के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं बीजाकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा ।

१४. आत्माकर्षण के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं आत्माकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा ।

१५. अमृताकर्षण के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा ।

१६. शरीराकर्षण के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः शरीराकर्षिण्यै नित्यकलादेव्यै स्वाहा ।

१७. वनिता (स्त्री) क्षोभकरी विद्या

मन्त्र

ॐ क्लीं ह्सौं: वनिताः संक्षोभं नय नय कामेश्वर्यै नमः स्वाहा ।

जपसंख्या—२१ दिन तक ११०० प्रतिदिन ।

विशेष—इस विद्या के मन्त्र का जप करने से पूर्व जो ध्यान किया जाता है । वह यह है—

नमः सुभगरूपिण्यै श्रीमत्या सकलं जगत् ।
कटाक्षप्रभयाऽऽकृष्टं कुर्वन्त्यै कम्पितं तथा ॥

१८. मृतसञ्जीवनी विद्या

विनियोग

ॐ अस्य श्रीमृतसञ्जीवनी विद्या मन्त्रस्य भृगुऋषिः । विराट् छन्दः । चिदानन्दलहरी देवता । ह्रीं सर्वव्यापिनी प्राणेश्वरी बीजं । क्लीं कीलकम् । ह स क ल ह्रीं शक्तिः मृतसञ्जीवने विनियोगः ।

मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ह्सौः सर्वतत्त्वव्यापिनी जीव जीव प्राणप्राणे मृतामृते

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क ए ई ळ ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं हुं हुं मृत विद्रावणे प्राणतत्त्वे तत्त्वाति-तत्त्वे सर्वेश्वरि वेदगुह्ये ,ह स क ह ल गर्भे सावित्रि ऐं वाचम्भरि कालि क्लीं जीवय जीवय स्वाहा ।

विशेष—यह वही मृतसञ्जीवनी विद्या है, जिसे भार्गव शुक्राचार्य ने 'कच' को दिया था और जिसके प्रयोग से मृत प्राणी जीवित हो जाता था। मातृका विवरण (हस्तलिखित) तंत्रशास्त्र में इसकी सिद्धि का जो विशद विधान बताया गया है वह वर्तमान युग में असम्भव-सा प्रतीत होता है। दीर्घकाल तक की जाने वाली इस विद्या की साधना के लिए जो जप किया जाता है, वह प्रत्येक वर्ण की एक लाख संख्या प्रतिदिन है। मेरी जानकारी में जिन महापुरुषों ने मृतसञ्जीवनी विद्या की सिद्धि प्राप्त की है, उनमें एक स्वामी विभु आश्रम हैं, जिन्होंने १५ वर्ष पहले गोपीगंज (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) तथा कानपुर (उत्तर प्रदेश) के सरसैया घाट पर सैकड़ों आदमियों की उपस्थिति में नरकंकाल को जीवित-जाग्रत किया था। स्वामीजी प्रायः सिद्धाश्रम (मध्य हिमालय) में रहते हैं। उनकी जन्मभूमि रायबरेली (उ० प्र०) है।

यह साधना अत्यन्त दुरूह है अतः प्राचीन तंत्रशास्त्रों में इसकी जो साधना विधि मुझे प्राप्त हुई है वह सर्वसाधारण के लिए असम्भव जानकर यहाँ नहीं लिखी गई है। मृतसञ्जीवनी विद्या का मंत्र और उसकी साधना विधि अब भी विद्यमान है—यह जानना भी लाभप्रद है।

उक्त मृतसञ्जीवनी विद्या का एक अनुभवसिद्ध सफल प्रयोग प्रायः सभी के लिए साध्य और करणीय है। इससे असाध्य, कष्टसाध्य मानसिक शारीरिक बीमारियाँ, अल्पायु योग, अपमृत्यु योग का निवारण २१ दिन तक जलाभिसेचन तथा प्रतिदिन १०८ बार जप करने मात्र से हो जाता है।

१९. रोग-दोष-क्लेशनिवारण मन्त्र

ॐ ह स ह्रीं रः मोक्षदायै नमः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसंख्या—३१ हजार।

२०. श्री अन्नपूर्णा मन्त्र

१. ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं लं अन्नपूर्णायै भवान्यै स्वाहा।

२. ॐ ह्सौः पं फं वं भं मं रः भवानि स्वाहा।

विशेष

इन दोनों मन्त्रों का ध्यान एक ही है। नित्य अन्नपूर्णा का ध्यान करके १०८ बार किसी एक मंत्र का जप नियमित रूप से करते रहने से अन्नपूर्णा की सिद्धि प्राप्त होती है। इन दोनों मंत्रों का ध्यान और जप उषाकाल में करना चाहिए।

ध्यान

रुद्रताण्डवविलोकन लोलां
भद्रवक्त्रनयनां भवकान्ताम्।
अन्नदान निरतां जननीं
तां संस्मरेदुषसि चित्रदुकूलाम्॥

२१. दाम्पत्य सुखकारक मन्त्र

ॐ हुं जुं सः अर्द्धनारीश्वररूपे ह्रीं स्वाहा।

जप संख्या—१०८ नित्य ४१ दिन तक।

विशेष

यह मन्त्र उन स्त्रियों के लिए लाभदायक है, जो पतियों से उपेक्षित एवं अपमानित हुआ करती हैं। अथवा पति-पत्नी में परस्पर कलह, तनाव और ग्लानि, घृणा का भाव व्याप्त रहता है। भगवती के किसी भी रूप पर आस्था रखकर इस मन्त्र को यथाशक्ति नित्य जपने से पत्नी पति की प्राणप्रिया बनती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२. महाकाली मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्सौः ऐं ह्सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं जूं क्लीं सं लं श्रीं रः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ॐ कं खं गं घं ङं ॐ चं छं जं झं ञं ॐ टं ठं डं ढं णं ॐ तं थं दं धं नं ॐ पं फं बं भं मं ॐ यं रं लं वं ॐ शं षं सं हं ळं क्षं स्वाहा।

विशेष

यह उग्र मन्त्र है। इस मन्त्र की साधना घर में नहीं करनी चाहिए। शीघ्र सिद्धि प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम शक्ति पीठ विन्ध्याचल (उत्तर प्रदेश) के अष्टभुजा पर्वत पर त्रिकोण में स्थित काली खोह है। तीन महीने के अन्दर वहाँ साधकों ने इस मंत्र की सिद्धि प्राप्त की है। महाकाली की सन्निधि में आधी रात में रक्तवस्त्र धारण कर यह साधना की जाती है। दिन में महाकाली की पंचोपचार पूजा करके यथासंख्य मंत्र का जप किया जाता है। मिताहार, फलाहार, सावधानी, सजगता, निर्भीकता, पवित्रता और महाकाली के प्रति अटूट श्रद्धा सद्यः सिद्धि प्रदान करती है। किसी प्रकार के कर्मकाण्ड, हवन आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

महाकाली का यह मंत्र सार्वभौम है। प्रत्येक प्रयोजन में यह प्रयुक्त होता है। इससे मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट्कर्म प्रयोग भी किए जाते हैं। यह मंत्र मङ्गलदायक, सुखदायक भी है।

जपसंख्या—११०० प्रतिदिन ९० दिन तक।

२३. मृत्युहरी विद्या

मन्त्र

ॐ यं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः अमृतम्भरि स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष

यह मन्त्र असाध्य रोगों को दूर करता है। मृत्यु के मुख में जाने से बचाता है। जब डाक्टर, वैद्य, हकीम निराश हो जाएँ, तब इस मंत्र से कुश-जल द्वारा रोगी का अभिसेचन कर इसी से अभिमंत्रित जल पिलाने से रोगी स्वस्थ हो जाता है। इस मंत्र को ३१००० जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। यह सिद्ध मन्त्र कालकूट विष को दूर करने में पूर्ण समर्थ सिद्ध हुआ है।

२४. दैन्यभेदिनी विद्या

मन्त्र

ॐ श्रीं ऐं यं रं लं वं दुर्गतारिण्यै दैन्यभेदिन्यै स्वाहा।

विशेष

जब कोई आदमी निरन्तर निर्धनता और अभाव के कारण टूट रहा हो। कार्य-व्यापार में असफल हो रहा हो तो इस मन्त्र को १०८ बार नित्य जप करते रहने से दरिद्रता, दीनता दूर हो जाती है।

२५. चतुःषष्ठियोगिनी मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्सौः चतुःषष्ठियोगिनीभ्यो नमः।

विशेष

प्रतिदिन १०८ बार जप करने से यह मन्त्र सुख, आरोग्य, ऐश्वर्य, समृद्धि प्रदान करता है। इसका प्रयोग वशीकरण में भी किया जाता है। इस मंत्र का जप करने से पूर्व योगिनी का ध्यान करना चाहिए।

१. शान्ति कर्म में कुन्दइन्दु के समान धवल वर्ण की योगिनी का ध्यान किया जाए, जिसके दोनों हाथों में पाश और अंकुश हैं और जो मुस्कराती हुई विहार करती है।

२. वशीकरण कर्म में पाश और अंकुश धारण किए हुए अरुणोदय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काल के लाल विम्ब वर्ण वाली प्रसन्नवदना योगिनी का ध्यान करना चाहिए ।

३. किसी उच्च राज्याधिकारी अथवा उच्च पदस्थ व्यक्ति को सम्मोहित करने के प्रयोग में पाश-अंकुश धारिणी हँसती-मुस्कराती विहार करती हुई पीतवर्णा योगिनी का ध्यान करना चाहिए ।

४. किसी का उच्चाटन करना हो, ग्रह-बन्धन (कैद) से मुक्त कराना हो तो पाशाङ्कुश धारिणी अलसी के पुष्प के समान नीलवर्णा योगिनी का ध्यान करना चाहिए ।

२६. हृल्लेखा रहस्यविद्या

हृल्लेखाविद्या एक रहस्य विद्या है। इसकी साधना जागतिक, आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन कर अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न करती है। इस रहस्यविद्या की 'उपासना 'अगस्त्य' मुनि की पत्नी 'लोपामुद्रा' ने की थी। सौन्दर्यलहरी में भगवती की स्तुति के रूप में श्री शङ्कर भगवत्पाद ने कूटाक्षरों द्वारा हृल्लेखा विद्या का जो परिचय बड़े कौशल से प्रस्तुत किया है वह इस प्रकार है—

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकरणः,
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता,
भजन्ते वर्णास्ते जननि तव नामावयवताम् ॥

इसमें शिव, शक्ति, काम, क्षिति, रवि, शीतकरण, स्मर, हंस, शक्र, परा, मार और हरि—ये कूट अक्षर हैं। इन कूटाक्षरों के अर्थ इस प्रकार उद्घाटित होते हैं –

शिव=ह। शक्ति=श। काम=क। क्षिति=ल। रवि=ह। शीतकरण (चन्द्र)=स। स्मर=क। हंस=ल। शक्र=स। परा=व। मार=क। हरि=ल। ये कूटाक्षर बीजाक्षर हैं। इन बीजों के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवसान (अन्त) में ह्रीं क्लीं ह्रीं जोड़ने से तीन प्रकार की हृल्लेखाओं के पन्द्रह अक्षरी तीन मन्त्र बनते हैं।

इस प्रकार की हृल्लेखा विद्या के स्वरूप का समर्थन 'प्रपञ्चसार' नामक तन्त्र ग्रन्थ में मिलता है—

इति संलीनसूर्यांशे ग्रहषट्के तु षड्गुणाः।
हृल्लेखेयं तथा मन्त्रः स्मर्यतो स्मृतिकोविदैः॥

हृल्लेखा विद्या का परम रहस्य यह है कि इस त्रिकूटात्मिका विद्या से वेदत्रयी का आविर्भाव हुआ है। उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार तीन प्रकार की हृल्लेखा महाविद्या के तीन मन्त्रों का उद्धार इस प्रकार होता है—

१. प्रथमा हृल्लेखा—ॐ ह श क ल ह्रीं स्वाहा।

२. द्वितीया हृल्लेखा—ॐ ह स क ह क्लीं स्वाहा।

३. तृतीया हृल्लेखा—ॐ ल व क ल ह्रीं स्वाहा।

पहली हृल्लेखा का ध्यान मूलाधार चक्र में किया जाता है।

दूसरी हृल्लेखा का ध्यान नाभि से हृदय पर्यन्त किया जाता है।

तीसरी हृल्लेखा का ध्यान भृकुटी से ब्रह्मरन्ध्र तक किया जाता है।

हृल्लेखा महाविद्या की साधना पूर्ण रूप से क्रियायोग पर निर्भर है। यह सर्वजन बोधगम्य न होने से इस गुप्त रहस्य विद्या की साधना पद्धति लिखना उचित नहीं है। केवल इस विद्या का स्वरूपबोध ही पर्याप्त है। आगमसार में हृल्लेखा विद्या को वर्णात्मिका (मन्त्रमयी) त्रिपुरसुन्दरी का रहस्यरूप बताया गया है। जैमिनीय सूत्र भी 'वर्णात्मिका वर्णविभवानित्या' कहा है। सभी आगम शास्त्र हृल्लेखा विद्या को 'मन्त्रराज' मानते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२७. भोगदाविद्या

२६वें हृल्लेखा विद्या मंत्रराज से संबद्ध भोगदा विद्या है। 'सौन्दर्यलहरी' में श्री शङ्कर भगवत्पाद ने भगवती की स्तुति के रूप में भोगदाविद्या के बीजों को कूटाक्षरों द्वारा इस प्रकार निबद्ध किया है—

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनौ
निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः॥

पूर्वोक्त तीन प्रकार की हृल्लेखा विद्या में स्मरं (क्लीं), योनिं (ऐं) लक्ष्मीं (श्रीं) इन तीन बीजों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय हृल्लेखा मन्त्रों के अन्त मे जोड़कर भोगदाविद्या के तीन मन्त्र बनते हैं। यथा—

१. ॐ ह श क ल क्लीं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।
२. ॐ ह स क ल ऐं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।
३. ल व क ल श्रीं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।

श्री शङ्कर भगवत्पाद ने इस विद्या की साधना-पद्धति बतलाते हुए कहा है कि जो लोग अमर्यादित महाभोग (स्त्री, सन्तान, ऐश्वर्य, वाहन आदि उच्च वैभव) के रसिक हैं, उन्हें चाहिए कि वे कृष्णा या कपिला गाय के घी की धारा से शिवाग्नि में इन मंत्रों से १०८ आहुतियां नित्य दिया करें। इस प्रकार आज्याहुति देने से उपासक अतुल वैभवशाली बनता है।

२८. अमृतार्णववासिनी तुरीया विद्या

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः त्रिपुरे अमृतार्णववासिनि शिवे शिवानन्द रूपिण्यै ते नमः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष

यह भगवती त्रिपुरसुन्दरी और शिव की एकरूपता का बोधक मन्त्र है। भगवती के विराट् रूप की उपासना इस मन्त्र से की जाती है। इसमें साधना और उपासना दोनों का समन्वय है। इसकी साधना जरा-मरण-भय से रहित हो अमृतत्व प्राप्त करने की कामना रखकर योगीजन करते हैं। सामान्यजन के लिए इसकी साधना कठिन है, किंतु इस मन्त्र की उपासना गृहस्थ, विरक्त सभी के लिए उपादेय है। नित्य भगवती का पूजन कर १०८ बार मन्त्र का जप करते रहने से उपासक भुक्ति और मुक्ति (बन्धनों से छुटकारा) दोनों प्राप्त करता है। जीवन सुखी, सम्पन्न और सन्तुष्ट बनता है।

२९. तत्त्वमसि महावाक्यार्थ साधना

यह साधना क्रियायोग से सम्बन्धित है। योगीजन षट्चक्रों में भगवती का ध्यान इस प्रकार करते हैं—

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि,
त्वमापः भूमिस्त्वयि परिणतायां नहि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा,
चिदानन्दाकारं शिवमहिषि भावेन विभृषे ॥

भगवती त्रिपुरसुन्दरी का यह योग-ध्यान है। इस ध्यान के साथ ही साधक यह भाव हृदय में रखता है कि 'जगत् में मनुष्य के शरीररूप में महामाया राजराजेश्वरी (शिवमहिषी) अनेक तत्त्वों के रूप में निवास करती हैं। यह भावना रखते हुए योगी धारणा करता है—कि हे माँ, तुम्हीं भूततन्मात्रा ज्ञापक मन हो, तुम्हीं व्योम (आकाश) हो, तुम्हीं मरुत् (वायु) हो, तुम्हीं मरुत्सारथि (अग्नि) हो, तुम्हीं अप: (जल) हो, तुम्हीं भूमि (पृथ्वी) हो। इन तत्त्वों के रूप में मनुष्य के शरीर में विश्ववपुषा मातृका अक्षरों से अपने को परिणत कर निवास करती हो,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुमसे अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सब कुछ तुम्हीं हो (सर्वमेव तत्त्व-मसि)'।

इस साधना के मन्त्र का उद्धार इस प्रकार होता है—

मनः = स कार। व्योम ह कार। मरुत् यं। मरुत्सारथि रं। आपः लं। भूमिः वकार।

साधना का मंत्र यह बना—ॐ स ह य र ल व ह्रीं

सर्वमातृका विश्वात्मिके स्वाहा।

यह साधना षट्चक्रों द्वारा की जाती है। मूलाधार चक्र से लेकर आज्ञा चक्र तक मातृका अक्षरों से भावना और ध्यान किया जाता है।

३०. चित् चैतन्य क्रियायोग साधना

यह साधना चिन्मयी भगवती त्रिपुरसुन्दरी तथा चिन्मय रूप भगवान् शिव की पूजा के रूप में आज्ञाचक्र द्वारा की जाती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं हं ह्रीं चित्चैतन्याय नमः।

३१. सर्वात्मतत्त्व क्रियायोग साधना

यह साधना विशुद्धि चक्र में शिव-शिवा का ध्यान करते हुए मातृका वर्णों से की जाती है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं
अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं
नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं।

३२. त्रिपुरसुन्दरी पादुका योगसाधना

भगवती त्रिपुरसुन्दरी की पादुका-साधना अनाहत चक्र से की जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्र

ॐ लं लं ह्सीं ह्स्लोः ह्सौं त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यो नमः।
यह साधना भी योगीजनों की है।

३३. मेघवती विद्या-साधना

दुर्भिक्ष, अकाल और अनावृष्टि का निवारण कर वृष्टि करने वाली अन्न-धान्य उत्पन्न करने वाली इस विद्या की साधना योगीजन ही कर सकते हैं। सामान्य साधकों के लिये यह सुकर नहीं है। यह साधना मणिपूर चक्र से की जाती है।

मन्त्र

ॐ लं हः ह्रीं रः ऐं हुं सोः रः
मेघवती विद्यायै स्वाहा।

३४. शत्रु-सैन्य भस्मीकरण मन्त्र-साधना

मन्त्राभिचार तंत्रशास्त्र में इस मंत्र की सिद्धि का विशद विधान है। किन्तु विनियोगपूर्वक मंत्र का जप करने से शत्रु सेना भस्म तो नहीं होती है शत्रु या शत्रुसमूह पराजित अवश्य होता है। यहां पर विनियोगपूर्वक जप द्वारा साधना ही उचित हैं, अभिचार तन्त्र में बताई गई विधि सर्वसाधारण के लिये संभव नहीं है।

विनियोग

ॐ अस्य रिपुसैन्यक्षयङ्करो विद्यायाः दुर्वासाऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। ज्वालाग्निर्देवता। हुं बीजं। सर्वतोमुखं कीलकं। ह्सौः शक्तिः। रिपूणां पराजयार्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदालोके लोकान्दहति महति क्रोधकलिले
दयार्द्रा दृष्टिस्ते शिशिरमुपचारं रचयति ॥

मन्त्र

ॐ ह्लं ह्सीं ह्ल्लीं ह्सौं ऐं ह्रां ह्रौं ब्लूं सः सर्वाचिषापूर्ण उत्तिष्ठ पुरुष धूम्रव्यापिन् सप्तजिह्व ह्रौं धनुर्धर महाज्वाल ज्वालय हुं फट् ।

इस मन्त्र के विनियोग, ध्यान और जप करने मात्र से शत्रु पराभूत होते हैं ।

जपसंख्या—प्रतिदिन ५०० । ५१ दिन तक ।

३५. पुत्रप्रद मन्त्र

क्लीं ।

विधि

रात दस बजे के बाद पवित्र पीठासन पर रेशमी वस्त्र बिछाकर ताम्रपत्र स्थापित कर अनार की लेखनी और जावित्री, जायफल, कपूर तथा चन्दन की स्याही से त्रिकोण (△) बनाकर—

नमोदेव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्मताम् ॥

को पढ़ते हुए त्रिकोण में देवी त्रिपुरसुन्दरी (भगमालिनी) का उक्त मंत्र से आवाहन करे और इसी मंत्र से पंचोपचार पूजन करे । तत्पश्चात् घी की ज्योति का पूजन ॐ देवी दीपाधाराय यंत्राय नमः पढ़ते हुए करे । फिर 'क्लीं' इस बीजमन्त्र का जप पुत्र प्राप्त होने का संकल्प हृदय में करके करे । पति-पत्नी दोनों साथ बैठकर करें या केवल स्त्री करे ।

जपसख्या—९ महीने तक अथवा एक वर्ष तक प्रतिदिन ११०० । लाल चन्दन अथवा रुद्राक्ष की माला से जप किया जाए ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्त में ११०० आहुतियां देकर हवन किया जाए। साधना काल तक पवित्रता, सात्विकता का रहन-सहन बनाए जाए। केवल ऋतुकाल के स्नान के बाद विषम संख्या के दिन पति-पत्नी का समागम विहित है।

३६. निधिप्रापणा-विद्या

जहां कहीं धन गड़ा हो और उसे प्राप्त करने में बाधाएँ हों, अथवा अज्ञात स्थान में सुरक्षित धन को प्राप्त करने में निधिप्रापणा-विद्या-मन्त्र सहायता करता है।

मन्त्र

ॐ गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं सर्वेभ्योनवनिधिभ्यो नमः।

इस मन्त्र को ६१ दिन तक नित्य ५ हजार जप करके जप का दशांश हवन वट वृक्ष की समिधा अथवा गूलर की समिधा में घी से किया जाए। मन्त्र सिद्ध होने पर जब धन प्राप्त करना या खोजना हो तो उस स्थान पर ५ हजार जप, दशांश हवन किया जाए। पश्चात् धन प्राप्त करने का प्रयास किया जाए। अज्ञात धन का निर्दिष्ट स्थान स्वप्न में प्राप्त होता है।

३७. सर्वाह्लादिनीविद्या

यह विद्या मन्त्र केवल स्त्रियों के लिए है। इस मन्त्र की साधना करने वाली स्त्री में एक ऐसा पवित्र आकर्षण उत्पन्न हो जाता है, जिसे देखते ही हर व्यक्ति के हृदय में आह्लाद उत्पन्न होता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह स क ल ह, स क ल ह्लीं ह्लीं ह्लीं ईं सः अं सर्वाम्नाये स्वाहा।

साधना विधि

प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व अथवा रात १० बजे के बाद शरीर,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन, वस्त्र से पवित्र होकर ऊन के आसन पर बैठकर पीठासन में पीत वस्त्र बिछा कर उस पर ताम्र यन्त्र रखकर केसर, चन्दन और चम्पा की लेखनी से त्रिकोण △ बनाकर त्रिकोण में पीले गुलाव का पुष्प रख कर सर्वाह्लादिनी भगवती त्रिपुरसुन्दरी का ध्यान कर पुष्प पर उनकी स्थिति की भावना करके मन्त्र का जप किया जाए। जप काल तक घी की ज्योति जलती रहे। दृष्टि पुष्प पर रहे।

मन्त्र सख्या—२१ दिन तक २१०० नित्य जप किया जाए। इसके वाद प्रतिदिन इसी मन्त्र को २१ बार पढ़कर पीले गुलाब के फूल को अभिमन्त्रित कर जूड़े में खोस लिया जाए। जब भी अपने आकर्षण से लोगों में आह्लाद उत्पन्न करना हो, ऐसा ही किया जाए।

३८. बन्दीमोचिनी-विद्या

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं बन्दीदेव्यै नमः।

जो व्यक्ति न्यायालय से दंडित होकर कारागार में हो, अथवा न्यायालय से कारागार का दण्ड भोगने की स्थिति में हो, जिसे प्राणदण्ड मिलने के पूरे प्रमाण हों अथवा प्राणदण्ड मिल चुका हो, उसे सभी प्रकार के दण्डों से मुक्त कराने में यह मन्त्र-विद्या अमोघ सिद्ध हुई है।

जेलखाने की सजा पाए हुए क़ैदी यदि नित्य इस मन्त्र का १०८ बार जप करे तो कारागार से मुक्ति मिलती है। निगड़ बन्धन (आमरण सजा) या प्राणदण्ड की सजा में इस मन्त्र का पुरश्चरण तब तक कराया जाए जब तक निर्दोष सिद्ध होकर दण्ड से मुक्त न हो। पुरश्चरण काल में ११०० जप नित्य किया जाय। अन्त में दशांशहवन।

'भैरव करंकिणी तन्त्र' में बन्दीमोचिनी विद्या का एक दूसरा प्रयोग यह है—

उपर्युक्त मंत्र का नित्य १०८ बार जप किया जाए। जप के बाद

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्दीमोचन स्तोत्र का पाठ ९ बार किया जाए। प्रातः, सायं दोनों समय जेल में रहते हुए क़ैदी यदि ऐसा करे तो सजा से छुटकारा मिल कर वह निर्दोष सिद्ध होता है। स्वयं न कर सके तो किसी शक्तिपीठ में संकल्पपूर्वक इस मन्त्र का अनुष्ठान २१ दिन कराया जाए, अन्त में ११०० आहुतियाँ इसी मन्त्र से देकर पूर्णाहुति दी जाए।

बन्दीमोचन स्तोत्र

बन्दीं देवीं नमस्कृत्य वरदाऽभय शोभितां
त्वां बन्दीं शरणं गत्वा शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

बन्दी कमलपत्राक्षी लौहश्रृंङ्खलभंजना
प्रसादं कुरु मे देवि शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

त्वं बन्दी त्वं महामाया त्वं दुर्गा च सरस्वती
त्वं देवि रजनी चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

संसारतारिणी बन्दी सर्वकामप्रदायिनी
सर्वलोकेश्वरी बन्दी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

त्वमैन्द्री चेश्वरीचैव ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी
त्वं च कल्पक्षये तावत् शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

दिविधात्री धरित्री च धर्मशास्त्रादि भाषिणी
दुःखहा भङ्गिनी देवि शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

नमस्कृत्य महालक्ष्मीं रत्नकुण्डल भूषितां
शिवस्यार्द्धाङ्गिवासिनी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

नमस्कृत्य महादुर्गेमहादुस्तर तारिणी
महादुःखहरिणी च शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥

इदं स्तोत्रं सुरुचिरं यः पठेन्नित्यमेव च
सर्वपाप विनिर्मुक्तो मोक्षं स लभते क्षणात् ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९. वशीकरण-मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्सौः हुं रं अं आं इं ईं उं ऊं ॠं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा।

यह मन्त्र सर्वोन्मादिनी विद्या के अन्तर्गत है। इसका प्रयोग वशीकरण के लिए किया जाता है। इसे सर्वलोक वशीकरण भी कहा जाता है। यह मंत्र सर्वजन साध्य है। नित्य विनियोग कर के १०८ बार इसका जप करते रहने से व्यक्ति लोकप्रिय बनता है। कार्य-जीवन में सफलता प्राप्त करता है। ईर्ष्यालुभाव के लोग भी उसको ओर आकृष्ट होते हैं।

किन्तु किसी विशेष प्रयोजन से किसी विशेष स्थिति में किसी विशिष्ट व्यक्ति को आकृष्ट या वशीभूत करना हो तब इसका पुरश्चरण किया जाए और दस हजार जप करके दशमांश हवन किया जाए। दोनों प्रकार के प्रयोगों में विनियोग यह है—

विनियोग

अस्य श्री सर्वोन्मादिनी विद्यायाः मन्त्रस्य भृगुॠषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सर्वलोकोन्मादिनी देवता। हुं बीजं। क्लीं कीलकम्। ह्सौः शक्तिः। सर्वलोकोन्मादने विनियोगः।

विशेष

किसी व्यक्तिविशेष को आकृष्ट या वशीभूत करना हो तो सर्वलोकोन्मादने विनियोगः की जगह व्यक्ति का नाम लेकर उन्मादने विनियोगः कहना चाहिए।

४०. सौभाग्यसुन्दरी मन्त्र

यह मंत्र स्त्रियों के सुख-सौभाग्य को बढ़ाने वाला है। दुर्भाग्य के मारे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए पुरुष भी इसका जप करके सौभाग्यशाली बन सकते हैं। सामान्य अवस्था में नित्य इस मन्त्र को १०८ बार जप लेने मात्र से सौभाग्य वृद्धि हुआ करती है। विशेष परिस्थिति अथवा दुर्भाग्य का स्थिति में इसका पुरश्चरण किया जाता है और नित्य १० हजार मंत्र २१ दिन तक जपा जाता है। जप पूरा होने पर दशांश हवन किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं ह्सौः सौभाग्यसुन्दरी स्वाहा।

४१. शत्रुक्षयंकरी विद्या-मन्त्र

सौन्दर्यलहरी के भ्रुवौमध्ये० स्तुति श्लोक से जिस शत्रुनाशक मंत्र का उद्धार होता है, वही मन्त्र तंत्रशास्त्र के मन्त्रचूड़ामणि ग्रन्थ में भी मिलता है। यह रौद्र मन्त्र है। त्रिपुरसुन्दरी के रौद्र रूप महाकाली से संबंधित है। मन्त्र सिद्ध करने का विधान सरल है। नित्य विनियोग करके केवल १०८ बार जप करते रहने से शत्रुबाधा निर्मूल होती है। किसी विशेष शक्तिशाली शत्रु के विनाश या पराभव के लिए इस मन्त्र का पुरश्चरण किया जाता है। प्रतिदिन १० हजार मन्त्र का जप ५१ दिन तक किया जाता है। जप समाप्त होने पर दशांश हवन किया जाता है। १०८ बार जप करने अथवा पुरश्चरण करने में विनियोग करना अनिवार्य है।

विनियोग

अस्य श्री शत्रुक्षयंकरी विद्यायाः कहोलऋषिः। जगती छन्दः। महाकाली देवता। हुं बीजं। ब्रूं कीलकम्। ठः शक्तिः। शत्रुक्षयंकरणे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्सौं सर्वसंक्षोभिणि सर्व विद्रावणि रिपुगणं कवलय कवलय हुं ब्रूं हः ठः प्रभञ्जने स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४२. सर्वकामनापूर्णार्थ कामाख्या मन्त्र

विशेष

यह मन्त्र-साधना दो प्रकार की है। एक तो गरिमा, लघिमा सिद्धि-के लिए की जाती है। इस साधना के सिद्ध होने पर साधक का तीसरा नेत्र खुल जाता है। यह साधना योगमार्गी है और यदि कामाख्या (कामरूप-असम) देवी की सन्निधि में साधना की जाए तो सिद्धि मिलने में विलम्ब नहीं होता है फिर भी लगातार तीन वर्ष तक साधना करनी पड़ती है। यह साधना सर्वसाधारण के लिये संभव नहीं है।

दूसरी साधना में नित्य १०८ बार मन्त्र जपते रहने से सभी मनोरथ अपने-आप पूरे होते रहते हैं। किसी विशिष्ट कामना की पूर्ति के लिए पुरश्चरण करना चाहिए। पुरश्चरण में १० हजार मन्त्र का जप ५१ दिन तक करना चाहिए। अन्त में दशांश हवन किया जाए।

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं सौः ईशित्व वशित्व प्राकाम्येच्छा पूरणायै सर्वकामाख्यायै स्वाहा।

४३. वशीकरण कुलसुन्दरी मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं सौः कुलसुन्दरी नित्या सकह सकल रूपे स्वाहा।

नित्या कुलसुन्दरी के इस मन्त्र का १०८ बार जप प्रतिदिन करते रहने से मनुष्य के सुख-सौभाग्य और पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सभी लोग उसके अनुयायी या वशवर्ती बनते हैं। किसी विशेष प्रयोजन से व्यक्ति विशेष को वशवर्ती बनाने के लिए १० हजार जप नित्य ५१ दिन तक पुरश्चरण पूर्वक करना चाहिए। अन्त में दशांश हवन करना चाहिए।

४४. नित्यक्लिन्ना साधना

विशेष

नित्यक्लिन्ना देवी के मन्त्र की साधना क्रूर कर्मों के लिए की जाती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। इस मन्त्र की साधना करके मेघनाद ने इन्द्र को बांध कर बन्दीगृह में क़ैद कर दिया था। इस मन्त्र द्वारा महान् से महान् व्यक्ति को क्षुब्ध और त्रस्त किया जा सकता है। इसकी साधना वाममार्गी है। इस साधना में पञ्चमकार का उपयोग किया जाता है। महानिर्वाण तन्त्र में बताया गया है कि इस मन्त्र की साधना शून्य शिवालय में रजोधर्म युक्त पद्मिनी जाति की युवती के वराङ्ग (त्रिकोण) की पूजा इत्यादि बहुत ही गर्हित विधि बताई गई है। किन्तु परिज्ञान रखने के लिए इसके मन्त्र का स्वरूप जानना भी आवश्यक है। मन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं इं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

४५. शत्रुसंहारिणी महाज्वालामालिनी विद्या

मन्त्र

ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी ज्वालामालिनिदेवि सर्वभूत संहार-कारके जातवेदसि ज्वल ज्वल विज्ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल हुं फट् स्वाहा।

ध्यान

शरीर में नीलाम्बर धारण किए, मस्तक पर कस्तूरी का लेप, एक हाथ में त्रिशूल धारण किए दूसरे हाथ में करवाल, शरीर में चिताभस्म धारण किए, महानीलाञ्जन के समान देवी, अग्नि की प्रज्वलित महा-ज्वालाओं के मध्य खड़ी हुई हैं।

इस प्रकार भगवती महाज्वालामालिनी के कराल रूप का ध्यान करके उपर्युक्त मन्त्र का जप पांच महीने तक सूर्यास्त से सूर्योदय तक करने से शत्रुपक्ष का विध्वंस हो जाता है। उसका सर्वस्व अग्नि की ज्वालाओं में भस्म हो जाता है।

विशेष

यह साधना अत्यन्त क्रूर और भयावह है। साधना की तनिक-सी भूल साधक को ही भस्म कर देती है। यह महान् मारण प्रयोग है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकी साधना वर्जित है। प्राचीन काल में राक्षसवर्ग के ही लोग इसकी साधना करते थे। मानव-मस्तिष्क और हृदय ने इसका वर्जन किया है।

४६. त्रिवर्णा त्रिनयना शक्ति-साधना मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं ईं सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् वेदगर्भे भगवति स्वाहा।

विशेष

इस मन्त्र में गायत्री और सावित्री का मिश्रीकरण है। इसका मात्र जप करने से दैन्य, दारिद्रय, दुरित का क्षय होता है। दौर्भाग्यजनितारिष्ट का निवारण होता है, सद्बुद्धि, सद्विवेक उत्पन्न होकर सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। अभ्युदय प्राप्ति और अभीष्ट सिद्धि होती है।

भगवती त्रिपुरसुन्दरी के तीन रंगों के तीन नेत्रों का ध्यान मंत्र का जप करने से पूर्व किया जाता है। एक नेत्र का वर्ण शोणनद (सोनभद्र नदी) के जल की भाँति आरक्त (लाल) है, दूसरे नेत्र का वर्ण जाह्नवी-गंगा के धवल जल की भाँति श्वेत है और तीसरे नेत्र का वर्ण सूर्यपुत्री-यमुना के जल के समान श्यामल है।

इस प्रकार भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी के तीन नेत्रों का ध्यान करके नित्य १००८ बार मन्त्र का जप करते रहने से उपासक श्री-कीर्ति-विभूति प्राप्त करता है।

वस्तुतः सावित्री-गायत्री मिश्रित यह मन्त्र अध्यात्मयोग से संबंधित है। क्रियायोग की साधना पद्धति के अनुसार आज्ञाचक्र में धारणा, ध्यान कर सविकल्प समाधि द्वारा इस मन्त्र का अजपाजप गंगा की धवल धारा में आकण्ठ मग्न होकर तीन वर्ष तक साधना करने से भगवती साक्षात् प्रकट होती हैं। ब्रह्मलीन स्वामी हरिहरानन्द करपात्री जी ने नरवर (बुलन्द शहर) में यह साधना की थी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७. अपर्णा शक्ति-साधना मन्त्र

ॐ हूं जुं सः अनिमेषायै अपर्णायै ईश्वरीविद्यायै स्वाहा ।

श्रीरूपा भगवती त्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करके इस मन्त्र का जप नित्य १० हज़ार शरद् पूर्णिमा से प्रारम्भ कर कार्तिक पूर्णिमा तक करना चाहिए । जप समाप्त होने पर सम्पूर्ण जपसंख्या का दशांश हवन करना चाहिए । हवन में कमलगट्टा, बेलगिरी, जाविती, कपूर, जव, तिल, गोघृत, गुग्गुल, शमी वृक्ष की फली, सफेद चन्दन का बुरादा और लाल चन्दन का बुरादा और समिधाएँ गूलर या आम की होनी चाहिए ।

इस मन्त्र की साधना से धन-धान्य, व्यापार, व्यवसाय में विपुल वृद्धि होती है । कीर्ति और प्रतिष्ठा तथा आयु का संवर्द्धन होता है ।

४८. शाकम्भरी-मन्त्र साधना

मन्त्र

ॐ क्लीं करुणामयि जीवय जीवय शाकम्भरि भगवति स्वाहा ।

इस मन्त्र की साधना करते समय पहले विनियोग, फिर ध्यान, फिर मन्त्र का जप करना चाहिए ।

विनियोग

ॐ अस्य शाकम्भरी मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । पंक्तिश्छन्दः । शाकम्भरी देवता । क्लीं बीजं । प्रणवः शक्तिः । जगज्जीवने विनियोगः ।

ध्यान

भगवती पार्वती रूपा शाकम्भरी की देहकान्ति नीलकमल सदृश है । वह अपने कमलनयनों के दृष्टिपात से अपने उपासकों का मनोरथ सिद्ध कर धन्य बना देती हैं । उनकी कृपादृष्टि सबको आप्लावित करती है ।

मार्कण्डेय पुराण में लिखा है—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवैव करुणाप्रोक्ता द्राघीयस्या तु जीवनं,
शाकम्भरी नीलपद्मा धन्यस्तु भग संयुतः।

भगवती के स्वरूप का ध्यान करते हुए उपर्युक्त श्लोक पढ़ते रहना चाहिए।

इस मन्त्र की जपसंख्या ११०० प्रतिदिन दीपावली से देवोत्थान एकादशी तक संयम, नियम, विधिपूर्वक जप तथा दशांश हवन प्रतिदिन करने से दीर्घायुष्य, विपुल धन भण्डार, अन्न भण्डार की प्राप्ति होती है। इसके पुरश्चरण से दुर्भिक्ष और अकाल का निवारण होता है।

४८. नीलपताका शक्ति-साधना

मन्त्र

ॐ ह्लीं नीलपताके स्वाहा।

इस मन्त्र की साधना में नीलवसना भगवती पार्वती का ध्यान करना चाहिए। भगवती पार्वती हिमालय की सुरम्य वनस्थली में विराजमान हैं। नील परिधान है, गले में मोतियों की उज्ज्वल माला है। मनोहर शुकनासिका से मन्द-मन्द श्वास हृदय के मोतियों का स्पर्श कर शीतल होकर बाहर निकल रहे हैं, जिनके निकलने से मुक्ता-मणि जटित नाक की नथ हिल रही है और हिमालय में उत्पन्न बाँस में नीलपताका फहरा रही है।

इस प्रकार के ध्यान के बाद विद्या, बुद्धि, सद्विचार, यश, धन प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति नित्य १०८ बार इसका जप करता रहे।

'भैरव तन्त्र' में नीलपताका शक्ति की साधना बड़े विस्तार से दी गई है, जो जटिल और कठिन है। सामान्य व्यक्ति के लिए सुकर नहीं है।

चिड़ावा (राजस्थान) के पं० गणेशदत्त शास्त्री ने नीलपताकाशक्ति की साधना कर सिद्धि प्राप्त की थी। वह षट्शास्त्रों के पारङ्गत विद्वान्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थे। सिद्धि प्राप्त करने के बाद वह चिड़ावा में ही एक कुएं के पास छोटी-सी झोपड़ी में परमहंस वृत्ति से रहते थे। नीले वस्त्र पहनते थे और मिट्टी की एक हांड़ी रखते थे।

५०. सर्वमङ्गला मन्त्र-साधना

ॐ क्लीं सं सर्वमङ्गलायै नित्यायै स्वाहा।

भगवती त्रिपुरसुन्दरी का एक नाम और रूप सर्वमङ्गला है। इन्हें नित्या भी कहा जाता है। सर्वमङ्गला की देहकान्ति सिन्दूर वर्ण की है और ओठ विद्रुममणि की तरह लाल-लाल हैं। भगवती के इस रूप का ध्यान करके नित्य १० हजार मंत्र ९ दिन तक जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यदि किसी सिद्धपीठ में स्थित भगवती सर्वमङ्गला के इस मन्त्र को देवी-प्रतिमा की सन्निधि में जपा जाए तो शीघ्र सिद्धि मिलती है। सर्वमङ्गला का एक गुफा-मन्दिर कन्हेरी (बंबई के पास) की प्राचीन गुफाओं से उत्तर पहाड़ के कटि प्रदेश में बहती हुई नदी के ऊपर स्थित है। बहुत एकान्त और सुरम्य स्थान है, वहां रात में नित्य शेर आया करता है। यह स्थान सिद्धपीठ है। एक मन्दिर मद्रास में है। जहां पर सर्वमङ्गला राजराजेश्वरी की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। यह स्थान भी सिद्धपीठ है।

५१. वज्रेश्वरी त्रिपुरा मन्त्र-साधना

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्रेश्वरी पुरनिवासिनि मम कार्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ध्यान

भरात्नं ते पालायुगलनगराजन्य तनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लंघ्य विलस—
न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसंधानधिषणाम् ॥

जपसंख्या—प्रतिदिन १०८ बार निरन्तर जप करते रहने से उपासक की सभी कामनाएँ पूरी होती रहती हैं। भगवती की कृपा की वर्षा होती रहती है। अथवा सपादलक्ष जप का अनुष्ठान करे। अन्त में दशांश हवन करे। फिर प्रतिदिन एक माला मन्त्र का जप करता रहे।

५२. शत्रुस्तम्भनकरी विद्या

मन्त्र

ॐ ह्लीं श्रीं ओं हुं रः क्रों स्तम्भिनि हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का जप या अनुष्ठान करने से पूर्व विनियोग करना चाहिए।

विनियोग

अस्य श्री शत्रुस्तम्भनकरी विद्यायाः क्रूरगुखो ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। रक्ताक्षी देवता। हुंकारो बीजम्। क्रोंकारः कीलकं। ह्रीं शक्तिः। शत्रूणां स्तम्भने विनियोगः।

तत्पश्चात् जप करना चाहिए। किसी शत्रु विशेष को स्तम्भित करना हो तो मन्त्र के अन्त में (स्वाहा के बाद,······(द्वितीयान्त शत्रु का नाम) शत्रुं स्तम्भय स्तम्भय जोड़ देना चाहिए।

जपसंख्या—सवा लक्ष। नियत संख्या में प्रतिदिन जप करना अनिवार्य है। नियत जप संख्या समाप्त होने पर दशांश हवन करना चाहिए।

५३. श्रीमुखी नित्या विद्या साधना

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रों श्रीमुखी नित्यायै स्वाहा।

जपसंख्या—११०० प्रतिदिन। ३१ दिन तक।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष

मन्त्रमहार्णव में भगवती श्रीमुखी के सम्बन्ध में कहा गया है—

स्मितं शांतं तथा ज्योत्स्ना कमला परिकीर्तिता।
जाल तु श्रीमुखी वर्णमण्डलं परिकीर्तितम् ।।

भगवती श्रीमुखी की उपासना और साधना से विद्या श्री-कीर्ति और ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

५४. रक्तदन्तिका मंत्र-साधना

मन्त्र

ॐ श्रीं रं भगवति रक्तदन्तिके अनुरक्ते स्वाहा।

जपसंख्या—२१ हजार। २१ दिन तक प्रतिदिन एक सहस्र जपना चाहिए।

यह मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक इस मन्त्र से अभिमन्त्रित ताम्बूल खाकर शत्रु के सामने जाए तो शत्रु सम्मोहित होता है। यह मन्त्र वशीकरण में भी प्रयुक्त होता है।

५५. विद्याधरी विद्या-साधना

विशेष

विद्याधरी विद्या की मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होने पर 'विपञ्ची वीणा' और 'वल्लकी वीणा' बजाने की अपूर्व, अद्भुत प्रवीणता प्राप्त होने के साथ कण्ठ-संगीत सिद्ध होता है।

नौ अथवा सात तारों की 'विपञ्ची वीणा' होती है। इसे 'ज्येष्ठा' भी कहा जाता है और पांच अथवा तीन तारों की 'वल्लकी वीणा' होती है।

मन्त्र

ॐ ॐ हुं डं विद्येशानि स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसंख्या—सात हज़ार प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त्त में शिव अथवा सरस्वती के मन्दिर में एक वर्ष तक जप करना चाहिए।

५६. रागसिद्धि के लिए साधना

गीत-संगीत की राग-रागिनी की सिद्धि के लिए भगवती त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान करके अठारह प्रकार के अलंकारों का अभ्यास प्रतिदिन प्रातः ३ बजे से लेकर ५ बजे तक करने से राग-रागिनियां सिद्ध होती हैं।

भगवती त्रिपुरसुन्दरी शब्दात्मिका हैं। राग-रागिनी के साधक को भगवती का ध्यान निम्नांकित स्तुति-श्लोक से करना चाहिए—

ध्यान

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां-निधान-
मुद्गीथ रम्यपदपाठवतां च साम्नां।
देवीत्रयी भगवती भवभवनाय
वार्ता च सर्वं जगतां परमार्तिहन्त्री॥

विशेष

जो 'गति' को गमक (प्रापक) प्राप्त कराता है वह 'गीत' कहा जाता है। और 'राग' से रागान्तर अवस्था का प्रतिपादन 'गति' कहलाती है। 'वादि' 'प्रतिवादि' और 'अनुवादि' रूप जो 'गुण' होते हैं, वे 'स्वर' कहलाते हैं। स्वर तीन प्रकार के होते हैं 'खाडव' 'ओडव' और 'सम्पूर्ण'। इनके अतिरिक्त 'ऋग् ग्राम', 'यजुर्ग्राम' और 'सामग्राम'—ये तीन 'ग्राम' होते हैं। इन्हीं को 'षड्ज', 'मध्यम' और 'गान्धार' भी कहा जाता है। इनकी मर्यादा-पद्धति (नियमन) भूर्भुवः स्वः है।

राग-रागिनी के इस 'साम सिद्धान्त' को समझ कर राग-रागिनी की सिद्धि प्राप्त करने के लिए अलङ्कारों की साधना (अभ्यास) करनी चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'गोरीमत' से अठारह अलङ्कार ये हैं—

१. आसन्नः सा रि ग ।म प धनि सा ॥

२. परावृत्तः सनि धप मग रिसा सारि सारि ॥

३. निवृत्तः गसा रिगम सारिगम पसारिगम पधसारिगम पधनिसारिगम पधनिसा ॥

४. परिवर्तकः सानि सानि धमा निध पसा निध पमा सानि धपम धपध सनिधपगरि सनिधप गगिरिसा ॥

५. आक्षिप्तः निसा धनि सा मपधनिसा गमकधनि सारिगमक ॥

६. सम्प्रदानः निसा सारि गमक धनिसा ॥

७. आवाहः रिसा गरी गमक धसनी ॥

८. उपलक्षः सासा नीनी नीधधध पपप गगग रीरीरी सा ॥

९. क्रामकः सारी रीगग मम पप धधध निनि सा ॥

१०. बहुमानः सा निनि धध पप मम गग रीरी सा ॥

११. घातकः साग सारिगम मग पध पनिधा सानि सा ॥

१२. मलिनः सानि साधनो पधम पगम गरी सारी सा ॥

१३ हुँकारः सारि गम मग गरी सासा निध पपनिसा ॥

१४. द्योतः सा सा रिनि धगम पप मग धप धारिनिसा ॥

१५ विद्योतः साम पसा सारि गधनि सनिगरी सा सापमसा ॥

१६. सुबाहुः सारि सासा गसा सामनिसा सापधसा ॥

१७. प्रौढ़ः मम गधरिनि सासा सासा निरि धग मम ॥

१८. सम्मुखः सा गपनि सासारीध सासा परिध मनि मसा सरि गरीसा गम पम गप सरि मम मप धनिसा ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५७. सर्वज्ञानप्रद बीजमन्त्र

विनियोग

अस्य श्रीसर्वज्ञानप्रदमन्त्रस्य क एव ऋषिः। विराट् छन्दः। चेतना देवता। ऐं बीजं। क्लीं कीलकम्। ह् सौः शक्तिः। सर्वज्ञान प्राप्त्यर्थे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ ऐं चेतने विद्रावितान्धपटले सर्वज्ञानप्रदे स्वाहा।

विशेष

यह मन्त्र चित्त और चेतना को जाग्रत कर उन्हें ऊर्ध्वमुखी बनाता है। चेतना ऊर्ध्वमुखी हो जाने पर भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है। इस मन्त्र की सिद्धि के लिए पहले विनियोग करना चाहिए फिर भगवती का निम्नांकित ध्यान किया जाए—

करांग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथंकारं ब्रूमस्तव चिबुकमौपम्यरहितम्॥

जपसंख्या—२१ हजार प्रतिदिन ९१ दिन तक।

५८. सरस्वती साधना मन्त्र

विद्या-बुद्धि-विवेक और वाणी की सिद्धि प्राप्त करने के लिए भगवती सरस्वती की यह साधना निरन्तर करनी चाहिए। ११००० अथवा ११०० या १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करते रहना चाहिए।

मन्त्र

ॐ वाचस्पते प्लुत प्लुत नमः।

५९. अभयप्रद शक्ति साधना मन्त्र

इस अभयप्रद मन्त्र के उद्धार का संकेत मन्त्रमुक्तावली में इस प्रकार है—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायुना कामराजेन वर्गाभ्यां अभया पुरा ।
पल्लवेन तथा वाण्या मनुर्विभवकारकः ॥

इससे यह मन्त्र उद्धृत होता है—

ॐ ह्सौं क्लीं अभयं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं नमः ऐं ।

जपसंख्या—प्रतिदिन १०८ बार नित्यमेव जप करते रहना चाहिए ।

विशेष

इस अभयप्रद मन्त्र के सम्बन्ध में एक अन्तर्कथा इस प्रकार है—पहले किसी कल्प में प्रजापति ब्रह्मा के पाँच मुख थे । अन्धकरिपु रुद्र ने ब्रह्मा के एक मुख को अनुपयोगी समझकर अपने नाखून से काट दिया । एक मुख के कट जाने से ब्रह्मा को भय हुआ कि भगवान् रुद्र कहीं शेष चारों मुखों को भी न काट डालें । अतः भयभीत ब्रह्मा अपने चारों मुखों से भगवती आद्याशक्ति त्रिपुरसुन्दरी की स्तुति करने लगे । उनकी स्तुति से उक्त बीज मन्त्र प्रकट हुआ । भगवती प्रसन्न होकर चार भुजाएँ धारण कर अपनी चारों भुजाओं को ब्रह्मा के चारों मस्तकों पर रखकर उन्हें अभय प्रदान किया ।

६०. कष्ट-क्लेश हरण गौरा मन्त्र

विशेष

गौरी मन्त्र का केवल जप करने मात्र से कष्टों-क्लेशों, विघ्नों से मुक्ति मिलती है । नित्य १०८ बार जपते रहने से भगवती गौरी का वात्सल्य स्नेह प्राप्त होता है । सदा सर्वदा मङ्गलमय जीवन व्यतीत होता है । इस उपासना में भी एक अन्तर्कथा है—

भगवती गौरी के दो पुत्र थे, गणेश और स्वामिकार्तिकेय । दोनों पुत्र माँ गौरी के एक एक स्तन का पान एक साथ किया करते थे । स्तन पान कराते समय माँ का वात्सल्य स्नेह पिघलकर दूध के रूप में दोनों स्तनों में भर जाने से माँ के स्तन कुम्भ के समान पुष्ट और भरे हुए

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगते थे। एक दिन कुमार और गणपति जब माँ के एक-एक स्तन का पान कर रहे थे, तो कुम्भ के समान पुष्ट हुए पयोधर में हाथ लगाते ही गणपति को भ्रम हुआ कि कहीं मेरा कुम्भ (मस्तक) तो नहीं उतर कर माँ के वक्ष में आ गया है ? उन्होंने झट हाथ लगाकर अपने कुम्भ-स्थल को टटोला तो वहाँ बैठे हुए देवगण गणेश के भोलेपन को देखकर खिलखिला कर हँस पड़े।

मन्त्र

ॐ हूं हूं शक्तिः ह्रीं ह्रीं गौरिशिवे स्वाहा।

६१. विन्ध्यवासिनी महाशवरी साधना

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ब्रूं क्लुं विन्ध्यवासिनि महाशवरि वन्दे हुं फट् स्वाहा।

ध्यान

नन्दगोप गृहे जाता यशोदागर्भ संभवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी॥

विशेष

नवरात्र (आश्विन मास के) में विन्ध्याचल (उत्तर प्रदेश) में विन्ध्य-वासिनी देवी के मन्दिर में इस मन्त्र का अनुष्ठान करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यह मन्त्र उत्तम रक्षा कवच है। इसकी साधना से शत्रुओं की पराजय हाती है। भगवती साधक के हर प्रकार के योग और क्षेम का वहन करती है। संकटों, संघर्षों पर विजय प्राप्त होती है। न्यायालय में विजय प्राप्त होती है।

जपसंख्या—११००० नित्य नौ दिन तक जप करना। तदनन्तर जपसंख्या का दशांश हवन करना। फिर नित्यप्रति मंत्र का जप एक माला करते रहना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६२. वाराही मन्त्र-साधना

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्सौं सौः वार्त्तालि वार्त्तालि वाराहिमुखि वाराहिमुखि स्वाहा।

ध्यान

कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला
हलमुसलिनी सद्भक्तेभ्यो वराभयदायिनी।
कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोघनस्तनी
जयति जगतां मातः सकलविघ्नभयनाशिनी॥

जपसंख्या—२१ दिन तक २१००० नित्यमेव।

विशेष

इस मन्त्र की सिद्धि से भगवती वाराही देवी साधक को सभी विघ्न बाधाओं से मुक्त कर अभय वर प्रदान करती है।

६३. सरस्वती मातृका साधना

मन्त्र

ॐ ऐं अं आं इं ईं उं ऊं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं सं हं ळं क्षं सरस्वतो मातृके स्वाहा।

ध्यान

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥

इस मन्त्र की नित्य प्रति की जपसंख्या अपनी क्षमता के अनुसार निर्धारित करनी चाहिए। सम्पूर्ण जपसंख्या सवा लाख है। इस मन्त्र की साधना से घोर जड़ बुद्धि व्यक्ति महामेधावो हो जाता है। सरस्वती या किसी शक्ति के देवायतन में बैठकर नित्य जप एवं देवी-पूजन करने से निर्विघ्न साधना पूर्ण होती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६४. शत्रुक्षयंकरी धूमावती मन्त्र-साधना

कुपित रुद्र के कोपानल से उत्पन्न उग्र शक्ति धूमावती देवी है। इसकी साधना भी उग्र है। साधना में त्रुटि होने से धूमावती साधक को ही विनष्ट कर देती है। निर्विघ्न साधना पूरी होने पर मन्त्र-साधना केवल शत्रुओं का ही विनाश करती है और किसी प्रयोजन में इसके मन्त्र की उपयोगिता नहीं है। समझ-बूझकर धूमावती के मन्त्र की साधना करनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं रः प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल ह्रीं स्वाहा।

जपसंख्या—२१०० प्रतिदिन एकमाला जप २१ दिन तक। अन्त में सम्पूर्ण जपसंख्या का दशांश हवन करना चाहिए।

६५. क्षेमङ्करी मन्त्र-साधना

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं नित्ये गिरिवनालये क्षेमङ्करी रक्ष रक्ष क्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपते रहने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। गृह, ग्राम, नगर, वन, पर्वत, मरुस्थल सर्वत्र यह मन्त्र साधक को हर प्रकार से रक्षा कर जीवन को मंगलमय बनाता है।

६६. शबरी मन्त्र-साधना

विनियोग

ॐ अस्य शबरी देवता मन्त्रस्य शबरी देवता। मतङ्गो ऋषिः। विराट् छन्दः। ऐं बीजं। क्लीं कीलकम्। ह्रीं शक्तिः सर्वत्ररक्षणे विनियोगः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यान

गले गुञ्जावीजावलिमपि च कर्णे शिखिशिखां,
शिरोभागे नृत्यत्कनककदलीमंजुलदलम् ।
धनुर्वामेवांसे शरमपरपाणी च दधतीं,
नितम्बे बर्हालिं कुटिलकवरीं नौमिशबरीम् ।।

चोर, डाकुओं, हिंसक जीवों और शत्रुओं से सदा रक्षित रखने वाला शबरी मंत्र है। दीपावली की महानिशा में इस मंत्र से ११०० आहुतियाँ देने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं देवि शबरि स्वर्गमृत्युपातालवाटिकाविहारे मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

६७. वनदुर्गा मन्त्र-साधना

मन्त्र

ॐ हूं क्रों महाभयपरिपन्थिनि वनविहारिणि दुर्गे देवि धनधान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

विशेष

वनदुर्गा का मन्त्र सब प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करता है। कुमार-तन्त्र में वनदुर्गा की साधना की सिद्धियों के फल विस्तारपूर्वक बताए-गए हैं। यह मन्त्र हर प्रकार से साधक की रक्षा करता है। धन-धान्य और समृद्धि की वृद्धि करता है। महान्‌संकटों और महाभय से रक्षा करता है। साधक भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञाता बनता है। वनदुर्गा-के आयतन नगरों, ग्रामों में नहीं मिलते हैं। हमारी जानकारी में वन-दुर्गा का एक आयतन चित्रकूट में है। यह स्थान सघन वन मे है। एक चबूतरे पर देवी की प्रतिमा है। उस क्षेत्र के गिरिजन, वनवासी भोल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और मवइया वर्ग के लोग वनदुर्गा को अपनी कुल देवी मान कर पूजते हैं। इस मंत्र की साधना यदि वनदुर्गा के आयतन में बैठकर की जाए अथवा एकान्त वन प्रान्तर में की जाए तो ६ दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र की जपसंख्या प्रतिदिन ११०० नौ दिन तक जप करने के बाद सम्पूर्ण जपसंख्या का दशांश हवन किया जाए।

६८. छन्नेश्वरी मन्त्र-साधना

मन्त्र

ॐ कं खं गं घं ङं रं रः यं शं षं सं हं सं क्लीं
क्रं पं फं बं भं मं टं ठं डं ढं णं ठठः स्वाहा।

जपसंख्या—९०० प्रतिदिन। ३१ दिन तक।

यह मन्त्र साधना साधक का सर्वोदय करती है। मेधाशक्ति और विवेक शक्ति प्रदान करती है। त्रयताप से रक्षित रखती है।

६९. सर्वसम्पत्साधिनो-विद्या

मन्त्र

ॐ क्लीं करलं करलं इतं सर्वसम्पत्साधिनी मे सम्पत्ति साधय साधय स्वाहा।

जपसंख्या—सवा लक्ष। यदि मूकाम्बिका श्रीक्षेत्र (कर्नाटक) में इस मंत्र की साधना की जाए तो सद्यः सिद्धि मिलती है।

विशेष—यह सर्वसम्पत्साधिनी विद्या भगवती त्रिपुरसुन्दरी को अन्यतम कला श्रीमूकाम्बिका देवी से सम्बद्ध है। मूकाम्बिका का आयतन दक्षिण कर्नाटक के कोलापुरम् श्रीक्षेत्र में है। भगवती मूकाम्बिका की आराधना आद्यशङ्कराचार्य ने की थी, उनसे पहले यह देवी-प्रतिमा जन-समुदाय के लिए अज्ञात थी। भगवती त्रिपुरसुन्दरी का

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाम मूकाम्बिका क्यों पड़ा ? जनश्रुति है कि कोलापुरम् के एक असुर ने ऋष्यमूक पर्वत पर भगवती की प्रसन्नता के लिए कठिन तप किया। उसकी दृढ़ भक्ति और तपस्या से भगवती प्रसन्न होकर प्रकट हुईं और उसे अभीष्ट वरदान देकर बोलीं कि कोलापुरम् में हम स्थित होंगी मूकाम्बिका नाम से हमारी ख्याति होगी। तब से कोलापुरम् श्रीक्षेत्र कहा जाने लगा।

भगवती मूकाम्बिका की प्रतिमा अतीव सुन्दर है। वह बद्धपद्मासनस्था हैं और उनके चरणों के नीचे भगवान् शिव की प्रतिमा (लिङ्ग नहीं) है। इसकी भी एक कथा यह है कि एक बार भगवान् शिव ने हँसी-हँसी में भगवती का नाम न लेकर उनकी सौत श्री गंगा जी के नाम से उन्हें सम्बोधित किया, यह जानने के लिए कि देवी अपने नाम के स्थान पर सौत का नाम सुनकर कुपित होंगी या नहीं। अपने को गंगा नाम से सम्बोधित किए जाने पर भगवती की भौंहें क्रोध से तन गईं तो भगवान् शिव अपना प्रज्ञापराध स्वीकार करते हुए उनके सामने नम्र हो गए। क्रुद्ध भवानी ने शिव के ललाट पर चरण प्रहार कर दिया तो शिव वहीं उनके चरणों के पास बैठ गए।

भगवती मूकाम्बिका जाग्रत देवी हैं। अनेक सन्तों और योगियों ने यहाँ साधना करके सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। इस मन्त्र की साधना से आध्यात्मिक और भौतिक सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं।

७०. वाणी-साधना

मन्त्र

ॐ ऐं वाण्यै स्वाहा।

जपसंख्या—सवालक्ष। नित्य ११०० जपते रहना चाहिए।

इस मन्त्र से साधक की वाणी सिद्ध होती है, वह रहस्यों का ज्ञाता बनता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७१. अजपा गायत्री-साधना

मन्त्र

सोऽहं हंसः स्वाहा ।

यह कठिन साधना है। इसमें जपसंख्या नहीं है। वस्तुतः यह साधना कुलकुण्डलिनी जागरण के लिए है। भूत शृङ्गाटक से जीव शिव को सुषुम्णा पथ से ले जाकर दोनों भौहों के बीच त्रिपुटी में स्थित परमशिव में जोड़ा जाता है। तत्पश्चात् वायु बीज (यं) से लिङ्ग-शरीर का शोषण किया जाता है। फिर अग्नि बीज (रं) से संकोच-शरीर को जलाया जाता है। तत्पश्चात् परमशिव का ध्यान करके यह भावनापूर्वक प्रार्थना की जाती है कि 'हे परम शिव सुषुम्णा पथ से मूल शृङ्गाटक (कुण्डलिनी) को उल्लसित करो, उल्लसित करो, प्रज्ज्वलित करो, प्रज्ज्वलित करो। तत्पश्चात् सोऽहं हंसः स्वाहा का अजपा-जप सविकल्प समाधि लगाकर किया जाता है। यह साधना योगीजन किया करते हैं।

७२. सावित्री-साधना

मन्त्र

ॐ भगवति सावित्रि कं खं गं घं ङं लं तं थं दं धं न रं क्लीं स्वाहा ।

इस मन्त्र की साधना के लिए सावित्री पुरश्चरण किया जाता है। यह साधना तीन वर्ष तक की जाती है। तीन वर्ष में २४ लक्ष सावित्री-मन्त्र का जप पूरा होने पर दशांश हवन किया जाता है। यह साधना सर्वसाधारण के लिए कठिन है। इसकी साधना त्यागी और वीतराग लोग ही किया करते हैं।

७३. अमृतवर्षिणी त्रिपुरसुन्दरी साधना

मन्त्र

ॐ क्लीं अमृतवर्षिणि त्रिपुरे स्वाहा ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यान

कलंक: कस्तूरी रजनिकर बिम्बं जडमयं
कलाभि: कर्पूरैर्मरकतकरंडं निबिडतम् ।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिकलमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ॥

जपसंख्या—सवालक्ष । अन्त में दशांश हवन ।

इस मन्त्र की साधना से साधक भुक्ति और मुक्ति दोनों प्राप्त करता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौन्दर्य-लहरी

श्री शङ्कर भगवत्पाद

* शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितु
न चेदेवं देवा न खलु कुशलः स्पन्दितमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहर विरिञ्च्यादिभिरपि[1]
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥१॥

हे भगवति, भगवान् सदाशिव शंकर आप से संयुक्त होने के कारण ही शक्तिरूप हैं। आपके ही सहयोग से शिवजी सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा विनाश करने में समर्थ हैं। यदि आपका सहयोग न प्राप्त हो तो वह आँख तक हिलाने-डुलाने में समर्थ नहीं हो सकते। इसी कारण ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि देवताओं की आप आराध्या हैं फिर भला मुझ जैसा पुण्यविहीन व्यक्ति आपकी स्तुति करने में कैसे समर्थ हो सकता है।

** तनीयांसं पांसुं तवचरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः संचिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्[2]।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेणशिरसां
हरः संक्षुभ्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम्[3] ॥२॥

मन्त्रोद्धार

* प्रथम श्लोक से ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवे हरिहर विरंच्याद्याराधितेशिव-शक्तिस्वरूपे स्वाहा—मन्त्र का उद्धार होता है।

** दूसरे श्लोक से ॐ श्रीं ऐं श्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्रों ह्रीं श्रीं दुर्गां दुर्गतितारिणीं पद्ममालिनीं मातरं प्रपद्ये स्वाहा। मन्त्र का उद्धार होता है।

१. विरिञ्च्यादिभिरपि—पाठभेद। २. संक्षुभ्यैनं। ३. ०द्धूननविधिम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे मां, ब्रह्माजी आप के चरणकमल की थोड़ी सी रज के प्रताप से स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल आदि लोकों की रचना करते हैं। भगवान् विष्णु अनन्त शेष अपने हजारों शिरों पर आपके चरणों की रज लगा कर जगत् की रक्षा करते हैं, उसे धारण करते हैं और भगवान् रुद्र आपके चरण कमल की रज के प्रभाव से जगत् का संहार कर उसकी चिता-भस्म अपने शरीर पर धारण करते हैं।

* अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरो[1]
जडानां चैतन्यस्तवकमकरन्दस्रुतिझरी[2]।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां द्रंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवती[3] ॥३॥

हे मां, आप अज्ञानी मनुष्यों को अज्ञान अन्धकार से दूर कर प्रकाश प्रदान करने वाले सूर्य की नगरी के समान हैं और जड़ मनुष्यों के हृदय में चैतन्य ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले पुष्पहार की सुगन्धि के प्रवाह की भांति हैं तथा दरिद्री, निर्धन मनुष्यों के लिए चिन्तामणि माला के समान हैं। एक चिन्तामणि जिसके पास हो वह जिस वस्तु की कामना करता है, वही पूरी होती है किन्तु आपकी स्तुति करने वाले को तो चिन्तामणि की माला प्राप्त हो जाए तो उसे किस बात का अभाव रहेगा। जन्म-मरण रूप भवसागर में निमग्न प्राणियों का उद्धार करने के लिए आप वराहावतार विष्णु के दाढ़ के समान हैं। आप अपने भक्तों को अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष प्रदान करती हैं।

---

* तीसरे श्लोक से ॐ ॐ ॐ ऐं ऐं ऐं क्लीं हस्से काका ल ल ल ल ह्रीं ह्रीं ह्रीं चिन्तामणि गुणनिके स्वाहा—मन्त्र का उद्धार होता है।

१. मिहिरोद्दीपनकरी। २. स्तुतिशिरा। ३. भवति।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि, प्रकटितवराभीत्यभिनया।
भयात् त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥४॥

हे माँ, आपके अतिरिक्त सभी देवगण आराधक, उपासक के सामने प्रकट होकर वरदहस्त रखकर या वरदान देकर उनकी कामना पूरी करते हैं, किन्तु अकेली आप ही ऐसी हैं कि तीनों लोकों के देव, यक्ष, गन्धर्व, पिंगल, गुह्यक, मनुष्य जो भी आपकी शरण में जाता है आपका स्मरण करता है, तत्काल उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है आपको प्रकट होने या वरदान देने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। भक्तों को अभय प्रदान करने और उनकी सभी प्रकार की कामना स्मरण मात्र से पूर्ण करने में आपके चरण ही समर्थ हैं।

** हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत्।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥५॥

हे माँ, जो आपकी शरण ग्रहण करता है, आपको प्रणाम करता करता है, उसे आप हर प्रकार का सुख-सौभाग्य प्रदान करती हैं।

---

* चौथे श्लोक में ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षेत्रज्ञे ग्लौनित्ये गां स्वाहा—मन्त्र का उद्धार होता है।

** इस श्लोक के पूर्वार्द्ध से ॐ लं ईं ह्रीं क्लीं श्रीं संक्षोभणे स्वाहा इस संक्षोभण मन्त्र का उद्धार होता हैं। और उत्तरार्द्ध से यह सौभाग्यप्रद वशीकरण मन्त्र उद्धृत होता है—ॐ क्लीं ह्रीं सहकल हसकल क्षूं सह कल हस कल कमले विमले क्लीं सम्मोहने स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपकी आराधना करने के उपरान्त ही विष्णु ने मोहिनी स्त्री का रूप धारण कर शिव को मोह के वशीभूत किया था। कामदेव शरीररहित होते हुए भी आपको प्रणाम कर अपनी पत्नी रति के नेत्रों से पान किए जाने वाले अपने शरीर द्वारा महान् मुनियों के अन्तःकरण को मोह से अभिभूत करने में समर्थ होता है।

* धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्चविशिखा
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
तवाप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-
मपाङ्गात् ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ।।६।।

हे शैलराजपुत्री माँ, अशरीरी कामदेव शरीरधारी जगत् पर जो विजय प्राप्त करता है, उसका मात्र कारण आपके कटाक्ष की कृपा प्राप्त करता है। अन्यथा उसके पुष्प धनुष में क्या शक्ति है? उसके धनुष की डोरी चंचल भ्रमरों की है, वह क्या कर सकती है, कामदेव के वाण तो केवल पाँच ही हैं, वे सम्पूर्ण जगत् को कैसे वशीभूत कर सकते हैं। कामदेव का मन्त्री वसन्त ऋतु अशरीरी है, वह क्या कर सकता है। काम-युद्ध के लिए कामदेव का रथ मलय-पवन है—वह भी सामर्थ्यहीन है। किन्तु आपकी कृपा दृष्टि प्राप्त होने के कारण कामदेव और उसके सभी साधन जगद्विजय के लिए सामर्थ्यवान् बनते हैं।

** क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता[1]
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना।

---

१. स्तनभरा।

* इस श्लोक से यह सर्ववशीकरण मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषि भयं ते समुपस्थितं भयं मे भंज श्रीमति ध्रीं यक्रेयं हुसोः कमले क्लीं स्वाहा।

** इस श्लोक से शत्रु को पराभूत करने वाला यह ज्वालामालिनी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहो पुरुषिका ॥७॥

जिसकी पतली कमर में बँधी हुई सुन्दर करधनी की किंकणियां, घुंघुरू रुनझुन ध्वनि करते हैं, जिसकी देहयष्टि करिशावक के कुम्भ-स्थल के समान स्तनों के भार से झुकी हुई है, शरत्पूर्णिमा के चन्द्रमा-के समान देदींप्यमान जिसका मुखमण्डल है और चारों हाथों में धनुष, बाण, पाश, अंकुश चार आयुध धारण किए रहती हैं और जो प्रचण्ड, पराक्रमशोलता हैं, ऐसी हे मां गौरी, आप सदैव हमें दर्शन देती रहें, जिससे हम विजय, विभूति प्राप्त करते रहें।

* सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपवाटोपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोवननवति चिन्तामणिगृहे।
शिवाकारेमञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वाँ धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥८॥

हे मां, कल्पतरु वाटिका से घिरे हुए सुधासिन्धु के मध्य मणिद्वीप-में स्थित चिन्तामणि गृह है, उस गृह में अनुपम कला-कौशल से युक्त शिवाकार ऐसा सिंहासन है, जिसके चारों पायों में इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र स्थित हैं और आप उस शोभामय सिंहासन में भगवान् शंकर के अंक का आश्रय लेकर बिराज रही हैं। हे सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य प्रदान करने वाली भगवति, चिदानन्द लहरी के समान आपको बिरले लोग ही भजते हैं। आपकी भक्ति प्राप्त करने का सौभाग्य पूर्व जन्म के सुकृत से ही प्राप्त होता है।

मंत्र उद्धृत होता है—ॐ ज्वालामालिनी जुं ह्ं ह्सौं ज्वाला-मालिनि गं ठं ह्ं ह्ं भ्रां भ्रां रः सौं अं आं ॐ क्लीं ह्सौं श्रीं ह्रीं क्षुं ॐ क्लीं रः तं थं दं धं नं हूं हूं सः स्वाहा।

* इस श्लोक से त्रिपुरा गायत्री मन्त्र उद्धृत होता है—ॐ ऐं त्रिपुरां देवीं विद्महे क्लीं कामेश्वरीं धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* मही मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे[1] ॥९॥

हे मां, आप मूलाधार चक्र में पृथ्वी चक्र को भेदकर, उसके ऊपर मणि-पूर चक्र के दशदल में कामशक्ति के स्वाधिष्ठान चक्र के षट्दल चक्र में जो नाभि में हैं और जहां अग्नि रहती है— इस चक्र को भेदकर उसके ऊपर हृदय में द्वादश कमल दल वाले अनाहत चक्र में, वायु को भेदकर उसके ऊपर षोडशदल के विशुद्धि चक्र में आकाश तत्व को भेदकर उसके ऊपर दोनों भौहों के मध्य में द्विदल वाले ज्ञान चक्र में मन को भेदकर शरीरस्थ समस्त कुलपथ को भेदकर सहस्रदल कमल में भगवान् शिव के साथ विहार करती हैं।

** सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः[२]।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि[२] ॥१०॥

हे कुलकुण्डलिनी स्वरूपा कुहरिणि मां, आप चरण-संचरण इडा, पिंगला मार्ग के अन्तर्मध्य सुषुम्णा नाड़ी में अवतरित अमृत की धारा रूपी वर्षा की अखण्ड बौछारें बरसाती हैं तथा पराम्नाय कुलमार्ग जो उनके प्रकाश की विस्तार भूमि है, उसमें प्रवेश करके तथा समय-समय पर जो प्रपंचमय देह है, उसे अमृत से रसमय करती हुई भिन्न-भिन्न चक्रों से होकर अपने शरीर को सर्प के समान कंगन के आकार का करके नाभि कुलकुण्ड में सोती हैं।

---

* ** ये दोनों श्लोक योग साधना, कुण्डलिनी जागरण से सम्बन्धित हैं। इनसे मन्त्रों का उद्धार नहीं होता है।

१. विहरसि। २. सहसा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शंभोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रयश्च[1]त्वारिंशद्वसुदलकलास्रत्रिवलय[2]—
त्रिरेखाभिः सर्द्धं तव शरणकोणा[3] परिणताः ॥११॥

हे माँ, आपके चरण ४३ कोणों में फैले हुए हैं । अर्थात् ४३ कोण का श्रीयन्त्ररूपी आपका आसन है, जिसके मध्य में एक बिन्दु है जिसमें आप शंकर सहित विराजमान हैं । फिर चतुर्भुज यन्त्र में ४ श्रीकण्ठ आदि-शिव, उसके बाद पंचकोण यन्त्र में पार्वती आदि शिव की पांच युवतियाँ हैं, इसके उपरान्त नौदल में शंकर की शैलीपुत्री आदि ८ देवता हैं, तत्पश्चात् षोडशदल में श्री आदि १६ देवता हैं । उस प्रत्येक दल के बाद वृत्तरूप निर्मित है जो तीन वृत्तों से बनता है । फिर तीन रेखाओं वाला भूगृह है । इन सबको मिलाकर आपका आसन रूपी श्रीयन्त्र है । इस ४३ कोण युक्त श्रीयन्त्र रूप आसन के प्रत्येक कोण में आपके चरणों में आपके स्वरूप वाले देवता रहते हैं ।

** त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ॥१२॥

हे हिमगिरिकन्ये, तुम्हारे सौन्दर्य की, रूप की तुलना करने, वर्णन

---

* इस ग्यारहवें श्लोक से श्री चक्र श्रीयन्त्र बनता है ।

** इस श्लोक से जगन्मोहन मन्त्र उद्धृत होता है—
मन्त्र—ॐ ऐं यं क्लीं भुवनेश्वरि कल्प कल्प जगन्मोहय मोहय ऐं यं क्लीं स्वाहा ।

१. चतुश्चत्वारिंशद् । २. कलाब्जत्रिवलय । ३. चरणकोणाः, भवन-कोषाः ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने में ब्रह्म आदि देवता भी कठिनाई का अनुभव करते हैं तब यक्ष, गान्धर्व, किन्नर, मनुष्यगण कैसे समर्थ हो सकते हैं। आपके अनिन्द्य सौन्दर्य और अम्लान रूपलावण्य को देखकर देवाङ्गनाएँ भी मोहित हो जाती हैं। मुग्धा देवाङ्गनाएँ आपके रूप-लावण्य से मोहित होकर आपके स्थूल शरीर का साक्षात्कार करने के लिए अशक्य मन से शिव के समीप रहकर आपका साक्षात्कार करती हैं।

* नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं।
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचया
हठात् त्रुट्यात्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः॥१३॥

हे माँ, आंखों में कामकला के योग्य रस से रहित स्त्रियों को आकृष्ट करने वाले रसिक वचनों से स्त्रियों को सम्बोधित करने में अयोग्य समझे जाने वाले, संकोच करने वाले वृद्ध पुरुष पर भी यदि आपकी कृपा-दृष्टि पड़े तो जिनके जूड़े खुले हैं, जिनके स्तनों की चोली के बंधन टूट गए हैं, मदोन्मत्त होकर भागने से जिनकी कमर की करधनी खुल गई है और ओढ़नी खिसक जाने से जिनके सिर खुल गए हैं, ऐसी सैकड़ों युवतियाँ आपका कृपा-कटाक्ष प्राप्त उस वृद्ध पुरुष के पीछे पागल होकर दौड़ती हैं, उसके वशीभूत बनती हैं।

---

* इस श्लोक से भगमालिनी मंत्र का उद्धार होता है। यह मन्त्र स्त्री वशीकरण है।

मन्त्र—ऐं भगभगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगवाहे भगगुह्ये भग-योगिनि भगिनि पातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपिणि सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लेदय क्लेदय द्रावय आमोघं भगविद्ये क्षुभक्षोभे क्षुभियत सर्वसत्वे भगेश्वरि ऐं ब्लूं म्रों ब्लूं ह्लें ब्लूं हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि में वशमानय ह्रीं श्रीं नित्ये भगमालिन्ये स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्ठिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले ।
दिवि द्विःषट्त्रिंशन्मनसि च चतुःषष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ।।१४।।

मूलाधार चक्र में ५६ मणिपूर चक्र में ५२ हुताश अग्नि स्वाधिष्ठान चक्र में ६२, अनिल वायु चक्र में ५४, आकाश चक्र में ७० तथा भ्रूमध्य में ६४ कुल मिलाकर ३६० देवताओं के ऊपर आपके चरण कमल विराजते हैं। अर्थात् आपके मंच आसन के नीचे ३६० देवता रहते हैं। आपकी पादुका-पूजन करने से समस्त देवताओं का पूजन हो जाता है।

** शरज्ज्योत्स्नाशुभ्रां शशियुतजटाजूटमकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकपुटिकापुस्तककराम्[1] ।
सकृन्न त्वां[2] नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणा भणितयः ।।१५।।

हे मां, शरद् ऋतु की उज्ज्वल चांदनी के समान सुन्दर, धवल जटाजूट के मुकुट पर चन्द्र शोभायमान हो रहा है, सब प्रकार के त्रास से मुक्ति देने वाली आपके वरदहस्त की अभयमुद्रा, स्फटिकमणि की माला और पुस्तक धारण करने वाली आपके इस स्वरूप का दर्शन जिसे एक बार हो जाए और उसे आपको प्रणाम करने का सुयोग प्राप्त हो जाए तो उस व्यक्ति को मधु, दुग्ध, द्राक्षा से भी अधिक मधुर वाणी

---

* इस श्लोक में तंत्र योग की पादुका-पूजन पद्धति बताई गई है।
** इस श्लोक से वाग्देवता का स्वरूप वर्णन किया गया है। दूसरे सोलहवें श्लोक से इसका सम्बन्ध है, जिसमें वाग्देवता मंत्र निहित है।

१. ० घटिका; ० गुणिका। २. त्वा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हो जाती है और वह महान् विद्वानों, श्रीमंतों की मैत्री-प्रीति प्राप्त कर सकता है।

* कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम्।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतर शृंगारलहरी—
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ॥१६॥

आपके भक्तों में इने-गिने भक्तिभाव परायण सन्त हैं जो महाकवियों के अन्तःकरणरूपी कमलवन में बालसूर्य की अरुण कान्ति के समान आपके स्वरूप का ध्यान करते हैं। ऐसे ही भक्त भगवती सरस्वती की तरुणवर शृंगारलहरीयुक्त गम्भीर वाणी से विद्वत्सभाओं को रंजित करते हैं।

** सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि—
र्वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि संचिन्तयति यः।
स कर्त्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिसुभगै[1]—
र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ॥१७॥

हे जननि, जो भवतवाणी की अधिष्ठात्री सरस्वती तथा वाणी को उत्पन्न करने वाली वशिनी आदि अष्टवाग्देवियों सहित आपकी

---

* इस श्लोक से वाग्देवता का मंत्र उद्धृत होता है। यह सभामोहन मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ऐं त्रिपुरे देवि विद्महे ऐं कामेश्वरीं धीमहि ऐं तन्नो देवी प्रचोदयात्।

** इस श्लोक से मोहिनी विद्या उद्धृत होती है, जिसका मूल मंत्र यह है—

ॐ ब्लूं ह्लीं ब्जीं स्रं प्रीं स्लीं स्युं क्ष्मुं वशीन्याद्यष्ट देवताभ्यो नमः।

१. भङ्गिरुचिभिः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरन्तर आराधना करता है वह रससिद्ध महाकवि बनता है और चन्द्रमणि के छोटे-छोटे खंडों के समान निर्मल, दोषरहित, मनोहर, आकर्षक झरते हुए रसयुक्त वाक्यों का रचयिता एवं काव्य का आलोचक बनता है।

** तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीधरणिभि[1]—
दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां[2] स्मरति यः।
भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणंशालीमनयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः।।१८।।

हे माँ, जो व्यक्ति आपके तरुण अरुण रवि-किरणों के समान रक्तिम-कान्ति से व्याप्त अरुण रंग में डूबे हुए, छिपे हुए भूलोक एवं स्वर्गलोक का स्मरण, ध्यान करता है, तो स्वर्ग की अप्सराओं सहित मृगनयनी उर्वशी उसके वश में न हों—यह असंभव है।

* मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्द्धं[3] ध्यायेद् यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम्।
स सद्यः संक्षोभं भवति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम्।।१९।।

हे शंकरमहिषि, माँ, जो मनुष्य आपके मुख को बिन्दुरूप मानकर

---

* इस श्लोक से आकर्षणी विद्या उद्धृत होती है। मूल मंत्र यह है—
ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्सौः कामेश्वर्यै सुभगरूपिण्यै कटाक्षप्रभया सर्वं कम्पितं कुर्वन्त्यै नमः स्वाहा।

** इस श्लोक से मोहन, आकर्षण, वशीकरण करने वाला यह मंत्र उद्धृत होता है—
मन्त्र—ॐ क्लीं ह्सौः वनिता संक्षोभं नय नय कामेश्वर्यै नमः स्वाहा।

१. ० सरणिभिः। २. ०मरुणमणिग्राम। ३. हकारार्द्धं ध्यायेद्धर०।

७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस मुख के नीचे दो स्तन तथा उसके नीचे शिव का अर्द्धनारीश्वर अंग और उसके नीचे मन्मथकला का ध्यान करता है, उस पुरुष के लिए स्त्रियों को कामातुर बना देना अत्यन्त सरल होता है। ऐसा ध्यान करने वाला व्यक्ति सूर्य-चन्द्र रूपी जिसके दो स्तन हैं, उस त्रिलोकी स्वर्ग, पृथ्वी-पाताल को भी भ्रम में डाल देता है— वशीभूत कर लेता है।

* किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान्[1] दृष्टया सुखयति सुधासारसिरयो[2] ।२०।

हे माँ, जो मनुष्य अंग-अंग से प्रस्फुटित कान्ति-किरणों के समूह के साथ उत्पन्न अमृतरस को फैलाती हुई आपका चन्द्रकान्तमणि की मूर्ति के रूप में ध्यान करता है वह अमृत की धारा से युक्त होता है।

जैसे गरुड़ सर्पों का गर्व मिटा देता है, उसी प्रकार आपका ध्यान करने से सर्पदंश का विष तत्काल उतर जाता है तथा भयंकर ज्वर से तप्त मनुष्य पर दृष्टि डालते ही ज्वर-ताप शान्त हो जाता है।

** तडिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम्।

---

* इस श्लोक से मृत संजीवनी विद्या-मंत्र उद्धृत होता है।

मन्त्र—ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ह्सौः सर्वतत्त्वव्यापिनी जीव जीव प्राणप्राणे मृतामृते क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं हुं हुं मृतविद्रावणे प्राणतत्त्वे तत्त्वातितत्त्वे सर्वेश्वरि वेदगुह्ये ह स क ह ल गर्भे सावित्रि ऐं वाचंभरि कालि क्लीं जीवय जीवय स्वाहा।

** इस श्लोक से मोक्षदा विद्या का उद्धार होता है। मंत्र यह है—
ॐ ह स ह्रीं रः मोक्षदायै नमः स्वाहा।

१. ज्वरप्लुष्टम्। २. सुधाधारसिरया।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन[1] मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लाद लहरीम् ॥२१॥

जो निर्मल हृदय, पवित्र मन वाले महापुरुष, योगी, यति आपकी क्षीण विद्युत् रेखा की भांति पतली, सूर्य, चन्द्र, अग्नि स्वरूप तीनों लोकों में व्याप्त रहनेवाली, मूलाधार, मणिपूर आदि छह कमलों के ऊपर विशाल उपवनरूपी सहस्रदल कमल में स्थित कला—मूर्ति का ध्यान करते हैं, वे परम आह्लाद-अखण्ड आनन्द प्राप्त करते हैं।

* भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा—
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्य पदवीं
मुकुन्द ब्रह्मेन्द्रस्फुटमकुटनीराजितपदम् ॥२२॥

हे माँ, आप भवानी हैं, मुझ दास पर अपनी करुणामयी कृपादृष्टि प्रदान करें—जो आराधक इस प्रकार आपकी प्रार्थना करता है तो आप तत्काल अपना वह मुकुटयुक्त सायुज्य उसे प्रदान करती हैं, जिसको नीराजना करते हुए ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवताओं के मस्तक झुकते हैं।

** त्वया हृत्वा वामं वपुपरितृप्तेन[2] मनसा
शरीरार्धं शंभारपरमपि शङ्के हृतमभूत्।
यदेतत्[3] त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमकुटम् ॥२३॥

---

* इस श्लोक से श्री अन्नपूर्णा मंत्र का उद्धार होता है—
मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं लं अन्नपूर्णायै भवान्यै स्वाहा।
** इस श्लोक से शिव-शक्ति के साम्य रूप का मन्त्र उद्धृत होता है।
मन्त्र—ॐ हुं जुं सः अर्द्धनारीश्वररूपे ह्रीं स्वाहा।
१. मृदुतमनभावेन। २. ० तुष्टेन। ३. तथाहि त्वद्रूपं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, आपने भगवान् शंकर का बायाँ शरीर तो ले लिया किन्तु मुझे शंका है कि आपने उनका दाहिना शरीर भी ले लिया हैं, क्योंकि आपका सम्पूर्ण शरीर लाल-लाल अरुण रंग का है और तीन नेत्रों वाला है। स्तनभार से आपका शरीर झुका हुआ है और अर्द्धचन्द्र से सुशोभित जूड़ पर आप मुकुट धारण किए हुए हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि आपने अर्द्धनारीनटेश्वर का दूसरा नररूप भी ले लिया है।

* जगत् सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते[१]
तिरस्कुर्वन्नेतत् स्वमपि वपुरीशस्तिरयति।
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्लाति च शिव—
स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ॥२४॥

हे माँ, ब्रह्मा जगत् की रचना करते हैं, विष्णु जगत् का पालन करते हैं और रुद्र जगत् का संहार करते हैं। महाप्रलय के समय ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र को शंकर अपने अन्दर निहित कर लेते हैं। सदैव जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलयकाल में भी विद्यमान् रहने वाले शंकर आपके भृकुटिविलास मात्र से जगत् पर अनुग्रह करते हैं और पुनः जगत् की सृष्टि करते हैं।

** त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव[२] शिवे
भवेत् पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।
तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ॥२५॥

---

* इस श्लोक में कोई मंत्र गर्भित नहीं है।

** इस श्लोक में पादुकापूजन पुरश्चरण का मंत्र गर्भित है—
मन्त्र—ॐ लं ळं ह्सौं ह्स्लीः ह्सौंः त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यो नमः।

१. ० रीशः स्त्यगयति। २. ० जनितानामपि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे शिवे, सत्वोगुण, रजोगुण, तमोगुण इन तीन गुणों से आपके द्वारा उत्पन्न किए हुए ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र—इन तीन देवताओं की पूजा आपके चरणों की पूजा करने से ही हो जाती है, क्योंकि ये तीनों देवता आपके रत्नसिंहासन के पास जिसमें आपके चरण रहते हैं, अपने-अपने हाथों को अपने-अपने मुकुटों तक ऊपर उठाए हुए हाथों को जोड़े हुए सदैव खड़े रहते हैं। आपकी पूजा करने से ब्रह्मा, विष्णु, महेश के मुकुट आपके चरणों में झुके रहते हैं अतः उनकी भी पूजा हो जाती है।

* विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।
वितन्द्री[1] माहेन्द्री विततिरपि संमीलति दृशां[2]
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ॥२६॥

हे सती माँ, इस महासंहार में—महाप्रलय में ब्रह्मा और विष्णु भी मृत्यु प्राप्त करते हैं। यम और कुबेर का भी निधन होता है। सतत जाग्रत रहने वाली इन्द्र की दृष्टियों का विस्तार भी बंद हो जाता है। केवल आपके पति सदाशिव ही एक ऐसे हैं जो महाप्रलय में आपके साथ अजर-अमर होकर क्रीडारत रहते हैं—यह आपका ही प्रताप है।

** जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना[3]
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदशा[4]
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥२७॥

** इस श्लोक से महाकाली का यह बीजमंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्सौं ऐं ह्सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं जूं क्लीं सं लं श्रीं रः अं आं इं ईं…(उं तः पं पर्यंत) सं हं ळं क्षं स्वाहा।

* इस श्लोक में खेचरी मुद्रा की साधना निहित है। जिसके विधि-प्रयोग आगम ग्रंथों में हैं।

१. वितन्द्रा। २. संमीलितदृशा। ३. विरचनं। ४. दृशा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ आप के गुण-कीर्तन के रूप में मेरा बोलना ही मेरा जप है। आप के सेवा के निमित्त मेरा हस्तशिल्प, काम-काज करना सब कुछ आपका मुद्रारूप होता है और मेरा चलना-फिरना आपकी प्रदक्षिणा रूप है। मेरा खाना-पीना आपके यज्ञ की आहुति बनता है। आपके चरणों में बैठना, शयन करना आपको प्रणाम करना है। निदान मेरे जो भी प्रवृत्ति, व्यवसाय, काम-काज, बोलना, उठना, बैठना, चलना तथा कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों के जो भी क्रियाकलाप हैं वे सब आपकी सेवा के निमित्त हैं।

* सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं[1]
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः।
करालं यत् क्ष्वेडं कवलितवतः कालकलना
न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ॥२८॥

हे माँ, भयभीत करने वाली वृद्धावस्था और मृत्यु को हरने वाले अमृत को पीने पर भी ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं का नाश महाप्रलय काल में हो जाता है तथापि समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी ज्वाला से दग्ध, आकुल-व्याकुल बनाने वाले कालकूट विष का पान करके भी आप के पति शिव यथास्थित रहे, विष की छाया उन्हें छू भी न सकी। यह आपके सतीत्व का ही प्रभाव था।

---

* इस श्लोक में मृत्युहरी विद्या गर्भित है।

मृत्युहरी विद्या— ॐ यं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं
एं ऐं ओं औं अं आः अमृतंभरि स्वाहा।

१. ०हरणीं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम् ।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमभियातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ।।२९।।

हे मां, जिस समय ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र अपने अपने मुकुट उतार कर भूमि पर रख कर जब आपको प्रणाम करते हैं, उसी समय आपके पति शंकर जी आपके मणिमय गृह में प्रवेश करते हैं तो आपकी दासियां भगवान् शिव से कहती हैं – हे देव, सँभल कर चलें, ब्रह्मा के मुकुट को ठोकर न लगे, विष्णु का तीक्ष्ण नोकयुक्त मुकुट सामने रखा है, इससे हटकर चलें, नहीं तो ठोकर लग जाएगी । इन्द्र का भी मुकुट वह है आपके चरणों के सम्मुख धरा है उसे बचाकर परे हट कर चलें । देवि ! आपकी दासी यक्षिणियों की यह वाणी विजयिनी है ।

** स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितो
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः ।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतो
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ।।३०।।

आदिमध्यान्तरहित मां, आपके शरीर से उत्पन्न चौदह ब्रह्मांडों में प्रकाशित अणिमा आदि अष्टसिद्धियों के साथ रहने वाली आपकी सेवा

---

* इस श्लोक में अन्नपूर्णा मन्त्र गर्भित है, उसका उद्धार इस प्रकार है—

मन्त्र—ॐ ह्सौः पं फं वं भं मं रः भवानि स्वाहा ।

* * इस श्लोक से अणिमादि सिद्धियों को देने वाले मन्त्र का उद्धार होता है ।

मन्त्र—ॐ नित्यक्लिन्ने कं खं गं घं ङं अणिमादि सिद्धिप्रदे स्वाहा ।

१. वैरिञ्च्यम् ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने की भावना मनुष्य रखता है, वह तीनों लोकों की समृद्धि को तृणवत् समझता है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री अथवा पुरुष की आरती प्रलय की अग्नि ज्वालाएँ भी उतारती है।

* चतुःषष्ठया तन्त्रैः सकलमतिसंधाय[1] भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः[2] पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना—
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ॥३१॥

हे माँ, पशुपतिनाथ भगवान् शिव ने लोककल्याणार्थ ६४ यन्त्र दिए हैं किन्तु उन यन्त्रों में बताई गई सिद्धि देने के लिए शंकर जी स्वयं असमर्थ हुए तो उन्होंने इन तन्त्रों की स्थापना के लिए जब आपसे बारंबार अनुरोध किया तब कृपा करके आपने समर्थ पुरुषार्थों से युक्त मनोवांछित सिद्धियां प्रदान करने वाले एक स्वतन्त्र तन्त्रशास्त्र का अवतरण किया, उसके बाद ही शिवजी जगत् को दिए गए ६४ मंत्रों की सिद्धि देने में समर्थ हुए।

** शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परमारहरयः।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ॥३२॥

हे माँ, तीन हृल्लेखा पराप्रकृति के साथ एक के बाद एक जोड़ने से हमारे हृदय में बसने वाली आपके स्वरूप को प्रकाशमय करने वाले ये

---

* इस श्लोक से ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्सौः चतुः षष्ठियोगिनीभ्यो नमः मंत्र उद्धृत होता है।

** इस श्लोक में रहस्य विद्या निहित है। तीनों हृल्लेखा मंत्र श्लोक में उद्धृत कर दिए हैं।

१. अभिसंधाय। २. प्रसभपरतन्त्रैः; प्रसवपरतन्त्रैः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्षर आपके नाम के अवयव रूप अंग-प्रत्यंग बनते हैं। ये अक्षर इस प्रकार हैं—शिव ह वर्ण, शक्तिरूप वर्ण श कार, काम क कार क्षिति ल कार यह प्रथम हृल्लेखा। तदनंतर रवि हकार, फिर शीत किरण सकार, हंस ह कार यह द्वितीय हृल्लेखा। पुनः शुक्र ल कार, स्मर क कार, मार क कार, हरि ल कार, यह तृतीय हृल्लेखा। इस प्रकार ॐ ह श क ल ह्रीं स्वाहा प्रथम हृल्लेखा। ॐ ह स क ह क्लीं स्वाहा द्वितीया हृल्लेखा। ॐ ल व क ल ह्रीं स्वाहा तृतीया हृल्लेखा। इन तीनों हृल्लेखाओं के अन्त में हे जननि, आपके बीजाक्षर जोड़ते हुए आपके भिन्न-भिन्न अंग-प्रत्यङ्ग बनते हैं।

* स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ[1] तव मनो—
निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति[2] त्वां चिन्तामणिगुणनिवद्धाक्षबलयाः[3]
शिवाग्नौ[4] जुह्वन्तः[5] सुरभिघृतधाराहुतिशतैः ॥३३॥

हे नित्ये, हे वर्णात्मिका अक्षरब्रह्मस्वरूपिणि मंत्रमयी माँ, अपार-वैभवशाली भोगविलास में निरन्तररत तथा जिन्होंने चिन्तामणि की अक्षमाला अपने मणिबन्ध में धारण किए हैं और पवित्र सुरभि गाय के घी की सैकड़ों धाराओं से मन्त्रोच्चारण पूर्वक अग्नि में आहुति दिया-करते हैं—ऐसे आप के उपासक तीन हृल्लेखा मंत्रों के साथ काम बीज क्लीं योनि बीज ऐं एवं लक्ष्मी-बीज श्रीं को जोड़कर आपके मूल-मंत्र का जप तथा होम करते हैं तो वे मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं।

---

* इस श्लोक में भोगवती भोगदाविद्या की साधना है, इससे यह मंत्र उद्धृत होता है।

मन्त्र—ॐ ह श क ल क्लीं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।
ॐ ह स क ल ऐं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।
ॐ ल व क ल श्रीं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।

१. ०माद्ये। २. जयन्ति। ३. ०क्षरलयः। ४. शिवाग्नौ। ५. जुह्वन्तः सुरभि०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* शरीरं त्वं शंभोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम्[1] ।
अतः शेषः शेषोत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः संबन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः[2] ॥३४॥

हे भगवति माँ, आपके शरीर में चन्द्र और सूर्य युगल स्तन के रूप में विराजते हैं । आपका ऐसा शरीर भगवान् शंकर का ही शरीर है और शिवजी का शरीर आपका शरीर है । आपकी आत्मा शंकर जी की ही आत्मा है, यही कारण है कि महाप्रलय होने पर आपके साथ केवल शिवजी ही रहते हैं, इसीलिए उन्हें 'शेषी' कहा जाता है । आप दोनों की एकरूपता से, समरसता से और परम आनन्द से युक्त होने से आप दोनों (शिव-शक्ति) का सम्बन्ध अखण्ड है ।

** मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।
त्वमेव स्वामात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन विभृषे ॥३५॥

हे शिव महिषि माँ, जगत् में मानव-शरीर के रूप में स्वयं को प्रकट करने के लिए शरीरगत सभी तत्त्वों के रूप में आप स्थित रहती हैं । जगत् के शरीर में ज्ञान तत्व युक्त 'मन' आप ही हैं । शरीरगत आकाश

---

* इस श्लोक से अमृतार्णववासिनीतुरीयाविद्या का मन्त्र उद्धृत होता है—
मन्त्र— ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरूपिण्यै ते नमः ।

** इस श्लोक से मातृकाक्षरों द्वारा महात्रिपुरसुन्दरी की उपासना का मन्त्र उद्धृत होता है—
मन्त्र— ॐ म ह य र ल व ह्रीं सर्वमातृका विश्वात्मिके स्वाहा ।

१. भवात्मान० । २. ०पदयोः ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्त्व आप ही हैं। शरीरगत वायु तत्त्व, अग्नि तत्त्व, जल तत्त्व तथा पृथिवी तत्त्व आप ही हैं। प्रत्येक तत्त्व में आप परिणाम रूप में निहित रहती हैं। अतः अन्य कुछ भी आप से भिन्न नहीं है जो जगत् के शरीर को धारण कर सके। आप सत्-चित् आनन्द रूप हैं और अपनी आत्मा को जगत्स्वरूप धारण करती हैं।

* तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शंभुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता।
यमाराध्यम्[1] भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरातङ्के[2] लोको निवसति हि भालोक भवने[3] ॥३६॥

हे माँ, आप के आज्ञा चक्र में निवास करने वाले सैकड़ों सूर्य की प्रभा को प्रकाश देने वाले, जिससे आपका परम स्वरूप सम्पृक्त है और आप के पक्ष की सेवा करने से ही परमात्स्वरूप सदाशिव को मैं प्रणाम करता हूँ, जो सूर्य, चन्द्र, अग्नि द्वारा भक्तिमात्र से आराधना करने पर विषय-गोचर नहीं है, जो ज्ञान रूप हैं, जहाँ अन्य कोई प्रकाश नहीं पहुँच पाता है, जिनके स्वयं प्रकाश से विश्व प्रकाशमान है—ऐसे भुवनलोक में—विश्वलोक स्थित है।

---

* इस श्लोक से आज्ञाचक्र द्वारा शिव-शक्ति की उपासना का यह मंत्र उद्धृत होता है।
मन्त्र—ॐ ह्रीं हूं ह्रीं चैतन्याय नमः।

१. ०यामाराद्धं। २. निरालेकेऽल्लोक। ३. मालोकमुवने।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं[1]
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम्[2] ।
ययोः कान्त्या यान्त्या शशिकिरणसारूप्य सरणिं[3]
विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती ॥३७॥

हे माँ, आपके विशुद्धि चक्र में स्थित शुद्ध स्फटिकमणि के समान निर्मल आकाश के उत्पादक भगवान् सदाशिव की मैं आराधना करता हूँ। और सदाशिव से समरसता रखने वाली आपकी सेवा करता हूँ। जिस तरह चकई-(चकोरी) चन्द्र-ज्योत्सना में विहार करती है, उसी प्रकार चन्द्र-किरणों के समानरूप वाली सदाशिव एवं शक्ति की कान्ति से जिसके अन्तरतम का अन्धकार मिट गया है—ऐसी त्रिलोकी जगती आनन्द करती है।

** समुन्मीलित्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति—[4]
र्यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमद्भ्यः पय इव ॥३८॥

जैसे मानस सरोवर का हंस-युगल पद्म-पराग की सुगन्धि से मुग्ध

---

* इस श्लोक से विशुद्धि चक्र द्वारा शक्ति-शिवाराधना के मंत्र का उद्धार होता है।
मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं इं ईं (से लेकर क्ष मातृकाक्षर तक)···
क्षं सर्वात्म तत्वाय नमः।

** इस श्लोक से अनाहत चक्र द्वारा पार्वती-परमेश्वर की संयुक्त साधना का मन्त्र उद्धृत होता है।
मन्त्र—ॐ लं लं ह्सीं ह्ल्लीं ह्सौं त्रिपुरसुन्दरीपादुकाभ्यो नमः।

१. व्योम सदृशं । २. समान व्यसनिनीम् । ३. ०सरणेः; ०सरणी । ४. परिणति । ५. समाधत्ते ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है, सुसंस्कृत वाणी बोलता है और नीर-क्षीर-विवेक रखता है, उसी प्रकार उमामहेश्वर रूपी हंस-युगल मुखरित होती हुई विद्या में, ज्ञानरूप पद्म-पराग गन्ध में मुग्ध होकर योगियों के मन में रमण करता है, जिनका स्वरूप अनिर्वचनीय है, जिनके मुख से अठारह प्रकार की विद्याएं प्रादुर्भूत हुई हैं—ऐसे जगतः पितरौवन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।

* तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं[1]
तमीडे संवर्तं जननि[2] महतीं तां च समयाम्।
यदा लोके लोकान् दहति महति क्रोधकलिते[3]
दयार्द्रा[4] यद्दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति[5] ॥३९॥

हे मां, आपके स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित अग्नि का आश्रय करने वाले संवर्तरूप रुद्र की मैं स्तुति करता हूँ और अनन्त ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति समया महामाया, विद्यारूप आपकी स्तुति करता हूँ। यदि प्रचंड क्रोध से व्याप्त संवर्ताग्नि रूप रुद्र की दृष्टि लोगों को तपाती है तो आप की कृपा-दृष्टि लोगों को सुख, शान्ति, शीतलता प्रदान कर जीवन प्रदान करती है।

** तडित्वन्त शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम्।
तव[6] श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणम्
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं[7] त्रिभुवनम् ॥४०॥

---

* इस श्लोक में संवर्त अग्नि मंत्र का उद्धार होता है।
मन्त्र—ॐ हलं हसौं ह्ल्लीं हसौं ऐं ह्रां ह्रीं ब्लूं सः।

** इस मन्त्र से दुर्भिक्ष में अन्नोत्पादिनी वृष्टि कराने वाली मेघवती विद्या का उद्धार होता है।
मन्त्र—ॐ लं हः ह्रीं रः ऐं हुं सोः रः मेघवती विद्यायै स्वाहा।

१. नियतं। २. जननीं। ३. ०कलिले। ४. दयार्द्रा या दृष्टिः; दयार्द्रा भिर्दृग्भिः। ५. रचयसि। ६. तमःश्यामं। ७. स्मरमिहिर०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे मां, आप अपनी अन्धकारनाशिनी शक्ति-स्फुरणा से बिजली की भांति चमक रही हैं तथा रत्नाभरणों से अलंकृत आपकी देह-यष्टि इन्द्रधनुष की भांति प्रदीप्त है। आपके मणिपूर-चक्र में स्थित रुद्र-रूप सूर्य के ताप से तप्त तीनों लोकों को श्याम मेघ बन कर बरसने वाली आपकी शान्तिदायिनी शरण ग्रहण करता हूँ।

* तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
भवात्मानं[1] वन्दे नवरसमहाताण्डवनटम्।
उभाभ्यामे[2]ताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम् ॥४१॥

हे मां, जब आप लास्य नृत्य कर रही थीं, उस समय आपके अंगों से नवरसों से पूर्ण 'समया' नाम की शक्ति उत्पन्न हुई। उस समयाशक्ति के साथ आपके मूलाधार चक्र में निवास करने वाले ताण्डव-नृत्य कुशल रुद्र के आत्मारूप महादेव जी को मैं प्रणाम करता हूँ। यह सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड आपकी कृपा से उसी जगज्जननी समयाशक्ति और जगत्पिता शंकर से उत्पन्न हुआ है। आपकी ही कृपा से शिव-शक्ति विश्व को उत्पन्न करने में समर्थ हुए हैं।

** गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः।
स नीडे यच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् ॥४२॥

---

* इस श्लोक में विश्व के उत्पत्तिरूप कामराज बीज (क्लीं) का उद्धार होता है। यह बीजाक्षर अपुत्रियों को पुत्र प्रदान करता है।

** इस श्लोक से निधिप्रापण विद्या का उद्धार होता है। जो निधियां प्रदान करता है।

मन्त्र— ॐ गं घं ङं चं छं जं झं नं टं सर्वेभ्यो नवनिधिभ्यो नमः।

१. शिवात्मनं वन्दे। २. ०मुभयविधि। ३. किमिदमिति वध्नाति।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे हिमगिरिसुते, जो मनुष्य आपके माणिक्य, नीलम जड़े हुए स्वर्णमुकुट का ध्यान करता है, उसे ऐसा प्रतीत होता है मानो मुकुट में निहित चन्द्र-ज्योत्स्ना का प्रकाश मुकुट को आलोकित करता है, मालारूप वृक्षों की छाया में चन्द्रमा की किरणों के स्थूल-सूक्ष्म शशि का भ्रम वन में पैदा होता है। आपके ऐसे मुकुट का जो ध्यान करता है वह धन, रत्न समृद्धि प्राप्त करता है।

* धुनोति ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं—
घनस्निग्धश्लक्ष्णं[1] चिकुरनिकुरम्बं तव शिवे।
यदीयं सौरभ्य सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन् मन्ये बलमथनवाटीविटपिनाम् ॥४३॥

हे शिवे, आप के शरीर का सौन्दर्य बाहर निकल कर खिले हुए कमल-वन के समान है। स्नेह स्निग्ध भलीभाँति गुथी हुई आपके रेशमी बालों की चोटियों से बाँधा गया जूड़ा हमारे पाप, शाप, ताप और अज्ञान-अण्धकार को दूर करे। आपके जूड़े की स्वाभाविक सुगन्धि प्राप्त करने के लिए मानों नन्दनवन के कल्पतरु पुष्प बसे हुए हैं।

** वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर—
द्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम्।
तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी—
परीवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः ॥४४॥

---

* इस श्लोक से सर्वह्लादिनी विद्या का उद्धार होता है।
मन्त्र—ॐ ऐं ह स क ल, ह स क ल ह्रीं ह्रीं ह्रीं ईं सः अं सर्वाम्नायै स्वाहा।

** इस श्लोक से बन्दी (केशी) मोचनी विद्या का उद्धार होता है।
मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं बन्दी देव्यै नमः।

1. ०घनस्तिग्धं श्लक्ष्णं; घनस्तिग्धं श्लक्ष्णं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, आपके काले कजरारे केशों में बँधे हुए जूड़े के प्रबल भार की कृष्णकान्ति से घिरे हुए अरुणोदय काल के सूर्य की किरण के समान आप की माँग के मध्य की सिन्दूर रेखा सुशोभित हो रही है। आपके प्रदीप्त मुख की कान्ति-तरंगों के प्रवाह की भाँति आपकी सिन्दूर भरी माँग हम सबका कल्याण करे।

* अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं[२] ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम्।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति[३] स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ॥४५॥

हे माँ, भ्रमर-शिशुओं के समान अत्यन्त कृष्ण वर्ण, घुंघराले केशों से सुशोभित आपका मुख कमलपुष्प की कान्ति को भी विलज्जित करता है। कमल-केशर की द्युति के समान आपकी दन्तावलि मन्द मुस्कुराने पर अतीव सुन्दर लगती है। आपके सुन्दर, सुगन्धित मुखकमल को देखकर शंकर जी के नेत्ररूपी भ्रमर मुग्ध-विमोहित हो जाते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि आपका मुख देखकर कामदेव को भस्मीभूत करने वाले भगवान् शिव कामविह्वल हो जाते हैं।

** ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यद्—
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम्[४]।
विपर्यासन्यासादुभयमपि संभूय च मिथः[५]
सुधालपस्यूतिः[६] परिणमति राकाहिमकरः ॥४६॥

---

* इस श्लोक से वशीकरण मंत्रराज उद्धृत होता है।
मंत्रराज—ॐ ऐं क्लीं ह्सौः हुं रं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं ऐं ओं औं अं अः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा।

** इस श्लोक से सौभाग्यसुन्दरी का मन्त्र उद्धृत होता है।
मन्त्र—ॐ ह्रीं क्लीं ह्सौः सौभाग्यसुन्दरी स्वाहा॥

१. ०दलिकुलहसश्रीभि। २. परीतं यद्वक्त्रं तव हसति। ३. स्यरमथन ४. मकुटशशिखण्डस्यशकलम्। ५. ०दुभयकृत संधानमयितः। ६. सुधालेप स्फूर्तिः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, आपकी कान्तिमयी छवि से निर्मल बने हाव-भाव, भ्रूभंग, सीत्कृति, आकुंचन, मोक्ष आदि सौन्दर्य के सभी आलम्बनों से सुशोभित आपका ललाट ऐसा सुशोभित हो रहा है—जैसे आपके मुकुट में अंकित अर्द्धचन्द का दूसरा भाग हो। मुकुट में निहित अर्द्धचन्द्र तथा अर्द्धचन्द्र के समान आपका ललाट—इन दोनों को मिलाने से अमृत से परिपूर्ण कान्तियुक्त पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान सुशोभित हो रहा है।

* भ्रुवौर्मध्ये किंचिद् भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम्[1]।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः[2]
प्रकोष्ठौ मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे ॥४७॥

तीनों लोकों के विघ्न, भय, कष्ट और दुःख को विनष्ट करने वाली हे माँ, भगवती उमा, आपके नेत्रों और भृकुटियों में कामदेव का धनुष है—ऐसा मैं मानता हूँ। कामदेव का वह धनुष ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों आपके काले कजरारे नयनों से विरचित है और बाण धारण किए हुए उस धनुष को कामदेव अपने बाएँ हाथ से इस तरह पकड़े हुए हैं, जिसका मध्य भाग कुछ आवरणमय हो गया है और बाईं मुट्ठी से दबाया गया है।

** अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया[3]।

---

* इस श्लोक से मन्त्रचूडामणि ग्रन्थ के आधार पर शत्रुक्षयंकरी विद्या का उद्धार होता है। मन्त्र इस प्रकार है —
ॐ ऐं क्लीं ह्सौं सर्वसंक्षोभणि सर्वविद्रावणिरिपुगणं कवलय कवलय हुं ब्रूं हः ठः प्रभञ्जने स्वाहा।

** इस श्लोक से लघिमा और गरिमा-सिद्धि का मन्त्र उद्धृत होता है। मन्त्र— ॐ ऐं क्लीं सौः ईशित्व प्राकाम्येच्छा पूरणाये सर्वकामाप्याये स्वाहा।

१. धृतशरम्। २. रतिपतिः ३. नायकमभुं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीया[1] दृष्टिस्तेदरलिलतहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ॥४८॥

हे माँ, आपके तीन नेत्रों में से दाहना नेत्र सूर्य स्वरूप है और सूर्य उसका अधिपति है। उस नेत्र से दिन का सृजन होता है। बाईं आंख का अधिपति चन्द्रमा है, इस आंख से रात का सृजन होता है और आपकी स्वर्णकमल के समान अर्द्धविकसित अग्निस्वरूपा तीसरी आंख जो मध्यावधि में है, वह लाल रंग की सन्ध्या उत्पन्न करती है।

* त्रिशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधारापारा किमपि मधुरा भोगलतिका।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ॥४९॥

हे माँ, आपकी विजयिनी, विशाल दृष्टि-समस्त ब्रह्माण्ड में फैली हुई है। प्रत्यक्ष कान्तिमती यह दृष्टि विकसित कमल पुष्पों को विलज्जित करती है। आपकी करुणामयी, कल्याणी दृष्टि की कृपाधारा का कोई पारावार नहीं है वह अनेक नगरियों में विस्तृत उन नगरियों में निहित रहस्यों को सिद्ध करती है। ऐसी आपकी मधुर, भोगविलासिनी, लता के समान अनेक मनोवांछित वैभव विलासों को सदैव देने वाली, भक्तों की रक्षा करने वाली दृष्टि विजय प्राप्त करती है।

** कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
अमुञ्चन्ती दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरला—
वसूयासंसर्गादलिकनयनं[2] किंचिदरुणम् ॥५०॥

हे माँ, आपकी महिमा में कवियों द्वारा रचित स्तुति-पुष्पों के हार से निकलती हुई सुगन्धि आपके गुण-कीर्तन रूपी सुगन्धि से युक्त दोनों

---

१. दृष्टिसो। २. वसूयासंपर्काद०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कानों को आपके कटाक्ष नहीं छोड़ते, वे कानों के आसपास घूमते रहते हैं, क्योंकि वे कटाक्ष कवियों की वाणी में निहित नए-नए रसों के स्वाद से आनन्दविभोर हैं और इधर-उधर डोलने से भ्रमर-शिशुओं के समान प्रतीत होते हुए दोनों कटाक्षों की कवियों द्वारा प्रशंसा होने से आपका तीसरा अधखुला नेत्र ईर्ष्या से लाल हो जाता है, क्योंकि वह कान के समीप रहतो है ।

* शिवे श्रृंगारार्द्रा तदितरजने[1] कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते[2] विस्मयवतो ।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्य जननी[3]
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि[4] दृष्टिः सकरुणा ॥५१॥

हे माँ, आपकी दृष्टि मेरे ऊपर करुणामयी, कृपामयी हो, आपकी दयामयी दृष्टि भगवान् सदाशिव के लिए श्रृंगार पूर्ण एवं कामवर्द्धक है । वह दृष्टि भगवान् शंकर के अतिरिक्त अन्य पुरुषों के प्रति न मोहित होने वाली है, किन्तु गंगा पर क्रोध करने वाली है । और भगवान् शिव के त्रिपुरासुर आदि के वध आदि चरित्रों से विस्मित होने वाली है । शंकर के गले में लिपटे भुजंगों से भयभीत होने वाली है तथा कमल पुष्पों को विनिन्दित करती है एवं प्रातःकाल अधरों पर दन्तक्षत देखने से सखियों द्वारा किए गए मन्दहास्य वाली है ।

** गते कर्णाभ्यर्णं गुरुत इव पक्ष्माणि दधतो
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले ।

---

* इस श्लोक में नित्याकुलसुन्दरी का यह मन्त्र निहित है—
ॐ ऐं क्लीं सौः कुलसुन्दरी नित्या सकह सकल रूपे स्वाहा ।

** इस श्लोक में नित्य क्लिन्ना का यह मन्त्र गर्भित है—
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ।

१. तदितरमुखे । २. गिरिशनयने । ३. ० सौभाग्यजननी । ४. जयति ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ॥५२॥

हे माँ, हिमालय के कुल-मुकुटमणि के समान आभूषणों की भाँति आपके दोनों विस्फारित नेत्र विशाल हैं और गौरव से पलकों को धारण करने वाले हैं। त्रिपुरारि शंकर के चित्त में निहित शान्त रस को नष्ट कर श्रृङ्गार रस उत्पन्न करने वाले आपके नेत्र कानों तक खिंचे हुए कामदेव के वाण के समान प्रतीत हो रहे हैं।

* विविक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया[1]
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते।
पुनः स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजः सत्वं विभ्रत्तम इति गुणानांत्रयमिदं ॥५३॥

हे शंकर प्रिये माँ, आपके तीनों नेत्र सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण धारण किए हुए-से प्रतीत हो रहे हैं। ये श्याम, श्वेत, रतनार आपके त्रिनयन महाप्रलय में लीन हुए ब्रह्मा, विष्णु, महेश को पुनः उत्पन्न करने के लिए श्वेत, रक्त, नील रंग धारण करते हैं। नीलकमल के समान प्रकाशमान हो रहे आपके तीनों नेत्र मानों त्रिदेव को उत्पन्न करने के निमित्त ही तीन गुणों को धारण करते हैं।

---

* इस श्लोक से महाज्वालामालिनी का यह मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत-संहारकारके जातवेदसि ज्वल ज्वल विज्ज्वल विज्ज्वल प्रज्ज्वल-प्रज्ज्वल हुं फट् स्वाहा।

१. ० नीलाञ्जनतया; ० नीलाम्बुजरुचा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि संभेदमनघम्[1] ॥५४॥

भगवान् शिव को स्वहृदय समर्पित करने वाली हे माँ, रक्त, श्वेत, श्याम कान्ति वाले आपके तीनों नेत्रों से युक्त संसार में आपकी सेवा-भक्ति विस्मृत करने वाले हम लोगों को पवित्र करने के लिए आपने शोणनद के रक्त वर्ण का, गंगा के श्वेत वर्ण का और यमुना के कृष्ण वर्ण का त्रिवेणी-संगम अपने तीनों नेत्रों में अवतरित किया है ।

** निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ॥५५॥

हे पर्वतराजपुत्री माँ, आपके नेत्र बंद हो जाने पर सृष्टि का प्रलय होता है और खुलने पर सृष्टि का उद्भव होता है ऐसा संतों, महापुरुषों की मान्यता है, किन्तु मेरी धारणा तो यह है कि आपके नेत्र खुलने से उत्पन्न हुई विश्वसृष्टि की रक्षा के निमित्त ही आप अपने नेत्र खुले ही रखती हैं ।

---

* इस श्लोक से वेदगर्भा गायत्री का मंत्र अवतरित होता है—
ॐ ह्रौं ह्रीं ऐं ईं सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् वेदगर्भे भगवति स्वाहा ।

** इस श्लोक में कोई मंत्र गर्भित नहीं है ।

१. ०मनघे० ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

** तवापर्णे कर्णेजपनयनपैशून्यचकिता
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाः शफरिकाः ।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकपाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ।।५६।।

हे माँ, अपर्णे, कहीं आपके नेत्र कानों से चुग़ली न कर दें कि हम मछलियों के सदृश हैं—इस आशंका से भयभीत होकर मछलियाँ सदा जलमग्न रहती हैं और जो कमलवासिनी लक्ष्मी हैं वह भी प्रातः-काल कमल के पत्र द्वार उद्घाटित कर बाहर निकल जाती हैं और रात होते ही कमल पंखुड़ियों को बंद कर कमल में निवास करती हैं ।

* दृशां द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ।।५७।।

हे माँ, आप अपनी अर्द्धविकसित नीलकमल के पुष्पों की पंखुड़ियों के समान कान्ति वाली तथा विश्व भर में विस्तृत कृपादृष्टि से हमें सराबोर कर दें। हे माँ, जैसे चन्द्रमा जंगल में, नगर में, कुटी में, महलों-में समान भाव से अपनी चन्द्रिका वितरित करता है, और उसकी कोई हानि नहीं होती, उसी प्रकार यदि आप अपनी कृपादृष्टि मुझ पर करती हैं तो मैं धन्य हो जाऊँगा और आपका कुछ बिगड़ेगा भी नहीं ।

** इस श्लोक में अपर्णा विद्या मंत्र गर्भित है—
ॐ हूं जुं सः अनिमेषायै अपर्णायै ईश्वरीविद्यायै स्वाहा ।

* इस श्लोक से शाकम्भरी मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ क्लीं करुणामये जीवय जीवय शाकम्भरि भगवति स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलस—
न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसंधानधिषणाम् ।।५८।।

हे माँ, धनुष के कमान के आकार का आपके कानों तथा नेत्रों का जो वक्र मध्यभाग है वह किसे नहीं मोहित कर सकता ? गण्डस्थल में कमान के आकार वाला कान के मार्ग अपांग को सुशोभित करते हुए नेत्रों के कोर का जो विस्तार है, वह धनुष पर चढ़ाए गए बाण जैसा प्रतीत होता है ।

** स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलितताटङ्क युगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम् ।
यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये स्वं जितवते ।।५९।।

हे माँ, आपका मुख कामदेव के रथ के समान शोभायमान हो रहा है । दोनों कानों में पहने हुए कुण्डलाकार आभूषणों से देदीप्यमान दर्पण के समान प्रतीत होते हुए गण्डस्थल पर प्रतिबिम्ब को लेकर जैसे चार चक्र हों तथा सूर्य चन्द्र रूपी नेत्रों के आधार वाले पृथ्वी रूपी रथ के समान मुख पर विराजमान होकर भगवान् शंकर से ईर्ष्या करते हैं । अर्थात् आपके मुख रूपी रथ पर बैठने से शिव कामदेव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं ।

---

* इस श्लोक से वज्रेश्वरी त्रिपुरा मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्रेश्वरी पुरनिवासिनि मम कार्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

** इस श्लोक से यह शत्रुस्तम्भकरी विद्या उद्घाटित होती है —
ॐ ह्रीं श्रीं ओं हुं रः क्रों इले स्तम्भिनि हुं फट् स्वाहा ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* सरस्वत्या: सूक्तोरमृतलहरीकौशलहरी:
पिबन्त्या: शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरतम् ।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरस: कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारै: प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ।।६०।।

हे शर्वाणी मां, अमृत से भी अधिक मधुर सरस्वती देवी द्वारा की गईं आपकी स्तुतियां सदैव आपके श्रवण-पथ में गूंजती रहती हैं। रहस्यों से भरी उन स्तुतियों को सुनती हुई जब आप हर्ष से मस्तक हिलाती हैं तो हिलते हुए आप के कानों के कुण्डल अपनी झनकार से मानों आपके मनोभावों को स्वीकार करते हैं।

** असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयान् फलतु फलमस्माकमुचितम् ।
वहन्नन्तर्मुक्ता:[1] शिशिरतरनिश्वासघटिता:[2]
समृद्ध्या यस्तासां[3] बहिरपि च मुक्तामणिधर: ।।६१।।

हे हिमगिरिवंश पताका मां, आपकी नासिका का उभार हमारा कल्याण करे। आपकी उन्नत नासिका से निकलते हुए अति शीतल निःश्वास से ज्ञात हो जाता है कि आपके द्वारा प्रयुक्त बहुमूल्य मुक्ता-पिष्टी के रूप में आपके हृदय में निहित मुक्तामणि का स्पर्श कर बाहर निकलती हुई सांस शीतल होती है। हृदय में निहित मोतियों के साथ बाहर भी मोती धारण करती हैं।

---

* इस श्लोक में मंत्र गर्भित नहीं है।

** इस श्लोक से नील पताका का यह मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ह्लीं नीलपताके स्वाहा।

१. बहत्यन्त०। २. शिशिरकर०। ३. यत्तासां।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* प्रकृत्यारक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता ।
न बिम्बं[1] त्वद्बिम्ब[2]प्रतिफलनरागादरुणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव न लज्जेत[3] कलया ।।६२।।

हे सुन्दर दाँतों वाली माँ, आपके स्वाभाविक रक्तिम अधरों की कान्ति का वर्णन करता हूँ। प्रवाललता आपके अधरों की कान्ति की समानता नहीं कर सकती क्योंकि प्रवाल प्रारम्भ से रक्त वर्ण नहीं होता है। वह बाद में मिश्रित रंग का होता है। भलीभाँति पके हुए लाल-लाल कुंदुरू के फल से भी आपके अधरों की तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि वह प्रारम्भ में हरे रंग का होता है, और पकने पर लाल रंग का होता है। प्रवाल-लता और कुंदुरू के फल को विलज्जित करने वाला आपका अधरोष्ठ अद्वितीय कान्ति से शोभायमान है।

** स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा ।
अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमम्लरुचयः[4]
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशिनिशिभृशं काञ्जिकधिया ।६३।

हे माँ, आपके चन्द्रमुख के मन्द हास्य रूपी ज्योत्स्ना को छक कर पीते हुए चकोर पक्षियों की चोंच जड़ हो जाती है—उन्हें अरुचि हो जाती है तो वे उस अरुचि को मिटाने के लिए रात में चन्द्रमा से निकली हुई खट्टे रस की अमृत लहरियों को ही पीते रहते हैं।

---

* इस श्लोक से सर्वमंगला नित्या मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ क्लीं सं सर्वमंगलायै नित्यायै स्वाहा ।

** इस श्लोक से यह श्रीमुखी मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ह्रां ह्रीं श्रीमुखी नित्यायै स्वाहा ।

१. क्वबिम्बं । २. तद्बिम्ब०; दृग्बिम्ब० । ३. विलज्जेत । ४. ०माम्लरुचयः ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजडा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदग्रासोनाया: स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी[1]
सरस्वत्या: मूर्त्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ॥६४॥

हे माँ, जवाकुसुम के पुष्प के समान लाल रंग की आपकी जिह्वा ब्रह्माण्ड में विजय प्राप्त करती है। अपने पति शिव का गुण-कीर्तन करते हुए आपकी जिह्वा उनके गुणों का पार नहीं पा सकती—ऐसी आपकी जिह्वा के अग्रभाग में विराजमान सरस्वती की स्फटिक मणि के समान श्वेत, उज्ज्वल मूर्ति जिह्वा के संसर्ग से माणिक्य की भाँति लाल रंग की दिखाई पड़ती है।

** रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रै:[2] कवचिभि—
र्निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखै:।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रै:[3] शशिविशदकर्पूरशबला
विलीयन्ते[4] मातस्तव वदनताम्बूलशकला: ॥६५॥

हे माँ, कार्तिक स्वामी, इन्द्र और विष्णु संग्राम में दैत्यों को जीत कर उनके शिरस्त्राण और कवच छीनकर अपने लोक को लौटते हुए शिव के निर्माल्य (प्रसाद) से विमुख होकर आपके मुख से ताम्बूल खण्ड निकाल-निकालकर खा रहे हैं।

---

* इस श्लोक से श्रीमुखी श्रीकण्ठ मन्त्र संयुक्त रूप से उद्घृत होते हैं—
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमुखि नित्य संवलिते ह्रीं श्रीं नमः शिवायै स्वाहा।

** इस श्लोक से रक्त दन्तिका का यह मन्त्र उद्घृत होता है—
ॐ श्रीं रं भगवति रक्त दन्तिके अनुरक्ते स्वाहा।

१. ०च्छविरुचि:। २. दैत्यानुपहृत०। ३. शशि शिशिर०।
४. विलिप्यन्ते; विलुप्यन्ते।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* विपञ्च्यां गायन्ती विविधमपदानं पुररिपो[1]—
स्त्वयारब्धे वक्तुं चलितशिरसा[2] साधुवचने ।
तदीयैर्माधुर्यैरवलपिततन्त्री कलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चैलेन निभृताम् ॥६६॥

हे सुमुखी मां, जब आप ज्येष्ठा नाम की अपनी वीणा को झंकृत कर शंकर जी के विविध गुणों और चरित्र का गान करती हैं, तब आपके मधुर, ललित स्वरों को सुनकर शिव का गुण-कीर्तन करती हुई सरस्वती की वाणी फीकी पड़ जाती है।

** कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरोशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया ।
करग्राह्यं शंभोर्मुखमुकुरवृत्तं गिरिसुते
कथंकारं ब्रूमस्तव[3] चिबुकमौपम्यरहितम् ॥६७॥

हे तुहिन गिरिवत्सले मां, आपके अनुपमेय चिबुक का वर्णन हम कैसे कर सकते हैं। आपके जिस चिबुक (ठोड़ी) पर आपके पिता हिमालय स्नेह से अंगुलियां फेरते थे, कभी-कभी आपके पति शंकर आपके अधरोष्ठ का पान करने के लिए जिसे ऊपर उठाते थे, आपके मुख-दर्पण में शरीर का गोलाकार मुख दिखाई पड़ता है। जिसकी उपमा न प्राप्त हो सके ऐसे आपके देदीप्यमान, सुकुमार चिबुक का वर्णन भला कैसे किया जा सकता है।

---

* इस श्लोक से विद्याधरी विद्या का यह मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ॐ हुं डं विद्येशानि स्वाहा ।

** इस श्लोक से सर्वज्ञानप्रद यह बीजमंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं चेतने विद्रावितान्धपटले सर्वज्ञानप्रदे स्वाहा ।

१. पशुपते । २. स्खलितवचसा; ललितवचसा । ३. चुबुक० ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* भुजाश्लेषान् नित्यं पुरमदयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम् ।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो[1] हारलतिका ॥६८॥

हे माँ, त्रिपुरारि शंकर अपनी भुजाओं से जब आपकी ग्रीवा का आलिंगन करते हैं तब हर्ष, रोमाञ्च से उसकी नसें फूल उठती हैं और वह ग्रीवा मुखरूपी कमल-नाल के समान सुशोभित होती है। जैसे कमलपुष्प सुन्दर होता है किन्तु कमलनाल काँटों से युक्त असुन्दर होता है, वैसे ही आपका मुखकमल सुन्दर है, उसके नीचे रहने वाली ग्रीवा का शंकर सदैव आलिंगन किया करते हैं, जो रोमांच होने से गठीली, कँटीली कमलनाल के समान सुशोभित होती है। आपकी ग्रीवा तो गोरी है किन्तु काले रंग के अगुरु का अंगराग लगा रहने से वह गोरी-साँवली दिखाई पड़ती है। जैसे कमलनाल कृष्ण-श्वेत रंग का होता है वैसे ही आपकी ग्रीवा भी दिखाई पड़ती है। ग्रीवा के नीचे धारण की हुई विविध रंगों के रत्नों की माला कमल तन्तु के समान सुशोभित होती है।

** गले रेखातिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवादव्यानद्ध[2] प्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः ।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ॥६९॥

हे माँ, राग की गति से परिपक्व गीत में निपुण आपकी ग्रीवा में

---

* इस श्लोक से वाचस्पति मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ वाचस्पते प्लुत प्लुत नमः।

** इस श्लोक में मंत्र गर्भित नहीं है।

१. यदहो। २. ०तद्धत्रिगुण०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीन रेखाएँ शोभायमान हो रही हैं। वे रेखाएँ रागों के विवादों को दृष्टिगत रखते हुए निर्धारित किए गए जो अनेक गुण हैं, स्वर हैं उनकी संख्या का मानो प्रतिनिधित्व करती हैं। आपकी ग्रीवा की तीन रेखाएँ अनेक राग-रागिनियों के उत्पत्ति-केन्द्र षडज, मध्यम तथा गान्धार नामक तीन ग्रामों की स्थिति तथा नियमों की मर्यादा के समान सुशोभित हो रही है। एक राग में से दूसरे राग की अवस्था की अवतारणा का नाम गति है, इस अवस्था में परिपक्व, सफल जो गीत हैं, उनमें निपुण प्रतीत होने वाली तीन रेखाएँ आपकी ग्रीवा में सुशोभित हैं।

* मृणालीमृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवः स्तौति वदनैः।
नखेभ्यः संत्रस्यन्[1] प्रथममथनादन्धकरिपो—
श्चतुर्णां शीर्षाणां[2] सममभयहस्तार्पणधिया ॥७०॥

हे माँ, पूर्वकल्प में ब्रह्मा का पांचवां मुख निष्प्रयोजन समझकर रुद्र ने अपने नखों से काट डाला था, तब रुद्र के नखों से भयभीत ब्रह्मा आपकी शरण में आए और आपने ब्रह्मा के चारों मस्तकों पर एक साथ अपने चारों हाथ रखकर उन्हें अभयदान दिया था। इस उपकार का आभार मानते हुए ब्रह्म अपने चारों मुखों से कमलिनी पुष्प के समान आपके सुकोमल चारों हाथों के सौन्दर्य की स्तुति किया करते हैं।

** नखानामुद्द्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां
कराणां ते कान्ति कथय कथयामः कथमुमे।

---

* इस श्लोक में अभया का मंत्र अवतरित होता है—
ॐ ह्सौं क्लीं अभयं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं नमः ऐं।

** इस श्लोक में कोई मन्त्र गर्भित नहीं है।

१. ०प्रथम दमना० । २. वक्त्राणां ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
परिक्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारुणदलम्[१] ॥७१॥

हे मां, आपके हाथ के नखों की कान्ति से नवीन विकसित कमल-पुष्पों के रंग पर हँसती हुई आपकी कलाई की हथेलियों की कान्ति का वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है ? कमल पर गतिपूर्ण लक्ष्मी के चरणों में लगा लाख के महावर का जो रंग है, उससे रक्तिम हुई पंखुडियों वाले कमल-पुष्प की उपमा कुछ अंशों तक आपकी कलाई के निचले भाग से दी जा सकती है ।

* समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुग
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम् ।
यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ॥७२॥

हे मां, स्वामिकार्तिकेय एवं गणपति दोनों एक साथ आपके दोनों स्तनों का जब पान करते हैं तब पुत्र-स्नेह से अभिभूत दूध की धारा बहने लगती है । हे मां ऐसे आपके दोनों स्तन हमारे दुःख, दारिद्रय, संकट और शारीरिक, मानसिक आधि-व्याधि का हरण करें ।

** अमू ते वक्षोजात्रमृतरसमाणिक्यकुतुपौ[२]
न सन्देहास्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसंगमरसौ[३]
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौंचदलनौ ॥७३॥

---

* इस श्लोक से यह मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ हूं हूं शक्तिः ह्लीं ह्लीं गौरिशिवे स्वाहा ।

** इस श्लोक से महाशबरी विन्ध्यवासिनी का मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ह्लीं श्रीं ब्रूं क्रूं विन्ध्यवासिनि महाशबरि हुं फट् स्वाहा ।

१. लाक्षारसचणम् । २. माणिक्य कलशौ । ३. वधूसङ्गरसिकौ ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिमालय के सौभाग्य को इंगित करने वाली पताका रूप हे माँ, आपके दो स्तन अमृत रस से भरे हुए माणिक्यमणि के कलशों के समान हैं—इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है, क्योंकि आपके दोनों स्तनों का पान करने वाले गणपति और कुमार स्त्री-समागम से अबोध दोनों आज तक कुंवारे हैं।

* वहत्यम्ब स्तम्बेरमवदनकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम्।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तः शबलितां
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः[1] कीर्तिमिव ते ॥७४॥

हे माँ, हाथियों के कुम्भस्थल से उत्पन्न निर्मल, निर्दोष, देदीप्यमान गजमुक्ताओं की माला आपके स्तनों के उभरे हुए भाग, शिव के प्रताप की भाँति धारण किए हुए हैं और बिम्बाफल के समान लाल-लाल आपके अधरोष्ठ की छाया जब उज्ज्वल गजमुक्ताओं पर पड़ती है तो वह अधिक सुशोभित होते हैं।

** तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये[2] हृदयतः
पयः पारावारः परिवहति सारस्वत इव[3]।
दयावत्त्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढ़ानामजनि कमनीयः कवियता ॥७५॥

---

* इस श्लोक से बाराहमुखी देवी का मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं क्लीं ह्सौं सौः वार्त्रालि वार्त्रालि बाराहमुखि बाराहमुखि स्वाहा।

** इस श्लोक से सरस्वती मातृका मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं अं आं…कं…चं…टं…तं…पं…यं…ळं क्षं सरस्वती मातृके स्वाहा।

१. पुरविजयितः। २. तुहिन गिरिकन्ये। ३. सारस्वतमिव।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, आपके स्तनों से प्रवाहित दुग्ध आपके हृदय से स्वाभाविक रूप से प्रवाहित सरस्वती का समुद्र जैसा लहराता हुआ प्रतीत होता है। कृपामयी, आपका दुग्धपान कर बालक कार्तिक स्वामी, वृहस्पति, शुक्र जैसे महान् कवियों को कमनीय लगने वाले काव्यकर्त्ता उत्पन्न हुए।

* हरक्रोधाज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ।।७६।।

हे माँ, भगवान् शिव की क्रोध-ज्वाला से झुलसा हुआ कामदेव अपनी ज्वाला शान्त करने के लिए आपके नाभि-सरोवर में छिप कर शान्ति प्राप्त करता है। लोगों की यह मान्यता है कि आपके नाभि-सरोवर में डुबकी लगाने से कामदेव के झुलसे हुए शरीर से धुएँ की जो लहरें उत्पन्न हुई तो वे रोएँ लता रूप में परिवर्तित हो गए हैं।

** यदेतत् कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृतिशिवे[1]
कृशे मध्ये किंचिज्जननि तव तद्भाति सुधियाम्।
विमर्दादन्योऽन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभि कुहरिणीम् ।।७७।।

हे माँ, आपके शरीर के मध्य भाग में स्थित कटि कालिन्दी की पतली और बलखाती हुई तरंग के समान कवियों, विद्वानों को नवीन कल्पनाओं का प्रकाश प्रदान करती है।

---

* इस श्लोक से धूमावती मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ ह्रीं रः प्रज्वल प्रज्वल ह्लीं स्वाहा।

** इस श्लोक में लोकसम्मोहिनी कुण्डलिनी का ह्रीं, क्लीं बीज गर्भित है।

१. कलावालं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलशों की भांति उन्नत एवं सुपुष्ट दोनों स्तन आपस में एक-दूसरे से सटे हुए हैं। ऐसे जान पड़ते हैं, मानों उन दोनों से बीच का कोमल भाग आपकी गम्भीर नाभि में विलीन हो गया है।

* स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलि लता
निजावालं[1] कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते[2]
विलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ॥७८॥

हे मां, गंगा के जलकुण्ड के समान पवित्र एवं निश्चल आपकी नाभि बड़े उत्कर्ष से आपके शरीर में विद्यमान है। आपकी नाभि आपके शरीर की रोमावलीरूप लता का आलबाल (थाला) है और आपके दोनों स्तन मानों उस लता के दो कुड्मल (फूल की कली) हैं। आपकी नाभि वह कुण्ड है, जिससे कामदेव की तेजाग्नि की ज्वाला निकलती है और यह नाभि रति का विलास-भवन है। भगवान् शिव ने जब से आपकी पवित्र नाभि को आंखों से देखा है तभी से उनकी आंखों में सिद्धियाँ बस गईं।

** निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्तेर्नाभौ[3] वलिषु च शनैस्त्रुट्यत इव।

---

* इस श्लोक से नित्याकुल सुन्दरी का यह मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ क्लीं सौः नित्ये कुलसुन्दरि स्वाहा।

** इस श्लोक से क्षेमकरी विद्या का मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं नित्ये गिरिवनालये क्षेमंकरी रक्ष रक्ष क्लीं स्वाहा।

१. कलावालं। २. नाभीतिगिरिजे। ३. ०र्नारीतिलकशनकै०; ०र्नाभो-वलिषुशनकै०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये ॥७९॥

हे माँ, आप का मध्य भाग स्वाभाविक रूप से पतला है, वह आपके दोनों स्तनों और उनके दोनों ओर के पुष्ट भागों का भार वहन करता है। आपका मध्य कुछ झुका हुआ है और पेट पर पड़ी तीन सलवटों (त्रिबली) पर मानों संकुचित हो गया है। नदी के तट की ओर झुके हुए वृक्षों की भाँति प्रतीत होने वाला आपके मध्य भाग का सदैव कुशल क्षेम हो।

* कुचौ सद्यःस्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता।
तव त्रातुं[१] भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ॥८०॥

हे माँ, खूब कसी हुई चोली पहनने के कारण पसीने से तर आपके स्तन बाहों के ऊपरी भाग को खींचते हुए स्वर्णकलश के अनुरूप आपके भारवाही स्तनों को देखते हुए कामदेव से व्याप्त तीन सलवटों से युक्त आपका पेट कहीं भंग न हो जाए, इसलिए उसकी रक्षा के लिए मानों आपके स्तन वासन्ती लता-तन्तुओं से बँधे हुए सुशोभित हो रहे हैं।

---

* इस श्लोक से उस शबरी देवी का मन्त्र उद्धृत होता है, जिसने वनवास काल में श्रीराम की उपासना की थी—

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं देवि शबरि स्वर्गमृत्युपाताल वाटिका विहारे मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

१. भङ्गादुदरमवलग्नं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजा—
न्नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे ।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च ॥८१॥

हे माँ ऐसा प्रतीत होता है, मानो पर्वतराज हिमालय ने अपने तटवर्ती भागों का कुछ भाग निकाल कर आपके नितम्बों में रख दिया है। उसी से आपका यह भार तथा पूर्व नितम्बकटि का निचला भाग सम्पूर्ण पृथ्वी को ढँककर उसे गेंद की तरह हल्की होने की प्रतीति उत्पन्न कर रहा है।

** करीन्द्राणां [1]शुण्डाः कनककदलीकाण्डपटली—
मुमाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवती[2] ।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विजिग्ये[3] जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमपि[4] ।८२

हे माँ, आपके दोनों ऊरु अपनी मृदुता से हाथी की सूंड़ को भी विलज्जित करते हैं और अपनी स्निग्धता से सुवर्ण कदली स्तम्भों को विलज्जित करते हैं। जब आप अपने पति भगवान् शंकर को प्रणाम करने के लिए अपने दोनों जानुओं को झुकाती हैं, तो उनकी गोलाई और सुन्दरता ऐरावत के कुम्भस्थल को विलज्जित करती हैं।

---

* इस श्लोक से वनदुर्गा का मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ हूं क्रीं महाभय परिपंथिनि वनविहारिणि दुर्गे देवि धनं धान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

** इस श्लोक से छत्रेश्वरी-मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ कं खं गं घं ङं रं रः यं शं षं सं हं सं क्लीं।
क्रं पं फं बं भं मं टं ठं डं ढं णं ठं ठः स्वाहा ॥

१. शुण्डान् । २. भवति । ३. विधिज्ञे । ४. ० द्वयमसि ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* पुराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भो गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढ़मकृत ।
यदग्रे दृश्यन्ते दश शरफलाः पादयुगली—
नखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः[१] ॥८३॥

हे माँ, असह्य पंचशरधारी कामदेव ने पूर्वकाल में शंकर पर विजय प्राप्त करने के लिए तरकस जिसमें दस बाण समाए हुए हैं, आपकी दोनों जांघों को तरकस बनाया। यही कारण है कि आपके दोनों चरणों की दस अँगुलियों के नखों के अग्रभाग बाण के फलों के अग्रभाग के सदृश प्रतीत होते हैं। आपकी अँगुलियों के ये नखाग्र आपके चरणों में प्रणाम करते हुए देवताओं के मुकुटरूपी शाण (शान) के समूह से तीक्ष्ण धारयुक्त हो गए हैं।

** श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ॥८४॥

हे माँ, आप अपने जिन चरणों को देवताओं के मस्तक पर धरती हैं, जिन्हें उपनिषद् अपने शिर में धारण करती हैं, उन्हीं चरणों का आरोपण आप मेरे शिर पर करें। आपके पवित्र चरणों का चरणामृत जल गंगा बनकर शिव की जटा में समाया रहता है। उन चरणों में लाक्षा-रंग (महावर) से चित्रित किए बिना ही चित्रों की शोभा है, वे शंकर के मस्तक में स्थित कालचक्र की कान्ति के सदृश शोभायुक्त हैं।

---

* इस श्लोक से नित्यकामाकर्षिणी का मंत्र उद्धृत होता है—
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्या कामाकर्षिणी प्रीतास्तु स्वाहा ।

** इस श्लोक में कोई मन्त्र गर्भित नहीं है।

१. शाणोद्यनिशिताः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयो—
स्तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते।
असूयत्यन्तं[१] यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ॥८५॥

हे माँ, आपके नयन रमणीय, अलक्तक से चित्रित चरणों को मैं प्रणाम करता हूँ। आपके प्रमदवन के अशोक वृक्ष से आपके पति शंकर जो इसलिए ईर्ष्याभाव रखते हैं कि जो चरण-युगल उपनिषदों को भी दुर्लभ हैं, उन्हीं से झंकारयुक्त पादाघात कर अशोक वृक्ष को आप प्रफुल्लित बनाकर कुसुमभर कर देती हैं।

** मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्त्तारं चरणकमले ताडयति ते
चिरादन्तः शल्यंदहनकृतमुन्मूलितवता[२]
तुलाकोटिक्वाणैः किलकिलितमीशानरिपुणा ॥८६॥

हे माँ, एक दिन हँसी-हँसी में आपको चिढ़ाने के लिए आपके पति भगवान् शंकर ने आपको गंगा नाम से पुकारा। इस प्रकार अपनी सौत के नाम से पुकारी जाने पर आप अत्यन्त कुपित हो उठीं तो शंकर अनजाने गंगा नाम निकल जाने के लिए क्षमा माँगने के लिए ज्यों ही आपके चरणों की ओर झुके तो आपने उनके ललाट पर चरणों से आघात कर दिया। यह देखते ही आप पर वास करने वाला कामदेव अपने को शंकर द्वारा भस्म किए जाने का दुःख स्मरण कर हँसा और

---

* इस श्लोक में कोई मन्त्र गर्भित नहीं है।

** इस श्लोक में सर्वसम्पत्साधिनी विद्यामन्त्र निहित है—
ॐ क्लीं क्लीं करलं करलं इतं सर्वसम्पत्साधिनी मे सम्पत्ति साधय साधय स्वाहा।

१. ० स्यत्यर्थं। २. ० मुन्मीलितवता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसन्न होकर तालियाँ बजाकर ठुमकने लगा तो हाथों, पैरों में पहने हुए कंकणों, नूपुरों से रुनझुन-रुनझुन ध्वनि होने लगी।

* हिमानी हन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ[1]
निशायां निद्राणं निशि च परभागे च[2] विशदौ।
परं[3] लक्ष्मीपात्रं क्षियमतिसृजन्तौ[4] समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ।८७।

हे माँ, यदि आपके चरण कमलपुष्प की हँसी उड़ाते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं ? क्योंकि कमलपुष्प हिमपात से जल जाता है किन्तु आपके चरण हिमनदों पर चलने से और भी अधिक सुशोभित हो उठते हैं। कमल दिन में खिलता है और रात में मुरझा जाता है, किन्तु आपके चरण दिन-रात कान्तियुक्त रहते हैं। कमल लक्ष्मी का निवास स्थान है और उसमें लक्ष्मी वास करती हैं, किन्तु आपके चरण-कमल तो भक्तों को लक्ष्मी प्रदान किया करते हैं।

** पदं ते कीर्त्तीनां[5] प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीखर्परतुलाम्।
कथंचिद्बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ॥८८॥

हे माँ, आपके जिन कीर्तिशाली, कान्तिमय चरणों का आश्रय पाकर भक्तगण दुःख, दारिद्र्य, संकट से मुक्त रहते हैं। ऐसे आपके चरणकमलों

---

* इस श्लोक में मन्त्र गर्भित न होकर पादुका-पूजन का अनुष्ठान निहित है।

** इस श्लोक में कोई मन्त्र निहित नहीं है।

१. ० तदाकान्ति चतुरौ। २. निशि चरम भागे च। ३. वरं।
४. श्रयमपिसृजन्तौ। ५. कान्तीनां।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अँगुलियों के नीचे के भाग को कवियों, मनीषियों ने कछुई के पैरों की गद्दी के साथ क्यों तुलना की है। वस्तुतः यह उनकी भूल है, क्योंकि विवाह के समय कन्या के अश्मारोहण कराया जाता है। अश्मारोहण की क्रिया में कन्या के पैरों की अँगुलियों को नीचे का पाद तल पत्थर पर रखाया जाता है। आपके विवाह में जब अश्मारोहण क्रिया कराई जा रही थी तो आपके प्रति दयार्द्र शिव ने यह सोच कर कि आपके कोमल चरणों के तलवों को पत्थर पर रखने से कष्ट न हो, इसलिए उन्होंने अपनी दोनों हथेलियाँ फैलाकर आपके चरणों को उठा कर शिला पर रखा था।

* नखैर्नाकिस्त्रीणां करकमलसंकोचशशिभि—
स्तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ।
फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ॥८८॥

हे माँ चण्डि, दरिद्र भक्तों को सदैव बिना माँगे ही उनकी आवश्यकता के अनुसार लक्ष्मी प्रदान करने वाले आपके दोनों चरणकमल-सुरतरु वृक्षों की हँसी उड़ाते हुए-से प्रतीत होते हैं। दोनों हाथों को जोड़कर प्रणाम करती हुई देवाङ्गनाओं के कान्तियुक्त नखों की कान्ति सहित आपके चरण-कमल इस कारण मानों हँसी उड़ाते हुए से जान पड़ते हैं कि कल्पवृक्ष तो याचना के अनुसार ही याचक की मनोकामना पूरी करते हैं।

** ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदृशी—[1]
ममन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं[2] विकिरति।

---

* इस श्लोक में कोई मन्त्र गर्भित नहीं है।

** इस श्लोक में दैन्यभेदिनी विद्या गर्भित है।

मन्त्र—ॐ श्रीं ऐं यं रं लं वं दुर्गतारिण्यै दैन्यभेदिन्यै स्वाहा।

१. ० मात्मानुसदृशी। २. ० स्तबकमकरन्दं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तवास्मिन् मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन मज्जीवः करणचरणः[1] षट्चरणताम् ।। ।।९०।।

हे मां, दरिद्रों को इच्छानुकूल लक्ष्मी प्रदान करती हुई, अपरिमित सौन्दर्य सुगन्धि को चारों ओर फैलाते हुए, कल्प वृक्ष के पुष्प गुच्छों के हार के समान सुन्दर आपके चरणों में मग्न होते हुए एकाग्रचित्त मेरा जीव, मेरी आंखें, जीभ, त्वचा, नाक तथा मन—इन छह इन्द्रियरूपी छह पैर युक्त भ्रमर-प्रवृत्ति को स्वीकार करें। जैसे भ्रमर के छह पैर होते हैं और वह कल्पवृक्ष के गुच्छे में तन्मय हो जाता है, वैसे ही मेरा मन छह इन्द्रियों सहित आपके चरणों में तन्मय हो जाता है।

* पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनस—
श्चरन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति।
स्वविक्षेपे[2] शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित—
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते।।९१।।

हे चारुचरित्र वाली मां, मानसरोवर के हंस आपके पद-विन्यास की कला का अनुकरण करते हुए आपके चरण-कमलों को छोड़ते नहीं हैं। सुन्दर रत्नजटित झांझर की झनकार की लय में जैसे पदविन्यास की शिक्षा देते हों ऐसे आपके युगल चरण-कमल के पीछे हंस घूमा करते हैं।

** गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः

---

* इस श्लोक से 'सोऽहं हंसः' यह अजपा गायत्री मंत्र उद्धृत होता है।

** इस श्लोक से चार वेदों की विद्या का प्रतिपादन किया गया है—द्रुहिण—ब्रह्मा से ऋग्विद्या, हरि—विष्णु से यजुः विद्या, रुद्र से सामविद्या और ईश्वर—इन्द्र से अथर्व विद्या।

१. करचरणैः। २. अतस्तेषां।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वदीयानां भासां प्रतिफलनराणारुणतया
शरीरी श्रृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् ॥८१

हे मां, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और इन्द्र ये चारों देवता आपके सिंहासन के चार पायों के रूप में विद्यमान हैं। सिंहासन पर स्वच्छ, धवल, कान्ति-युक्त बिछे हुए आवरण स्तर पर पड़ती हुई आपकी कान्ति के प्रतिबिम्ब के साथ उदायकालिक सूर्य के अरुण रंग की जो छाया उस पर पड़ती है उसे देखने वालों की आंखों में ऐसा कौतुक उत्पन्न होता है, जैसे स्वयं सशरीर श्रृंगार रस ही हो।

* अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा[1] गात्रे दृषदिव कठोरा कुचतटे।
भृशं तन्वी मध्ये[2] पृथुरपि वरारोह विषये।
जगत्त्रातुं शंभोर्जयति करुणा काचिदरुणा ॥८३॥

जिनके केश घुंघराले हैं। जो स्वभावतः सौम्य मूर्ति हैं। जो मंद-हास्य वाली हैं। जिनका शिरीष के पुष्प की भांति कोमल गात्र है। जिनका कुचमण्डल शिला की भांति कठोर है। जिनकी कमर पतली है और नितम्ब स्थल पुष्ट हैं। जो रक्ताम्बर, रक्तालंकार से अलंकृत हैं—ऐसी करुणामयी शिवा मां जगत् की रक्षा के निमित्त प्रकाशमान हो रही हैं।

** समानीतां पद्भ्यां मणिमुकुरतामम्बरमणि—
र्भयादास्यादन्तः स्तिमितकिरणश्रेणिमसृणः।
दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं
निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्केरुहमिव ॥८४॥

---

* इस श्लोक में सर्वव्यापिनी नारायणी शक्ति का प्रतिपादन किया गया है।

** इस श्लोक में भगवती ज्योतिर्मयी का प्रतिपादन किया गया है।

१. चित्ते दृषदुपलशोभा। २. पृथुरसिजारोह०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, आपका मुख अरुणोदय काल की रक्ताभ किरणों का सुकोमल सौन्दर्य धारण करता है। आपके हृदय से उत्पन्न चन्द्रमा में तो कलंक है, किन्तु आपका मुख कलंक दोष रहित है। आपके चरणों के नीचे दबा रहने के कारण सूर्य की स्थिति मणि तथा दर्पण के समान है। भयभीत सूर्य का प्रतिबिम्ब आपकी प्रफुल्ल मुखकान्ति से मिलकर सुशोभित हो रहा है।

* कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निविडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन[1] प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ॥९५॥

हे माँ, चन्द्रमा में दिखाई पड़ने वाला लाञ्छन कस्तूरी है। जड़मय चन्द्र बिम्ब मरकतमणि की मंजूषा के समान है, जो कर्पूर के समान श्वेत कलाओं से घिरा हुआ है। चन्द्रबिम्ब में निहित कस्तूरी का आपके द्वारा सेवन किए जाने के कारण वह चन्द्र बिम्ब कस्तूरी विहीन हो जाने के कारण प्रतिप्रदा से अमावस्या तक जब क्षीण हो जाता है तो ब्रह्मा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक उसे पुनः कस्तूरी से परिपूर्ण कर सदैव आपकी सेवा में निरत रहते हैं।

** पुरारातरेन्तः पुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।

---

* इस श्लोक से त्रिपुरसुन्दरी के द्वितीय बीज क्लीं के उद्धृत होने से यह मन्त्र उद्धृत होता है—
ॐ क्लीं अमृतवर्षिणित्रिपुरे स्वाहा।

** इस श्लोक से मंत्र का उद्धार नहीं होता है।

१. पुनरुत्वद्भोगेन ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः ॥९६॥

हे माँ, आप देवाधिदेव महादेव की पटरानी हैं, आपकी सेवा के अलग, विशिष्ट विधान हैं। चंचल इन्द्रियों वाले लोग आपकी उपासना नहीं कर सकते हैं। आपके द्वार पर स्थिर रहने वाली अणिमा, महिमा आदि अष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में इन्द्रादि देवताओं ने शान्त, निश्चेष्ट, अचंचल अन्तःकरण से आपकी उपासना कर सफल हुए हैं।

* कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ॥९७॥

हे माँ, विद्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए सावित्री की उपासना सभी विद्वान करते हैं। धनपति बनने के लिए लोग लक्ष्मी की उपासना करते हैं। किन्तु हे सती शिरोमणि माँ, आपके कुचों का सम्पर्क देवाधिदेव महादेव के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति से नहीं होता है। वसन्तकुसुमाकर उत्सव में स्त्रियाँ कदम्ब के दर्शन करती हैं, किन्तु वह पुरुष जाति का वृक्ष है, इसलिए आप उसके दर्शन तक नहीं करती हैं।

** गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।

---

* इस श्लोक से विधि बीज अवतरित होने से यह मन्त्र उद्धृत होता है।
मन्त्र—ॐ भगवति साबित्रि कं खं गं घं ङं लं तं थं दं धं मं रं क्लीं स्वाहा।

** इस श्लोक से अनिर्वचनीया तुरीया का यह मन्त्र उद्धृत होता है—
मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं खं पद्मालये महामाये ममकार्यं साधय साधय स्वाहा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिःसीममहिमा
महामाया[1] विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ॥९८॥

हे माँ, आपकी माया ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता भी जानने में असमर्थ हैं। वेदार्थ तत्त्वज्ञानीजन आपको सावित्री कहते हैं, कोई मनीषी आपको लक्ष्मी मानते हैं और अनेक विद्वान् आपको पार्वती मानते हैं, किन्तु माँ, आपके चरित्र का यथार्थबोध गहनतपस्या से ही सम्भव है। वस्तुतः आप तुरीया परब्रह्मरूप हैं।

* समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारु हसितं
कटाक्षे कन्दर्पाः कतिचन कदम्बद्युति वपुः।
हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्ति स्म विमला
भवत्यां ते भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे ॥९९॥

हे सुन्दर मुख वाली माँ उमा, जो स्त्रियाँ आप पर आस्था-भक्ति रखती हैं, वे आपका स्वरूप प्राप्त करती हैं। उनके उरोज उन्नत होते हैं। उनकी हँसी आकर्षक होती हैं। उनका शरीर कदम्ब-पुष्पों की तरह कोमल और सुन्दर होता है— उन्हें देखकर आपके पति शंकर कभी-कभी भ्रम में पड़ जाते हैं कि क्या यह आप स्वयं हैं।

** कदाकाले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
यदाधत्ते[2] वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम् ॥१००॥

---

* इस श्लोक में मन्त्र गर्भित नहीं है।

** इस श्लोक में 'ॐ ऐं वाण्यै स्वाहा'—यह सरस्वती मन्त्र उद्धृत होता है।

१. महामाये। २. यदाधत्ते।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे माँ, महावर से रंगे हुए आपके सुन्दर चरणों को धोकर सरस्वती की कृपा चाहने वाला मैं कब पी सकूँगा - कहो ? जो पादप्रक्षालन-जल गूँगे मनुष्यों को भी काव्य-रचना करने की शक्ति प्रदान करने के परिणाम स्वरूप आपके मुखकमल में निहित ताम्बूल युक्त जिह्वा से उच्चारित होती हुई वाणी सम्पूर्ण रूप से प्रदान कर देता है।

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ॥१०१॥

हे माँ, आपकी अनन्य भाव से उपासना करने वाला भक्त देदीप्यमान सुन्दर शरीर प्राप्त कर दीर्घजीवी होता है। वह ब्रह्मा और विष्णु के समान सरस्वती और लक्ष्मी के साथ विहार करता है और अशरीरी कामदेव के समान रति के सतीत्व को शिथिल बनाता है। ऐसा आपका भक्त यमराज के बन्धनों से मुक्त होकर ब्रह्म सायुज्य प्राप्त करता है।

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे
निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये।
नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे
निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम्
॥१०२॥

हे निधियों की भण्डार, हे नित्यमन्दहास्य वाली, हे अनन्त गुणनिधि, हे सदाचार—नीति वाली, हे अखण्ड, हे अनुशासनप्रिय, हे चित्त में वास करने वाली, भक्तों को निष्पाप बनाने वाली निगमागम द्वारा वन्दित माँ, मेरी इस स्तुति को स्वीकार करो।

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं
त्वदोयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम्
॥१०३॥

हे मां, मेरे द्वारा की गई यह स्तुति तो आपने हो उत्पन्न की है, यह स्तुति आपकी वाणी और आपके अक्षरों की है—इसमें मेरा अपना कुछ नहीं है।

जैसे प्रदीप्त ज्वाला से सूर्य की आरती करना, चन्द्रकान्तमणि पर झरते हुए जल बिन्दुओं से चन्द्र को अर्घ्य देना और सागर के ही जल से सागर को तर्पण करना—इसी भांति आपकी वाणी और आपके ही अक्षरों से निर्मित मेरी यह स्तुति है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मृति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
लेखक की
अन्य विशिष्ट कृतियाँ

१. तंत्र सिद्धान्त और साधना	४०)
२. तंत्र साधना सार	१५)
३. क्रियायोग-साधना	१०)
४. आग्नेयतीर्थ हिंगलाज	१०)
५. भारत का सैनिक इतिहास	१८)
६. भारत की सैन्य पद्धति	१०)
७. तन्त्रविद्यानुशासन (मुद्रणाधीन)	

•

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकूतिः

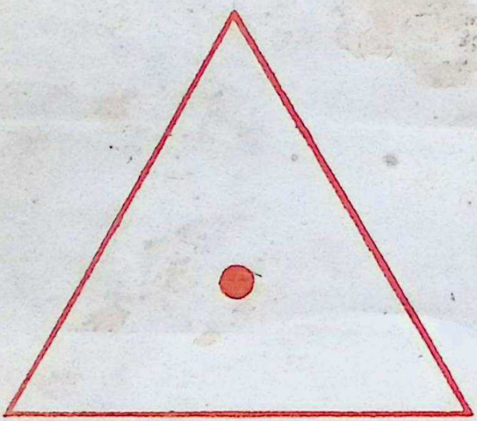

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे
चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal